सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 67, नई दिल्ली, शनिवार 17 मई 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

सफलता का कोई शॉर्टकट नहीं होता। लगन और मेहनत ही सफलता की कुंजी है

03 सफल रक्तदान अभियान 'ऑपरेशन सिंदूर' का सफदरजंग अस्पताल में हुआ
06 फसलों की विविधता को कम करेगी बढ़ती गर्मी
08 संबलपुर से जल्द ही चलेगी कृषि एक्सप्रेस ट्रेन: केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान

परिवहन विशेष देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र | NEWS NTV TRANSPORT VISHESH www.newstransportvishesh.com

द्वितीय वार्षिक सम्मान समारोह

दिनाक : 17 मई 2025 समय : प्रात: 10 बजे से स्थान : कांस्टीट्यूशन क्लब आफ इंडिया, रफी मार्ग नई दिल्ली 110001

-: मुख्य अतिथि:-

श्री शंभू सिंह, आईएएस

सचिव शिपिंग भारत सरकार (सेवानिवृत्त) शिपिंग मंत्रालय

"परिवहन विशेष" हिन्दी दैनिक समाचार पत्र के "द्वितीय वार्षिकी सम्मान समारोह" के "मुख्य अतिथि श्री शंभू सिंह" का संक्षिप्त परिचय

"श्री शंभू सिंह 1986 बैच के आईएएस अधिकारी हैं। तीक्ष्ण विश्लेषणात्मक विशेषज्ञता के साथ लक्ष्य-उन्मुख, श्री शंभू सिंह के पास आतंकवाद-निरोध, पुनर्वास और सामाजिक विकास में व्यापक अनुभव है। सरकार में आईसीटी को अपनाने वाले शुरुआती लोगों में से एक श्री शंभू सिंह भारत के घरेलू आईसीटी क्षेत्र के विकास के बारे में भावुक रहे हैं।

भारत में लघु-स्तरीय क्षेत्र के विकास, यूएनएफसीसीसी में जलवायु परिवर्तन वार्ता, शिक्षा, वन और पर्यावरण और बुनियादी ढांचा क्षेत्रों, विशेष रूप से राजमार्ग, शिपिंग और बिजली में उनका व्यापक अनुभव है।

अपने शानदार नेतृत्व कौशल का परिचय देते हुए, श्री शंभू सिंह ने अकेले ही सबसे स्थायी विद्रोहों में से एक को स्वीकार्य सीमा तक पहुँचाया और इसके निकट समाधान की सुविधा प्रदान की। जब अनुसूची VI में संशोधन हुआ, विशेष रूप से असम और मेघालय (गारो समझौते) के मामले में, तब वह भारत सरकार के गृह मंत्रालय में संयुक्त सचिव (उत्तर पूर्व) थे, जिसका उन्होंने सफलतापूर्वक संचालन किया। उन्होंने स्वतंत्र रूप से सबसे स्थायी आतंकवाद आंदोलन को एक स्वीकार्य दृष्टिकोण के लिए निर्देशित किया है और इसलिए इसके समाधान में सहायता की है।"

विशेष अतिथि :-

1. बाटला नैन्सी सिंह
2. श्री अमर पाल सिंह संयुक्त आयुक्त भारत सरकार
3. डॉ. आर. के. भटनागर आई.ए.एस. (सेवानिवृत), जनरल सेक्रेटरी (आई.जी.एस.आई.)
4. डॉ. भरत सिंह, शिक्षाविद् (प्रिंस इंस्टीट्यूशन आफ इनोवेटिव टेक्नोलॉजी) ग्रेटर नोएडा
5. श्री बरूड ठाकुर, अधिवक्ता उच्चतम न्यायालय भारत
6. श्री. आविष्कार मेश्राम एडिशनल जनरल मैनेजर कंसल्टेंसी (एनटीपीसी) नोएडा यू पी
7. श्री हेतराम (ज्योतिषाचार्य)
8. श्री अशोक सक्सैना प्रोटोकोल अधिकारी माननीय स्वास्थ्य राज्य मंत्री भारत सरकार
9. श्री अशोक कुमार प्रधान निजी सचिव अध्यक्ष प्रसार भारती भारत सरकार
10. श्री मुकेश दयाल, जिला परिवहन अधिकारी, (सेवानिवृत) जीएनसीटीडी
11. श्री राहुल गुप्ता सहायक अभियंता सीपीडब्ल्यूडी
12. श्री लोकेश कौशिक सहायक निदेशक (बागवानी) पीडब्ल्यूडी
13. हरीश सभरवाल अध्यक्ष एआईएमटीसी
14. गुरमीत सिंह, अध्यक्ष मोटर वाहन नियम (बीओसीआई)
15. साइकिलिस्ट योगेन्द्र सिंह
16. पारुल भटनागर, वैदिक वास्तु शास्त्र
17. श्रीमती पिंकी कुंडू, समाज सेविका
18. श्री अशोक नारंग, वाहन जांच सलाहकार
19. श्री नरेन्द्र
20. शिशिर अग्रवाल एम डी शिगन ग्रुप
21. विक्रम बक्शी
22. रक्षा द सेवियर (एन.जी.ओ.)

प्रमुख आमंत्रित विशेषज्ञ / वक्ता :-

1. श्री अनिल छिक्कारा, पूर्व उपायुक्त एवम् सलाहकार
2. श्री महाराज सिंह, मोटर वाहन नियम अधिनियम विशेषज्ञ
3. श्री अजेय शाह सड़क सुरक्षा विशेषज्ञ (टायर परिप्रेक्ष्य)
4. पायलट अनिल शर्मा, वशिष्ठ पायलट प्रशिक्षक
5. श्री प्रशांत चोपड़ा, दोपहिया वाहन सुरक्षा विशेषज्ञ
6. श्री आशीष कुमार जैन, ईवी वाहन सुरक्षा विशेषज्ञ
7. श्री अंकुर शरण, लॉजिस्टिक विशेषज्ञ

कार्य शैली के आधार पर सम्मान :-

1. के के छाबड़ा मां महाकाली मोटर्स
2. प्रो मनोज कुमार कैन- पीजीडीएवी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
3. डॉ. सत्यवान सौरभ
4. डॉ. प्रियंका सौरभ
5. पंडित योगेश पौराणिक (इंजी) ज्योतिष
6. पाइन व्यू, भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त वाहन स्क्रैप डीलर
7. ट्रांटेक इलेक्ट्रॉनिक लिमिटेड
8. एस.के.एस. ट्रेड इंडिया प्राईवेट लिमिटेड
9. विजेन्द्र सिंह, नर्मदा ट्रैवल
10. शिगन ग्रुप
11. रश्मि तंवर अभिषेक राजपूत
12. शीबा मेसन, शिक्षाविद्
13. वर्षा रानी नारंग, महिला उद्यमी
14. सबला उत्कर्ष फाऊंडेशन औरंगाबाद महाराष्ट्र
15. शिशु एवम मानव कल्याण सेवा समिति, फतेहपुर सीकरी आगरा
16. नारी शक्ति विमेन वेलफेयर चैरिटेबल ट्रस्ट
17. विश्वास सोशल वेलफेयर सोसाइटी
18. पी.एच.ई. एजुकेशन ट्रस्ट
19. नरेन्द्र नाथ मेमोरियल ट्रस्ट
20. यशु अग्रवाल टीम वी केयर ट्रस्ट
21. अमर शहीद अवंती बाई शिक्षा समिति
22. अखिल भारतीय ट्रांसपोर्ट एसोसिएशन
23. ट्रांसपोर्ट रिप्रेजेंटेटिव वेलफेयर एसोसिएशन (छाबड़ा)
24. ग्रामीण सेवा परिवहन वेलफेयर एसोसिएशन
25. तजिंदर सिंह
26. सौरभ छाबड़ा, मां शक्ति मोटर्स
27. राजेश कक्कड़, राजू मोटर्स
28. डॉ. हरिशंकर पटेल
29. विशाल स्नातक
30. निर्मल सिंह
31. विनीत शर्मा, एफ- प्रोटेक्ट्
32. जोगिंदर सिंह सभरवाल
33. औंकार नाथ पुरी
34. नवदीप सिंह
35. हुकुम सिंह राजपूत
36. फिरोज खान
37. इंस्पेक्टर सतीश कुमार, झज्जर हरियाणा
38. कुणाल यादव (डीटीसी)
39. प्रभजीत सिंह, टैम्पो एसोसिएशन
40. आमिर सिद्दीकी
41. सोबरन सिंह राजपूत
42. पूनम पंवार
43. संजीव गुप्ता, प्रमुख संवाददाता दैनिक जागरण
44. जाह्नवी भल्ला
45. एकता पंछी
46. इशिका चंद्रा गुप्ता
47. सुषमा रानी
48. कार्तिक कुमार परिछा
49. मोहम्मद शम्स आगाज
50. दिलीप देवतवाल

"परिवहन विशेष" हिन्दी दैनिक समाचार पत्र आर.एन.आई. मान्यता प्राप्त को आपके भरपूर सहयोग प्राप्त के कारण हम निष्पक्ष समाचार प्रदान करते हुए अपने 2 साल पूरे करने में सक्षम रहे।

इन दो सालों में समाचार पत्र को निष्पक्ष रूप से चलाने में आप सभी का भरपूर सहयोग रहा जिसके लिए मैं और हमारा प्रशासनिक विभाग आप सभी का दिल से आभार व्यक्त करता है और आशा करते हैं भविष्य में भी आपका सहयोग हमारे साथ ऐसे ही बना रहेगा। इन दो सालों में समाचार पत्र को राष्ट्रीय स्तर पर सभी शहरों और जिलों तक पहुंचाने और वहां की सही और सच्ची खबरें हम तक पहुंचाने वाले हमारे सहयोगियों और रिपोर्टर्स का भी मै दिल से धन्यवाद करता हूं।

इस वर्ष आज दिनांक 17 मई 2025,
स्थान :- कंस्टीट्यूशन क्लब आफ इंडिया, रफी मार्ग, नई दिल्ली,
समय :- प्रात 10 बजे से शाम 7 बजे तक, मुख्य अतिथि "श्री शंभू सिंह", आई.ए.एस. सचिव शिपिंग भारत सरकार (सेवा निर्मित) शिपिंग मंत्रालय एवं अन्य आमंत्रित विशेष अतिथियों के साथ भारत देश में जनहित एवं कल्याणकारी कार्यों में योगदान प्रदान करने वाले कार्यकर्ताओं/ संस्थाओं / ट्रस्ट को हमारे इस **समारोह में उपस्थित होकर गौरवान्वित महसूस करवाने के लिए हम अपने द्वितीय वार्षिकी समारोह में मुख्य रूप से आभार के साथ सम्मान प्रदान करते हुए गर्व महसूस कर रहे हैं।**

इस आयोजन में

1. सड़कों को जाम और दुर्घटनाओं से मुक्त करवाने,
2. दिल्ली को प्रदूषण मुक्त राज्य बनाने,
3. लेन ड्राइविंग कितनी अनिवार्य?"
4. "सड़क दुर्घटना से कैसे हो सकता हैं बचाव ?"
5. "दिल्ली को प्रदूषण मुक्त राज्य कैसे बनाया जा सकता है?"

पर विचार के लिए उपस्थित हुए सभी विशेषज्ञों का भी मै दिल से आभार प्रकट करता हूं।

संजय कुमार बाटला
संपादक

शिगन समूह अवलोकन

शिगन ग्रुप, जिसका मुख्यालय मानेसर, गुरुग्राम, हरियाणा में है, एक अग्रणी भारतीय समूह है जो टिकाऊ गतिशीलता, वैकल्पिक ईंधन प्रौद्योगिकियों और स्वच्छ ऊर्जा समाधानों में विशेषज्ञता रखता है। यह समूह टिकाऊ और सुरक्षित परिवहन के क्षेत्र में एक प्रेरक शक्ति है, जो भारत सरकार के आत्मनिर्भर भारत के दृष्टिकोण के अनुरूप है और नवाचार और मूल्य इंजीनियरिंग में एक मजबूत नींव द्वारा संचालित है।

ऑटोमोटिव, लोकोमोटिव, समुद्री, बिजली उत्पादन कृषि और ऑफ-हाइवे क्षेत्रों में दो दशकों से अधिक के अनुभव के साथ, शिगन ने खुद को अल्टिमेट एनर्जी सॉल्यूशंस और एडवांस्ड प्रोपल्शन टेक्नोलॉजीज में अग्रणी के रूप में स्थापित किया है। इसकी सफलता का मूल एक अनुभवी टीम है, जिसके पास 30 से अधिक वर्षों का डोमेन विशेषज्ञता है, जो सटीक-इंजीनियर्ड ग्रीन फ्यूल घटकों के डिजाइन और निर्माण को सक्षम बनाता है।

शिगन ग्रुप को CNG, LNG और हाइड्रोजन ईंधन किट सहित उन्नत वैकल्पिक ईंधन प्रणालियों के डिजाइन, निर्माण और एकीकरण के लिए व्यापक रूप से जाना जाता है। उल्लेखनीय रूप से, यह BS-VI + OBD-II अनुरूप CNG ईंधन प्रणालियों को पूरी तरह से स्वदेशी बनाने वाली पहली भारतीय कंपनी है, जो अग्रणी घरेलू OEM के लिए अनुकूलित लागत प्रभावी, उच्च प्रदर्शन समाधान प्रदान करती है। इसके विविध उत्पाद पोर्टफोलियो में इन-हाउस निर्मित घटक जैसे गैस इंजेक्टर, इंजन कंट्रोल यूनिट (ECU), उच्च दबाव नियामक, ईंधन रेल, फिल्टर, गैस भरने वाली इकाइयाँ और सेंसर शामिल हैं, जो सिंगल-सिलेंडर से लेकर आठ-सिलेंडर इंजन तक के अनुप्रयोगों की एक विस्तृत श्रृंखला का समर्थन करते हैं।

OEM समाधानों के अतिरिक्त, शिगन उन्नत आफ्टरमार्केट कन्वर्जन किट भी प्रदान करता है, जो उपयोग में आने वाले डीजल वाहनों को स्वच्छ CNG और LNG प्रणालियों में परिवर्तित करने में सक्षम बनाता है, जिससे वाहनों से होने वाले उत्सर्जन को कम करने के भारत के प्रयासों को समर्थन मिलता है।

वैकल्पिक ईंधन से परे, शिगन ने इलेक्ट्रिक वाहन निर्माण में विविधता लाई है, विशेष रूप से L3 और L5 ई-रिक्शा खंडों में, जो भारत के विकसित होते इलेक्ट्रिक मोबिलिटी परिदृश्य में और योगदान दे रहा है। समूह उन्नत इलेक्ट्रॉनिक्स विनिर्माण समाधान भी प्रदान करता है, जो ECU और नियंत्रण पैनल जैसे प्रमुख ऑटोमोटिव घटकों का उत्पादन करता है।

अपने दायरे का और विस्तार करते हुए, शिगन ने ऑटोमोटिव अनुप्रयोगों के लिए स्वचालित अग्नि संसूचन एवं शमन प्रणालियों (एफडीएसएस) के क्षेत्र में प्रवेश किया है, जिससे उभरते सुरक्षा नियमों के अनुपालन को सुनिश्चित किया जा सके और अपनी उत्पाद श्रृंखला को समृद्ध किया जा सके।

शिगन ने अपने उत्तरदायी और विश्वसनीय सेवा नेटवर्क के लिए लगातार ग्राहक मान्यता अर्जित की है, जिसे पूरे भारत में कार्यरत 30 से अधिक उच्च प्रशिक्षित सेवा पेशेवरों का समर्थन प्राप्त है।

नवाचार के प्रति समूह की प्रतिबद्धता वैश्विक प्रौद्योगिकी नेताओं के साथ इसके रणनीतिक गठबंधनों में परिलक्षित होती है, जिससे शिगन को अत्याधुनिक तकनीकों का स्थानीयकरण करने और उत्पाद की गुणवत्ता और बाजार प्रतिस्पर्धात्मकता दोनों को बढ़ाने में मदद मिलती है। इसकी अत्याधुनिक विनिर्माण सुविधा विश्व स्तरीय परिशुद्धता और गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए उन्नत मशीनरी से सुसज्जित है।

स्वच्छ, सुरक्षित और टिकाऊ पर्यावरणीय समाधान प्रदान करने की दृष्टि से प्रेरित, शिगन ग्रुप भारत में हरित गतिशीलता की ओर अग्रसर होने का नेतृत्व कर रहा है, तथा स्वच्छ परिवहन के भविष्य में एक प्रमुख खिलाड़ी के रूप में अपनी स्थिति को मजबूत कर रहा है।

आशीष कुमार जैन

निदेशक, नान्या एयरकॉन प्राइवेट लिमिटेड लिमिटेड

इन्होंने उत्पाद की गुणवत्ता को कठोर बी.आई.एस. और आई.सी.ए.टी. मानकों के स्वरूप बढ़ाया और क्रांतिकारी अंतर डिजाइन विकसित किया जो चार्जिंग पावर की खपत को काफी कम करता है और ड्राइवर की लाभ प्रदता में सुधार करता है, जो आजीविका को बदलने की क्षमता के साथ एक बड़ी सफलता है। ईवी घटकों में वास्तविक दुनिया की चुनौतियों और प्रदर्शन अंतराल की पहचान करने में व्यावहारिक अनुभव के साथ, स्थायित्व, दक्षता और उत्पाद फिटमेंट की व्यावहारिक समझ के लिए इन्हें जाना जाता है। इन्हें ईवी विनिर्माण में उनके विचार, नेतृत्व, उद्योग दूरदर्शिता और भारत भर में उत्पाद नवाचार और चालक कल्याण दोनों में सुधार के जुनून के लिए जाना जाता है।

पंकज श्रीवास्तव भारत में हाइड्रोलिक इंजीनियरिंग समाधान के अग्रणी प्रदाता, PHE इंडस्ट्रीज प्राइवेट लिमिटेड के संस्थापक और प्रबंध निदेशक हैं। दो दशकों से अधिक की विशेषज्ञता के साथ, उन्हें उनके गहन तकनीकी ज्ञान और नवाचार, परिचालन उत्कृष्टता और दीर्घकालिक ग्राहक साझेदारी पर ध्यान केंद्रित करने के लिए व्यापक रूप से सम्मानित किया जाता है। 2000 में कंपनी की स्थापना के बाद से, श्री श्रीवास्तव ने विश्वसनीय, कुशल और ग्राहक-केंद्रित हाइड्रोलिक सिस्टम और सेवाएँ प्रदान करने के दृष्टिकोण के साथ इसे आगे बढ़ाया है। उनके नेतृत्व में, PHE Industries हाइड्रोलिक मरम्मत, रखरखाव और घटक आपूर्ति में एक विश्वसनीय नाम बन गया है। कंपनी डैनफॉस, लिंडे, पार्कर, ईटन और रेक्सरोथ जैसे वैश्विक ब्रांडों के लिए एक अधिकृत भागीदार है, जो विभिन्न उद्योगों में स्पेयर पार्ट्स और नए उपकरण की आपूर्ति करती है। फरीदाबाद और मुंबई में इसकी अत्याधुनिक कार्यशालाएँ, दोनों ही उन्नत परीक्षण बेंचों से सुसज्जित हैं, जो इसे पुनर्निर्मित पंप, ऑन-साइट निरीक्षण, मरम्मत और वार्षिक रखरखाव अनुबंध (AMC) जैसी सटीक सेवाएँ प्रदान करने की अनुमति देती हैं।

श्री अजय शाह टायर परिप्रेक्ष्य के लिए सड़क सुरक्षा विशेषज्ञ हैं। वे दुर्घटनाओं में टायर की भूमिका के आधार पर टायरों के अनुसंधान और विकास के लिए 3 दशकों से CIRT के साथ मिलकर काम कर रहे हैं।

प्रशांत चोपड़ा दो पहिया वाहनों के लिए सड़क सुरक्षा विशेषज्ञ हैं, उन्होंने दो पहिया वाहनों की सड़क सुरक्षा के लिए 3 दशकों से अधिक समय समर्पित किया है अनिल शर्मा 4 दशकों से विमान पायलट प्रशिक्षक थे। अब वे पायलट विशेषज्ञता के आधार पर सड़क दुर्घटनाओं को कम करने के लिए ड्राइवरों के लिए सड़क सुरक्षा के लिए काम करते हैं।

जाग्रती सिंह, उपाध्यक्ष सबला उत्कर्ष फाऊंडेशन

औरंगाबाद महाराष्ट्र ... मेल आय डी- sablautkarsh@gmail.com , cont - 9266059464 .....

.....सबला उत्कर्ष फाऊंडेशन यह एक जनसेवा संस्था है जो कि महाराष्ट्र औरंगाबाद से संस्था रजिस्ट्रेशन की गई है । सबला उत्कर्ष फाउंडेशन 2018 से दिल्ली में कार्य कर रहे थे लेकिन अभी 2024 में महाराष्ट्र औरंगाबाद से इसका रजिस्ट्रेशन किया गया है। सबला उत्कर्ष फाऊंडेशन द्वारा महिला उत्पीड़न, महिला रोजगार, पर्यावरण ,शिक्षा, बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ पर जोर देकर कार्य कर रहे हैं। इतना ही नहीं बच्चों को शिक्षा के लिए प्रोत्साहित करने के लिए दिल्ली में भी कार्यक्रम आयोजित किए गए हैं। इस सबला उत्कर्ष फाउंडेशन का एक ही मकसद है कि कोई भी बच्चा शिक्षा में पीछे ना रहे और शिक्षा के साथ-साथ पर्यावरण पर भी जोर दिया गया है । और स्वच्छता अभियान, जल ही जीवन है , पेड़ बचाओ पेड़ लगाओ इस मुहिम पर कार्य कर रहे हैं। साबला उत्कर्ष फाऊंडेशन को सरकार के तरफ से माझी वसुंधरा मित्र के तरफ से सर्टिफिकेट दे का सम्मानित किया गया है। जहां भी पर्यावरण का विषय हो हमारी टीम बढ़ चढ़कर काम करती है। अगर हम अपने पर्यावरण को बचाएंगे तभी तो हम जी पाएंगे। हम किसी का भी जन्मदिन हो सबको पेड़ लगाने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।

डा0 प्रेमपाल सिंह वर्मा

शिक्षा - बी. ई.एम. एस., सी. एम. एस., डी.एन. वाई.एस., सचिव/प्रबंधक - शिशु एवम मानव कल्याण सेवा समित, फतेहपुर सीकरी,आगरा (उ0प्र0,), जिलाअध्यक्ष आगरा चेप्टर-एवम् राष्ट्रीय कार्यकारणी सदस्य- इंटरनेशनल गुडविल सोसाइटी ऑफ इंडिया। पता - मो0 -इस्लाम गंज, फतेहपुर सीकरी आगरा -283110

सामाजिक कार्य-

सन 1986 से 1996 तक ग्राम पंचायत रसूलपुर, फ0 सीकरी आगरा के अध्यक्ष पद पर तथा सन 19995 से 2002 तक नेहरू युवा संगठन के उक्त ग्राम पंचायत रसूलपुर में अध्यक्ष पद पर रहकर ब्रक्षारोपण, साक्षरता अभियान, युवाओं के खेल कूद आदि युवा कल्याण विभाग व ने0युवा केन्द्र विभाग द्वारा संचालित ग्राम व ब्लाक स्तरीय योजनाओं को सफल बनाने में पूर्ण सहयोग किया। 25 जुलाई 2002 को सोसाइटी एक्ट 1860 के तहत आगरा उ0प्र0 में शिशु एवम मानव कल्याण सेवा समित, फतेहपुर सीकरी, आगरा के नाम रजिस्ट्रेशन कराकर शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण आदि के क्षेत्र में स्वयं व अन्य समाज सेवी संस्थाओं के साथ मिलाकर उपरोक्त के क्षेत्र में सामाजिक कार्य किए।

सफीना जोसेफ, अध्यक्ष नारी शक्ति महिला कल्याण चैरिटेबल ट्रस्ट।

राष्ट्रीयता: भारतीय, व्यवसाय महिला अधिकार, कार्यकर्ता, महिला एवं बाल कल्याण के लिए सशक्तिकरण कार्यक्रम

उल्लेखनीय कार्य

स्वत्व भारत अभियां, डिसट्रिब्यूटेड स्वच्छता किट्स, बच्चों, युवाओं और बुजुर्गों के लिए फिट इंडिया मैराथन।, बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ, ग्रह उद्योग, कैंसर जागरूकता कार्यक्रम, स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रम, जागरूकता आत्मरक्षा, स्वच्छता के प्रति जागरूकता और सैनिटरी पैड का वितरण, शिक्षा के प्रति जागरूकता तथा बैग और पुस्तकों का वितरण, पर्यावरण बचाएं, पौधे उगाएं। परियोजना, POSH अधिनियम के प्रति जागरूकता, या कार्यस्थल पर महिलाओं का यौन उत्पीड़न (रोकथाम, निषेध और निवारण) अधिनियम, 2013, भारत में एक कानून है जो कार्यस्थल पर महिलाओं को यौन उत्पीड़न से बचाता है।

संजीव गुप्ता दैनिक जागरण के दिल्ली राज्य ब्यूरो में प्रमुख संवाददाता हैं। 26 वर्ष से दैनिक जागरण में हैं। नियमित पत्रकारिता में 30 साल का अनुभव। हरियाणा में भी रिपोर्टिंग की है। साहित्य लेखन में भी रुचि है। राष्ट्रीय वीरता पुरस्कार प्राप्त बच्चों पर छह पुस्तकें, फिल्म एवं साहित्य जगत की प्रमुख हस्तियों से इंटरव्यू पर आधारित एक साक्षात्कार संकलन ₹गुफ्तगू₹ और एक अन्य किताब ₹मंदिरों का शहर दिल्ली₹ प्रकाशित है। हिन्दी अकादमी दिल्ली से वर्ष 2006-07 में किशोर साहित्य सम्मान, सहित कई पुरस्कार प्राप्त किए। वर्तमान में दिल्ली सरकार, एलजी हाउस, पर्यावरण-मौसम इत्यादि बीटों पर कार्य कर रहे हैं। इनसे gsanjeev@del.jagran.com पर संपर्क किया जा सकता है।

प्रो (डॉ) मनोज कुमार कैन, साहित्यकार, शिक्षाविद् एवं समाज सेवक

शैक्षणिक योग्यता:-

1:- दिल्ली विश्वविद्यालय से हिंदी में एम ए; एम फिल; पीएच डी ।
2:- भारतीय जनसंचार संस्थान दिल्ली से हिंदी पत्रकारिता डिप्लोमा।
3:- केन्द्रीय हिन्दी संस्थान दिल्ली से अनुप्रयुक्त भाषा विज्ञान डिप्लोमा।
4:- उर्दू अकादमी दिल्ली से उर्दू सर्टिफिकेट कोर्स।
5:- राष्ट्रीय संग्रहालय दिल्ली से भारतीय कला निधि सर्टिफिकेट कोर्स।

प्रकाशित कार्य:- 1:मौलिक पुस्तकें :-

क:- साहित्यकार मोहन राकेश (आलोचनात्मक पुस्तक)
ख:- संवादों के पीछे (मौलिक नाटक)
ग:-संशय के कुछ दिन और अन्य एकांकी (एकांकी संकलन)

संपादित पुस्तकें:-

क:- कोरोना काल आपदा और अवसर (लेख संग्रह)
ख:-मुक्ति (काव्य संकलन)
ग:-आज का समय (दलित कविता संग्रह)

2:-राष्ट्रीय- अंतरराष्ट्रीय शोध पत्र- पत्रिकाओं में अनेक शोध पत्र एवं रचनाएं प्रकाशित।

3:- राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठियों में शोध पत्र प्रस्तुत किए एवं सहभागिता की।

4:-राष्ट्रीय अंतरराष्ट्रीय सामाजिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक मंचों से पुरस्कृत ,सम्मानित एवं अवार्ड प्राप्त किए ।

5:- इनोवेशन प्रोजेक्ट के अंतर्गत ₹विधवा जीवन एक संघर्ष ₹(वृन्दावन के संदर्भ में) विषय पर कार्य किया।

वर्तमान दायित्व:-

1:-सदस्य:-हिंदी सलाहकार समिति वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय भारत सरकार, 2:-संरक्षक:- शिक्षा बचाओ आंदोलन, एनजीओ, दिल्ली। 3:-संगठन महामंत्री - श्री गुरु रविदास विश्व महापीठ दिल्ली प्रदेश।, 4:- सचिव:-नेशनल डेमोक्रेटिक टीचर्स फ्रंट (NDTF) दिल्ली विश्वविद्यालय शिक्षक संगठन।

5:- सदस्य संपादक मंडल:- भारतीय लोक दीपिका , त्रैमासिक पत्रिका, दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी, सांस्कृतिक मंत्रालय, भारत सरकार।

पुरुषोत्तम कुमार एक शिक्षाविद, सॉफ्टवेयर इंजीनियर है जो गत 25 वर्षों से समाज सेवा में अपना योगदान दे रहे हैं। 2009 में इन्होंने नरेंद्र नाथ मेमोरियल ट्रस्ट की स्थापना की जिसका उद्देश्य समाज की सेवा, उसमें बदलाव एवं छिपी हुई प्रतिभा का विकास करना है। यह संस्था दिल्ली के साथ पूरे भारतवर्ष के अन्य राज्यों में भी विभिन्न सामाजिक क्षेत्र में कार्यरत है जैसे कला एवं संस्कृति, कौशल विकास, युवा एवं रोजगार, नारी सशक्तिकरण इत्यादि। साथ ही साथ अन्य सामाजिक विषयों पर जागरूकता फैलाना जैसे पर्यावरण, नशा मुक्ति, सड़क सुरक्षा, आत्मरक्षा आदि। अब तक 5000 से भी अधिक छात्र-छात्राएं युवा एवं महिलाएं इस संस्था से लाभान्वित होकर रोजगार प्राप्त कर चुके हैं। कोरोना काल में नरेंद्र नाथ मेमोरियल ट्रस्ट के योगदान को सरकार से अत्यधिक सम्मान एवं प्रशंसा मिली। 25,000 से अधिक पीड़ितो को खाद्य, दवाइयां, कंबल इत्यादि की सहायता की गई। संस्था की सामाजिक कार्य को देखते हुए श्री रामदास अठावले सामाजिक अधिकारिता मंत्री ने भी संस्था को सम्मानित किया।

जय माता दी बाटला जी परिवहन विशेष अखबार द सादे सर्व सर्व बड़े भाई साहब बहुत-बहुत बधाइयां बहुत-बहुत मुबारक हो माता रानी के आशीर्वाद नाल माता रानी दे आशीर्वाद नाल परिवहन विशेष अखबार दे और परिवहन विशेष परिवार में 2 साल पूरे हो रहे हैं भगवान साडे पुरा संजय बाटला जी नू और ऊंचाइयां ते ले जाए और अखबार न्यू चड्डी कालचे ऊंचाई ट्रांसपोर्ट के भाइयों के लिए और समाज के लोगों के लिए बाटला जी अपनी सूझबूझ ते समझदारी से जन-जन की खबर हर अफसर तक चीफ मिनिस्टर तक प्राइम मिनिस्टर तक सारी एडमिनिस्ट्रेशन तक पहुंचाते हैं हम बहुत-बहुत बधाई देते हैं माता रानी संजय बाटला जी को बहुत-बहुत तरक्की देवे जय माता दी हरे कृष्णा और हम आपके साथ लगे रहें और आपका आशीर्वाद भी हमारे ऊपर रहे जय माता दी हरे कृष्ण

- राजेश कक्कड़

प्रियंका सौरभ एक स्वतंत्र पत्रकार, कवयित्री और स्तंभकार हैं, जो हरियाणा के हिसार से अपने विचारों की स्पष्टता और सामाजिक मुद्दों पर गहरी समझ के लिए जानी जाती हैं। उन्होंने हिंदी पत्रकारिता में एक प्रभावशाली आवाज़ के रूप में अपनी पहचान बनाई है, विशेषकर संपादकीय लेखन में उनकी पकड़ बेहद मजबूत है। प्रियंका का लेखन मुख्य रूप से सामाजिक न्याय, लैंगिक समानता, शिक्षा, पर्यावरण और हाशिए के समुदायों से जुड़े मुद्दों पर केंद्रित है। वे अपनी रचनाओं में गहरी संवेदनशीलता और कटाक्ष का अद्भुत मिश्रण प्रस्तुत करती हैं, जो पाठकों को सोचने पर मजबूर कर देता है। उनकी शैली सरल, प्रभावी और वास्तविकता से जुड़ी होती है, जो आम पाठक के दिल को छू जाती है। प्रियंका सौरभ ने कई चर्चित संपादकीय और कविताएं लिखी हैं, जो विभिन्न राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर प्रकाशित हो चुकी हैं। वे सामाजिक न्याय, महिला सशक्तिकरण और लोकतांत्रिक मूल्यों की प्रबल समर्थक हैं, और अपने लेखन के माध्यम से समाज में सकारात्मक बदलाव लाने का प्रयास करती हैं।

डॉ. सत्यवान 'सौरभ' एक बहुआयामी व्यक्तित्व हैं—कवि, लेखक, स्तंभकार, पत्रकार, समाजसेवी और सरकारी अधिकारी—जिन्होंने साहित्य, समाज और प्रशासन के क्षेत्रों में उल्लेखनीय योगदान दिया है। उनका जन्म 3 मार्च 1989 को हरियाणा के भिवानी जिले के बड़वा गाँव में हुआ था ।डॉ. सौरभ ने राजनीति विज्ञान में स्नातकोत्तर की डिग्री प्राप्त की और दिल्ली विश्वविद्यालय से पीएच.डी. के लिए पंजीकरण कराया। वर्तमान में वे हरियाणा सरकार के पशुपालन विभाग में वेटरनरी इंस्पेक्टर के पद पर कार्यरत हैं ।साहित्य के क्षेत्र में डॉ. सौरभ की रचनाएं विविध शैलियों में फैली हुई हैं, जिनमें कविता, निबंध, बाल साहित्य और अंग्रेजी लेखन शामिल हैं। उनकी प्रमुख कृतियों में 'यादें' (ग़ज़ल संग्रह), 'तितली है खामोश' (दोहा संग्रह), 'कुदरत की पीर' (निबंध संग्रह), 'परियों से संवाद' (बाल काव्य संग्रह) और 'इश्यूज एंड पैन्स' (अंग्रेजी निबंध संग्रह) शामिल हैं ।डॉ. सौरभ के लेखन की विशेषता उनकी सामाजिक, सांस्कृतिक और मानवीय विषयों पर गहरी पकड़ है। उनके लेख और कविताएं देश-विदेश की विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रही हैं, जिनमें 'हम हिंदुस्तानी' (यूएसए), 'दैनिक भास्कर', 'हिमालिनी' और 'द हिल्स टाइम्स' शामिल हैं ।उनकी साहित्यिक और सामाजिक सेवाओं के लिए उन्हें सैकड़ों राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है, जिनमें इंटरनेशनल ब्रिटिश अकादमी, इंटरनेशनल फॉरम ऑफ पीस अकादमी, वर्ल्ड पीस फेडरेशन (बांग्लादेश एवं फिलीपींस) और

अचल लक्ष्मी की प्राप्ति के लिए श्री सूक्त का पाठ करें

ज्योतिषाचार्य पंडित योगेश पौराणिक(इंजी .)

हमारे वेद शास्त्रों और पुराणों में धन, वैभव और संपन्नता की प्राप्ति के लिए लक्ष्मी जी को प्रसन्न करने हेतु कई प्रकार के मंत्रों और स्त्रोतों का वर्णन मिलता है। जैसे कि ब्रह्मवैवर्त पुराण में लक्ष्मी स्त्रोत और इंद्र कृत लक्ष्मी स्त्रोत तथा शंकराचार्य द्वारा रचित कनक धारा स्त्रोत आदि। इन स्त्रोतों के पाठ से भी मां लक्ष्मी को प्रसन्न किया जा सकता है लेकिन ऋग्वेद में वर्णित 15 मंत्र जिसे श्री सूक्त के नाम से जाना है इसके नित्य पाठ और हवन से अचल लक्ष्मी की प्राप्ति हो जाती है। यदि कोई दरिद्र है तो इस सूक्त के पाठ से उसकी दरिद्रता का नाश हो जाता है और व्यक्ति संपन्न होने लगता है। इसके अलावा अग्नि पुराण में वर्णन आता है कि यदि संतान अभिलाषी व्यक्ति इस सूक्त का नित्य जाप करे तो उसे उत्तम संतान की प्राप्ति होती है तथा राज्य की कामना वाले पुरुष को राज्य की प्राप्ति होती है। ऋग्वेदोक्त श्री सूक्त के 15 मंत्र निम्न प्रकार से हैं।

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं
सुवर्णरजतस्रजाम्।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो
म आ वह ॥ १ ॥

तां म आवह जातवेदो
लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं
पुरुषानहम्।। २ ॥

अश्वपूर्वां रथमध्यां
हस्तिनादप्रमोदिनीम्।
श्रियं देवीमुप ह्वये श्रीर्मा देवी
जुषताम् ॥ ३ ॥

कां सोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां
ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्। पद्मस्थितां
पद्मवर्णां तामिहोप ह्वये श्रियम् ॥ ४ ॥

चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं
लोके देवजुष्टामुदाराम्।
तां पद्मिनीमर्मी शरणं प्र पद्ये
अलक्ष्मीमें नश्यतां त्वां वृणे ॥ ५ ॥

आदित्यवर्णे तपसोऽधि जातो
वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु या अन्तरा
याश्च बाह्या अलक्ष्मीः ॥ ६ ॥

उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना
सह।

प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन्कीर्तिमृद्धिं
ददातु मे ॥ ७ ॥

क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं
नाशयाम्यहम्।
अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णद मे
गृहात् ॥ ८ ॥

गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां
करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोप ह्वये
श्रियम् ॥ ९ ॥

मनसः काममाकृति वाचः
सत्यमशीमहि।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि
श्रीः श्रयतां यशः ॥ १० ॥

कर्दमेन प्रजा भूता मयि
सम्भव कर्दम।
श्रियं वासय मे कुले
मातरं पद्ममालिनीम् ॥ ११
॥

आपः सृजन्तु स्निग्धानि
चिक्लीत वस मे गृहे।
निच देवीं मातरं श्रियं
वासय मे कुले ॥ १२ ॥

आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं
पिङ्गलां पद्ममालिनीम्।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं
जातवेदो म आ वह ॥ १३
॥

आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं
सुवर्णां हेममालिनीम्।
सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ
वह ॥ १४ ॥
तां म आवह जातवेदो
लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो
दास्योऽश्वान्विन्देयं पुरुषानहम् ॥ १५ ॥

यः शुचिः प्रयतो भूत्वा
जुहुयादाज्यमन्वहम्।
सूक्तं पञ्चदशर्चं च श्रीकामः सततं
जपेत् ॥ १६ ॥

ऋग्वेदोक्तम श्री सूक्तं सम्पूर्णम

भुवनेश्वरी मां का पाटोत्सव आज

आनन्द की अनुभूति उसी अनुपात से अधिक होती है। भुवन भर की चेतनात्मक आनन्दानुभूति का आनन्द जिसमें भरा हो उसे भुवनेश्वरी कहते है। गायत्री की यह दिव्यधारा जिस पर अवतरित होती है, उसे निरन्तर यही लगता है कि उसे विश्व भर के ऐश्वर्य का अधिपति बनने का सौभाग्य मिल गया है। वैभव की तुलना में ऐश्वयर् का आनन्द असंख्य गुणा बड़ा है। ऐसी दशा में सांसारिक दृष्टि से सुसम्पन्न समझे जाने की तुलना में भुवनेश्वरी की भूमिका में पहुँचा हुआ साधक भी लगभग उसी स्तर की भाव संवेदनाओं से भरा रहता है, जैसा कि भुवनेश्वर भगवान को स्वयं अनुभव होता होगा।

भावना की दृष्टि से यह स्थिति परिपूणर् आत्मगौरव की अनुभूति है। वस्तु स्थिति की दृष्टि से इस स्तर का साधक ब्रह्मभूत होता है, ब्राह्मी स्थिति में रहता है। इसलिए उसकी व्यापकता और समर्थता भी प्रायः परब्रह्म के स्तर की बन जाती है। वह भुवन भर में बिखरे पड़े विभिन्न प्रकार के पदार्थों का नियन्त्रण कर सकता है। पदार्थों और परिस्थितियों के माध्यम से जो आनन्द मिलता है उसे अपने संकल्प बल से अभीष्ट परिमाण में आकर्षित-उपलब्ध कर सकता है।

भुवनेश्वरी मनः स्थिति में विश्वभर की अन्तः चेतना अपने दायित्व के अन्तगर्त मानती है। उसकी सुव्यवस्था का प्रयास करती है। शरीर और परिवार का स्वामित्व अनुभव करने वाले इन्हीं के लिए कुछ करते रहते हैं। विश्वभर को अपना ही परिकर मानने वाले का निरन्तर विश्वहित में ध्यान रहता है। परिवार सुख के लिए शरीर सुख की परवाह न करके प्रबल पुरुषार्थ किया जाता है। जिसे विश्व परिवार की अनुभूति होती है। वह जीवन-जगत से आत्मीयता साधता है। उनकी पीड़ा और पतन को निवारण करने के लिए पूरा-पूरा प्रयास करता है। अपनी सभी सामर्थ्य को निजी सुविधा के लिए उपयोग न करके व्यापक विश्व की सुख शान्ति के लिए, नियोजित रखता है।

वैभव उपाजर्न के लिए भौतिक पुरुषार्थ की आवश्यकता होती है। ऐश्वर्य की उपलब्धि भी आत्मिक पुरुषार्थ से ही संभव है। व्यापक ऐश्वयर् की अनुभूति तथा सामथ्यर् प्राप्त करने के लिए साधनात्मक पुरुषाथर् करने पड़ते है। गायत्री उपासना में इस स्तर की साधना जिस विधि-विधान के अन्तगर्त की जाती है उसे 'भुवनेश्वरी' कहते है।

माँ भुवनेश्वरी के एक मुख, चार हाथ हैं। चार हाथों में गदा-शक्ति का एवं राजदंड-व्यवस्था का प्रतीक है। माला-नियमितता एवं आशीर्वाद मुद्रा-प्रजापालन की भावना का प्रतीक है। आसन-शासनपीठ- सर्वोच्च सत्ता की प्रतीक है।

सुबह के ब्रेकफास्ट और शाम के नाश्ते के लिए है एकदम परफेक्ट

ठंडी ओटमील में चॉकलेट का स्वाद और केले की मिठास मिलकर एक ताज़गी भरा अनुभव देते हैं। यह फाइबर, प्रोटीन और एनर्जी से भरपूर होती है, जिससे दिन की अच्छी शुरुआत होती है या शाम का हल्का नाश्ता बन जाता है।

चॉकलेट बनाना ओटमील, गर्मियों में एक हल्का, स्वादिष्ट और सेहतमंद नाश्ता या सुबह का बढ़िया विकल्प हो सकता है। यह रेसिपी न केवल झटपट बन जाती है, बल्कि बच्चों और बड़ों दोनों को पसंद आती है। ठंडी ओटमील में चॉकलेट का स्वाद और केले की मिठास मिलकर एक ताज़गी भरा अनुभव देते हैं। यह फाइबर, प्रोटीन और एनर्जी से भरपूर होती है, जिससे दिन की अच्छी शुरुआत होती है या शाम का हल्का नाश्ता बन जाता है।

चॉकलेट बनाना ओटमील के लिए क्या चाहिए?

- 1/2 कप ओट्स
- 1 कप पानी या दूध
- 1 पका हुआ केला (कटा हुआ)
- 1-2 बड़े चम्मच कोको पाउडर
- 1 बड़ा चम्मच शहद या मेपल सिरप (वैकल्पिक)
- चॉकलेट चिप्स या फ्रूट्स (वैकल्पिक)

चॉकलेट बनाना ओटमील कैसे बनाएं?

Step 1: एक बर्तन में पानी या दूध को उबालें और फिर इसमें ओट्स डालकर अच्छे से उबाल लें।

Step 2: अब आप केले को मेश करें और उन्हें ओट्स में मिला लें।

Step 3: इसके बाद इसमें कोको पाउडर और मिठास के लिए शहद/मेपल सिरप मिलाएं।

Step 4: सभी चीजों को अच्छे से पका लें और फिर इसे गैस से उतार लें।

Step 5: सर्व करते समय आप अपनी मील पर चॉकलेट चिप्स या फ्रूट्स डालना चाहते हैं तो डाल सकते हैं।

कोणार्क की प्राकृतिक सुंदरता और समृद्ध संस्कृति पर्यटकों को करती है आकर्षित

कोणार्क का प्रमुख आकर्षण है कोणार्क सूर्य मंदिर। यह मंदिर भगवान सूर्य को समर्पित है और 13वीं शताब्दी में राजा नरसिंहदेव I द्वारा बनवाया गया था। यह मंदिर अपनी विशाल और अद्भुत वास्तुकला के लिए प्रसिद्ध है।

कोणार्क, ओडिशा राज्य का एक प्रमुख शहर है, जो अपनी ऐतिहासिक और सांस्कृतिक धरोहर के लिए दुनिया भर में प्रसिद्ध है। यह शहर खासकर अपने प्रसिद्ध कोणार्क सूर्य मंदिर के लिए जाना जाता है, जो यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर स्थल के रूप में मान्यता प्राप्त है। कोणार्क न केवल अपने मंदिरों और वास्तुकला के लिए प्रसिद्ध है, बल्कि यहाँ की प्राकृतिक सुंदरता और समृद्ध संस्कृति भी पर्यटकों को आकर्षित करती है।

कोणार्क सूर्य मंदिरः स्थापत्य कला का अद्भुत उदाहरण

कोणार्क का प्रमुख आकर्षण है कोणार्क सूर्य मंदिर। यह मंदिर भगवान सूर्य को समर्पित है और 13वीं शताब्दी में राजा नरसिंहदेव I द्वारा बनवाया गया था। यह मंदिर अपनी विशाल और अद्भुत वास्तुकला के लिए प्रसिद्ध है। मंदिर की संरचना एक विशाल रथ (रथ का रूप) की तरह बनाई गई है, जो सूर्य देवता की यात्रा को दर्शाता है। इसके चार पहिये और घोड़े की मूर्तियाँ अत्यधिक बारीकी से बनायी गई हैं।

कोणार्क सूर्य मंदिर के दीवारों पर उकेरी गई चित्रकला और शिल्पकला भारतीय स्थापत्य का एक अद्वितीय उदाहरण है। यहाँ की मूर्तियाँ और नक्काशी दर्शाती हैं कि उस समय के शिल्पकारों ने कितना उच्च स्तर का कला कौशल हासिल किया था। यह मंदिर न केवल धार्मिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि यह भारतीय शिल्पकला और वास्तुकला का अद्वितीय उदाहरण भी प्रस्तुत करता है।

कोणार्क बीच

कोणार्क का एक और प्रमुख आकर्षण है यहाँ का सुंदर समुद्र तट, जिसे कोणार्क बीच कहा जाता है। यह समुद्र तट अपनी शांत और प्राकृतिक सुंदरता के लिए प्रसिद्ध है। पर्यटक यहाँ सूर्योदय और सूर्यास्त का अद्भुत दृश्य देख सकते हैं। यह समुद्र तट उन लोगों के लिए आदर्श है जो समुद्र के नजदीक शांति और सुकून की तलाश करते हैं। साथ ही, यहाँ विभिन्न जल क्रीड़ाओं का भी आनंद लिया जा सकता है, जैसे कि स्विमिंग, बोटिंग और वाटर स्पोर्ट्स।

कोणार्क की ऐतिहासिक धरोहर

कोणार्क में केवल सूर्य मंदिर ही नहीं, बल्कि अन्य ऐतिहासिक स्थल भी हैं जो इस क्षेत्र के सांस्कृतिक और धार्मिक महत्व को दर्शाते हैं। कोणार्क म्यूजियम में पर्यटक इस क्षेत्र के इतिहास और संस्कृति के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। यहाँ की पुरानी मूर्तियाँ, शिल्पकला और अन्य पुरातात्त्विक वस्तुएं इस क्षेत्र की समृद्ध धरोहर को उजागर करती हैं।

कोणार्क महोत्सव

कोणार्क नृत्य महोत्सव हर साल दिसंबर महीने में आयोजित किया जाता है। इस महोत्सव में ओडिशा के पारंपरिक नृत्य रूपों, जैसे कि ओडिसी नृत्य, के शानदार प्रदर्शन होते हैं। यह महोत्सव कोणार्क सूर्य मंदिर के पास खुले आकाश के नीचे आयोजित होता है, जहाँ पर्यटक और कलाकार एक साथ ओडिशा की समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर का उत्सव मनाते हैं। यह महोत्सव कला और संस्कृति प्रेमियों के लिए एक अद्भुत अनुभव होता है।

नजदीकी पर्यटक स्थल

कोणार्क के आसपास कई अन्य दर्शनीय स्थल भी हैं जो पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। चिलिका झील जो एशिया की सबसे बड़ी ताजे पानी की झील है, केवल 30 किलोमीटर दूर स्थित है। यह झील अपने प्राकृतिक सौंदर्य और पक्षी अभयारण्य के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ आप बोटिंग का आनंद ले सकते हैं और पक्षियों को देख सकते हैं।

इसके अलावा, पुरी और भुवनेश्वर जैसे अन्य पर्यटन स्थल भी कोणार्क के पास स्थित हैं, जो धार्मिक और सांस्कृतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं।

यात्रा के लिए सबसे अच्छा समय

कोणार्क यात्रा के लिए सबसे अच्छा समय अक्टूबर से मार्च तक है, जब मौसम ठंडा और सुखद रहता है। गर्मियों में यहाँ का तापमान बढ़ सकता है, जिससे यात्रा में असुविधा हो सकती है।

कोणार्क एक अद्भुत ऐतिहासिक और सांस्कृतिक स्थल है, जो अपनी प्राचीन वास्तुकला, सूर्य मंदिर और समुद्र तट के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ की शांति, प्राकृतिक सुंदरता और सांस्कृतिक धरोहर पर्यटकों को आकर्षित करती है। अगर आप भारतीय इतिहास, संस्कृति और वास्तुकला के प्रति रुचि रखते हैं, तो कोणार्क एक अवश्य देखे जाने योग्य स्थान है। यह जगह हर साल लाखों पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करती है।

हरियाणा के इस मंदिर में महिलाएं नहीं करती हैं भगवान के दर्शन, जानिए क्या है कारण

हरियाणा के पिहोवा में एक ऐसा मंदिर है, जहां पर महिलाओं के प्रवेश पर पाबंदी लगी है। हालांकि महिलाएं खुद इस मंदिर में नहीं जाना चाहती हैं। इस मंदिर में महिलाओं के न जाने की वजह मंदिर के श्राप को माना जाता है। इस श्राप का डर महिलाओं के जहन में इस कदर है कि यहां पर वह खुद से नहीं जाना चाहती हैं। माना जाता है कि जो भी महिला इस मंदिर में दर्शन कर लेती है, वह सात जन्मों तक विधवा रहती हैं। लेकिन यह कितना सच है या कितना झूठ यह तो कोई नहीं बता सकता है। लेकिन इस मंदिर के बाहर हिंदी, अंग्रेजी और पंजाबी भाषा में बोर्ड लगा हुआ है। जहां पर महिलाओं के लिए साफ-साफ चेतावनी लिखी है। तो आइए जानते हैं इस मंदिर में महिलाओं के न जाने का क्या कारण है।

महिलाओं के प्रवेश पर पाबंदी

भगवान कार्तिकेय के भारत में अनेकों मंदिर हैं। खासकर दक्षिण भारत में स्वामी कार्तिकेय के अनेकों मंदिर हैं। जहां पर स्वामी कार्तिकेय की पूजा की जाती है। हालांकि वहां पर महिलाओं का जाना वर्जित है। एक ऐसा ही मंदिर पिहोवा के सरस्वती तीर्थ पर स्वामी कार्तिकेय के नाम से जाना जाता है। इस मंदिर में महिलाओं के प्रवेश पर पाबंदी लगाई गई है। मंदिर में महिलाओं के प्रवेश के बंद होने का कारण भगवान कार्तिकेय द्वारा स्त्री को श्राप देना है।

जानिए क्या है वजह

जब भगवान भोलेनाथ और मां पार्वती ने भगवान गणेश और भगवान कार्तिकेय से पृथ्वी का चक्कर लगाने को कहा। तो कार्तिकेय जी मोर पर बैठकर पृथ्वी का चक्कर लगाने निकल गए। लेकिन भगवान गणेश मां पार्वती और शिवजी के चक्कर लगाने लगे। तीन चक्कर लगाने के बाद गणेश ने कहा कि उन्होंने संपूर्ण जगत की परिक्रमा कर ली है। जिसके बाद भगवान शिव ने गणेश का राजतिलक कर दिया। साथ ही गणेश जी को शुभ-अशुभ कार्यों में पूजा का अधिकार दे दिया।

इस घटना के बारे में देवर्षि नारद ने भगवान कार्तिकेय को बताया। वहीं कार्तिकेय ने मां पार्वती से कहा का कि माता आपने मेरे साथ छल किया है। बड़ा होने के कारण राजतिलक का अधिकार मेरा था। इस घटना से क्रोधित होकर अपनी खाल और मांस उतारकर माता के चरणों में रख दिए। उन्होंने गुस्से में पूरी नारी जाति को श्राप देते हुए कहा कि जो भी स्त्री उनके इस रूप के दर्शन करेगी, वह सात जन्म तक विधवा रहेगी। हालांकि देवताओं ने कार्तिकेय को शारीरिक शांति के लिए तेल और सिंदूर का अभिषेक किया।

वहीं गुस्सा शांत होने के बाद अन्य देवताओं ने भगवान कार्तिकेय को देव सेना का सेनापति बना दिया। इसी मान्यता को देखते हुए सिर्फ पुरुष ही भगवान कार्तिकेय के पिंडी रूप के दर्शन कर सकते हैं। वहीं महिलाएं यहां पर दर्शन नहीं कर सकती हैं।

नवजात बच्ची भी नहीं जा सकती हैं मंदिर

कार्तिकेय ने श्राप दिया, तो वह पूरे संसार की महिला जाति के लिए था। इसलिए यहां पर सिर्फ महिलाओं के जाने पर पाबंदी लगी हुई है। इसके साथ ही मंदिर में नवजात बच्ची के भी मंदिर जाने पर पाबंदी लगी है। भारत में कार्तिकेय के दो मंदिर और हैं, जो काफी ज्यादा फेमस हैं। लेकिन यह एकमात्र ऐसा मंदिर हैं, जहां के प्रांगण में महिलाएं को जाना वर्जित है।

क्यों डरती हैं महिलाएं

वहीं लोगों का कहना है कि आसपास के गांव की एक महिला ने कार्तिकेय के पिंडी रूप के दर्शन किए थे। जिसके कुछ समय बाद उसके पति की मौत हो गई थी। हालांकि हमारे द्वारा इस बात की पुष्टि नहीं की जाती है। लेकिन लोगों का मानना है कि महिला ने पिंडी के दर्शन कर लिए थे, इस वजह से उसके पति की मौत हो गई थी। यही कारण है कि यहां पर महिलाएं दर्शन करने से डरती हैं।

इस गर्मी ट्राई करें ये व्हाइट कलर चिकनकारी कुर्ती, लुक में लगेगा ग्लैमर और स्टाइल का तड़का

अगर आप कुछ ऐसा ट्राई करना चाहते हैं, जिससे आपका लुक काफी अच्छा लगे। तो आप व्हाइट कलर वाले अनारकली कुर्ते ट्राई कर सकती हैं। ऐसे में आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको कुछ व्हाइट कलर वाले अनारकली कुर्ते के बारे में बताने जा रहे हैं।

गर्मियों का मौसम सबसे ज्यादा परेशान करने वाला होता है। इसलिए इस मौसम में पहनने के लिए हम अक्सर सिंपल और लाइट फैब्रिक वाले कपड़े पहनना पसंद करते हैं। लेकिन प्रिंट या कलर के कारण हम इन कपड़ों को दोबारा पहनना पसंद नहीं करते हैं। अगर आप कुछ ऐसा ट्राई करना चाहते हैं, जिससे आपका लुक काफी अच्छा लगे। तो आप व्हाइट कलर वाले अनारकली कुर्ते ट्राई कर सकती हैं। ऐसे में आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको कुछ व्हाइट कलर वाले अनारकली कुर्ते के बारे में बताने जा रहे हैं।

चिकनकारी अनारकली कुर्ता

आप इस गर्मी में चिकनकारी अनारकली कुर्ती ट्राई कर सकती हैं। यह कुर्ती पहनने के बाद काफी अच्छी लगती है। हालांकि इस तरह की कुर्ती में आपको घेर थोड़ा सा कम मिलेगा। लेकिन इस कुर्ती में आपको पूरे में वर्क मिलेगा। इससे यह कुर्ती काफी अच्छी लगेगी। आप इस तरह की कुर्ती को प्लेन पैंट के साथ स्टाइल कर सकती हैं। वहीं आप प्रिंटेड पैंट के साथ भी यह कुर्ती कैरी कर सकती हैं। आप 300-800 रुपए में मार्केट से इस तरह की कुर्ती मिल जाएगी।

अंगरखा स्टाइल अनारकली कुर्ता

अगर आप अपने लुक को क्रिएटिव बनाना चाहती हैं, तो आप अंगरखा स्टाइल अनारकली कुर्ती वियर कर सकती हैं। इसमें आपको लॉन्ग से लेकर शॉर्ट कुर्ती के पैटर्न मिल जाएंगे। आप इसमें कॉन्ट्रास्ट कलर पैटर्न भी ले सकती हैं। इस तरह की कुर्ती के साथ आ व्हाइट बॉटम या फिर जींस स्टाइव कर सकती हैं। इससे आपके लुक में चार चांद लग जाएंगे। मार्केट में आपको 400-900 रुपए तक में इस तरह की कुर्ती मिल जाएगी।

लॉन्ग स्ट्रेट व्हाइट चिकनकारी कुर्ती

अगर आप ऑफिस या फिर बाहर घूमने जाने के लिए कैजुअल लुक क्रिएट करना चाहती हैं। तो आपको लॉन्ग स्ट्रेट व्हाइट चिकनकारी कुर्ती स्टाइल करना चाहिए। इस तरह की कुर्ती पहनने के बाद काफी अच्छी लगती हैं। वहीं आपको इस पूरी कुर्ती में चिकनकारी वर्क वाला डिजाइन मिलेगा। मार्केट में आपको 200-500 रुपए में आसानी से मिल जाएगी।

एमसीडी नेता प्रतिपक्ष अंकुश नारंग ने शालीमार बाग वार्ड का दौरा कर सफाई व्यवस्था का लिया जायजा

मुख्य संवाददाता/सुषमा रानी

नई दिल्ली। दिल्ली नगर निगम में आम आदमी पार्टी के नेता प्रतिपक्ष अंकुश नारंग ने शुक्रवार को शालीमार बाग विधानसभा स्थित वार्ड-55 का दौरा कर समस्याओं का जायजा लिया। अंकुश नारंग ने निगम के आयुर्वेद हॉस्पिटल, बस स्टॉप पार्क, एमसीडी स्कूल, गली नं.1 और शालीमार चौक हैदरपुर की साफ सफाई व्यवस्था देखी और स्थानीय लोगों के जरिए संज्ञान में आई समस्याओं का तत्काल समाधान करने के लिए एमसीडी के अधिकारियों को निर्देश दिए। इस दौरान वार्ड से ''आप'' के पार्षद जलज चौधरी और एमसीडी के अधिकारी भी मौजूद रहे।

दिल्ली नगर निगम में आम आदमी पार्टी के नेता प्रतिपक्ष अंकुश नारंग ने बताया कि शालीमार बाग वार्ड से ''आप'' के पार्षद जलज चौधरी के साथ उनके वार्ड का दौरा किया। इस दौरान निगम के एक आयुर्वेदिक अस्पताल का भी दौरा किया। यहां लोगों से बात कर उनकी समस्याएं जानी। लोग पार्क के घास लगवाना चाहते हैं, दीवार टूटी हुई है। रेलिंग लगवाना चाहते हैं। भाजपा बहुत बड़े-बड़े दावे करती है। शालीमार बाग वार्ड सीएम रेखा गुप्ता के निर्वाचन क्षेत्र शालीमार बाग़ में आता है, लेकिन यहां ढेरों समस्याएं हैं। साफ सफाई की व्यवस्था ठीक नहीं है। यहां और कई काम किए जा सकते हैं।

अंकुश नारंग ने कहा कि हैदरपुर में बाथरूम के अंदर पानी की सुविधा नहीं है। पानी की सुविधा देनी पड़ेगी। बाथरूम की साफ सफाई अच्छी नहीं है। इसे और अच्छी करने की जरूरत है। आम आदमी पार्टी के पार्षद सभी समस्याएं दूर करवाने का पूरा प्रयास कर रहे हैं। यह वार्ड शालीमार बाग में आता है और यहां से भाजपा की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता विधायक हैं। जबकि आम आदमी पार्टी का पार्षद है। इसलिए मुख्यमंत्री इस वार्ड के विकास को लेकर अनदेखी करती है। साथ ही, हमें नीचा भी दिखाने की कोशिश करती है।

उन्होंने जनता से कहा कि आम आदमी पार्टी के सभी पार्षद जमीन पर उतर कर काम कर रहे हैं। एमसीडी के जरिए सफाई समेत सारी व्यवस्थाओं को देख रहे हैं। बारिश में कहीं जल भराव न हो, इससे निपटने की व्यवस्था भी हमलोग देख रहे हैं। भाजपा का मेगा सफाई अभियान मात्र दिखावा था। कही पर भी मेगा सफाई अभियान नहीं चल रहा है। इस अभियान में भाजपा ने आप पार्षदों को हिस्सेदार नहीं बनाया। कुल 250 पार्षद है। वर्तमान में 238 पार्षद है। इसमें 113 आम आदमी पार्टी के पार्षद हैं, जबकि 8 कांग्रेस के पार्षद हैं। भाजपा ने इन 121 पार्षदों की सफाई अभियान में भागीदारी नहीं की। राजा इकबाल सिंह दिल्ली के महापौर हैं। उनको तय करना पड़ेगा कि वह दिल्ली के महापौर हैं या सिर्फ भाजपा के हैं। सीएम रेखा गुप्ता शालीमार बाग से विधायक हैं। उनको भी तय करना पड़ेगा कि वो सिर्फ भाजपा पार्षद वाले दो वार्डों की विधायक हैं या तीनों वार्ड से विधायक हैं। जब कोई पार्षद, विधायक, मुख्यमंत्री, मेयर बन जाता है तो उसे निष्पक्ष होकर अपने निर्वाचन क्षेत्र के लिए काम करना चाहिए। भेदभाव नहीं करना चाहिए।

निरीक्षण में ये खामियां सामने आई

दिल्ली नगर निगम की आयुर्वेदिक हॉस्पिटल पंचकर्म में साफ सफाई व ड्यूटी स्टाफ की कमी की समस्या सामने आई। यहा 60 से 80 पेशेंट रोज ट्रीटमेंट के लिए आते हैं। ट्रीटमेंट के लिए आए हुए पेशेंटो से भी बात की।

पार्क में लाइट नहीं जलती है और न ही समय पर साफ सफाई होती है, पार्क की तक उखड़ी पड़ी है।

एमसीडी स्कूल में चौकीदार कमी हैं स्कूल की प्रिंसिपल और स्थानीय लोगों ने स्कूल के बाहर की बाउंड्री को 12 फुट ऊंची करने की मांग की।

एकता गली नंबर 1 में साफ सफाई बहुत खराब है। और गलियों में कूड़े के अंबार लगे हुए हैं।

हैदरपुर शालीमार चौक पर टूटे पड़े टॉयलेट को फिर से शुरू करने के लिए लोगों ने आग्रह किया।

दिल्ली के बस चालक और कंडक्टरों की परेशानी हो सकती है जल्द दूर

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। दिल्ली परिवहन विभाग में कार्य कर रहे कांटेक्ट के कर्मचारियों ने दिल्ली के प्रदेश अध्यक्ष श्री वीरेंद्र सचदेवा जी से बेसिक+da को लेकर मुलाकात की, जिसमें उन्होंने सभी कर्मचारियों को आश्वासन दिया कि सोमवार 12/05/2025 दिल्ली के परिवहन मंत्री श्री पंकज कुमार सिंह को लेकर इस बारे में मीटिंग बुलाकर मुद्दे को सुलझाया जाएगा

दिल्ली में सरकार बनने से पहले श्री विजेंद्र गुप्ता जी ने सभी कर्मचारियों को पक्का करने का वादा किया, दिल्ली के सभी बस ड्राइवर और कंडक्टरों ने दिल्ली में भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनाने में पूरा सहयोग किया अब भारतीय जनता पार्टी भी इन कर्मचारियों को दिया हुआ वादा पूरा करें।

सुरक्षा व्यवस्था को लेकर पुलिस उत्तरी जिला उपायुक्त से मिले फेस्टा के सदस्य

मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली। दिल्ली 16 मई :तेलीवाड़ा से लेकर मिठाई पुल तक बढ़ती अपराधी घटनाओं व अन्य समस्याओं को लेकर फेडरेशन ऑफ सदर बाजार ट्रेड्स एसोसिएशन का प्रतिमंडल उत्तरी जिला उपायुक्त श्री राजा बांठिया जी से मुलाकात कर एक ज्ञापन सौपा जिसमें फेडरेशन के चेयरमैन परमजीत सिंह पम्मा, अध्यक्ष राकेश यादव, कार्यकारिणी अध्यक्ष चौधरी योगेंद्र सिंह, वरिष्ठ उपाध्यक्ष राजीव छाबड़ा, महासचिव राजेंद्र शर्मा सहित अनेक व्यापारी उपस्थित थे।

बैठक में व्यापारियों ने बताया तेलीवाड़ा चौक से मिठाई पुल तक आए दिन आपराधिक घटनाएं होती रहती है। जिसमें 5-6 लोगों का गैंग ग्रुप में आता है वह व्यापारियों व खरीदारों को टारगेट करता है। किसी का कैश छीन लेता है तो किसी का मोबाइल और कुछ कहने पर दुकानदारों को धमकी देते हैं और थाना बड़ा हिंदू राव पुलिस की गस्त ना के बराबर है उसे बढ़ाने की जरूरत है। सदर बाजार बाजार की सामाजिक व्यस्था पर सदर थाना बारा हिन्दू राव और लाहौरी गेट के थानाध्यक्षों की भूमिका गहन विचार विमर्श हुआ और पुल मिठाई महारानी अवंतिका बाई चौक का क्षेत्र केवल एक थाने निगरानी की किया जाए ।

परमजीत सिंह पम्मा व राकेश यादव ने बताया रोड़ों पर दलालों का भी अंतक है जो खरीदारों से धोखे घड़ी करते हैं। जिसको लेकर मार्केट में आए दिन इसकी शिकायत आती रहती है।

उपायुक्त राजा बांठिया जी व्यापारियों को आश्वासन दिया वह जो उनकी समस्या है उसका हल करेंगे व्यापारियों के जान माल की पूरी सुरक्षा की जाएगी। इसके लिए वह पुलिस फोर्स भी और बढ़ाएंगे और स्टाफ को भी ठीक तरीके से लगातार गस्त के निर्देश देंगे। जिससे कोई भी आपराधिक घटना ना हो सके।

सफल रक्तदान अभियान "ऑपरेशन सिंदूर" का सफदरजंग अस्पताल में हुआ आयोजन

स्वतंत्र सिंह भुल्लर नई दिल्ली

महिलाओं और बच्चों के कल्याण के लिए देवया सोसाइटी ने सफदरजंग अस्पताल के ब्लड बैंक के साथ साझेदारी में रक्तदान अभियान ₹ऑपरेशन सिंदूर₹ का सफलतापूर्वक संचालन किया, जिसमें उदार रक्तदाताओं से 85 यूनिट रक्त एकत्र किया गया। सफदरजंग अस्पताल में आयोजित इस पहल का उद्घाटन केंद्रीय स्वास्थ्य और परिवार कल्याण राज्य मंत्री और आयुष मंत्रालय के केंद्रीय राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री प्रतापराव जाधव ने VMMC और सफदरजंग अस्पताल की प्रिंसिपल डॉ. गीतिका खन्ना और देवया सोसाइटी की संस्थापक डॉ. मनीषा जोशी के साथ किया।

इस कार्यक्रम में अस्पताल के कर्मचारियों, सुरक्षा कर्मियों और समुदाय के सदस्यों ने

उत्साहपूर्वक भाग लिया, जो रक्त की आपूर्ति की कमी को दूर करने और जरूरतमंद मरीजों की मदद करने के उद्देश्य से इस नेक काम के लिए एक साथ आए।

सफदरजंग अस्पताल के चिकित्सा अधीक्षक डॉ. संदीप बंसल ने सभी रक्तदाताओं को प्रोत्साहित किया। सभी अतिरिक्त चिकित्सा अधीक्षकों ने अपना समर्थन दिखाने के लिए अभियान में भाग लिया। रक्त बैंक के विभागाध्यक्ष डॉ. मुकुल सिंह और यूनिट प्रभारी डॉ. अंजलि ने दान प्रक्रिया के सुचारू संचालन को सुनिश्चित करने और इसे व्यवस्थित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

डॉ. मनीषा जोशी ने कहा, ₹हम इस जीवनरक्षक पहल में योगदान देने के लिए आगे आए सभी रक्तदाताओं के बहुत आभारी हैं।₹ ₹प्रत्येक दान तीन लोगों की जान बचा सकता है, जिससे आज का संग्रह संभावित रूप से 250 से अधिक जरूरतमंद रोगियों के लिए फायदेमंद हो सकता है। हमारे रक्तदाताओं द्वारा प्रदर्शित की गई देने की भावना वास्तव में प्रेरणादायक है।"

अस्पताल प्रशासन ने देवया सोसाइटी के साथ साझेदारी के लिए अपनी प्रशंसा व्यक्त की और आपातकालीन मामलों, सर्जरी और विभिन्न चिकित्सा स्थितियों से पीड़ित रोगियों के लिए पर्याप्त आपूर्ति बनाए रखने के लिए नियमित रक्तदान अभियान के महत्व पर प्रकाश डाला।

दुष्यंत गौतम, कमलजीत सहरावत, जगदीश मुखी ने विभिन्न स्थानों पर निकाली गई तिरंगा यात्रा में भाग लिया

मुख्य संवाददाता/ सुषमा रानी

नई दिल्ली: दिल्ली भाजपा अध्यक्ष वीरेंद्र सचदेवा के निर्देश के अनुसार आज से दिल्ली के विभिन्न 14 जिलों के प्रमुख 14 स्थानों पर तिरंगा यात्रा निकालने की शुरुवात हुई।

आज दिल्ली के तीन संगठनात्मक जिलों पश्चिमी दिल्ली, दक्षिणी दिल्ली और शाहदरा में तिरंगा यात्रा निकाली गई।

पश्चिम दिल्ली में दिल्ली भाजपा की महामंत्री सांसद कमलजीत सहरावत के नेतृत्व में पूर्व राज्यपाल जगदीश मुखी, दिल्ली भाजपा के वरिष्ठ नेता राजीव बब्बर, जिलाध्यक्ष चंद्रपाल बख्शी के साथ सैकड़ों पार्टी नेता एवं कार्यकर्ता सम्मलित हुए।

भाजपा के राष्ट्रीय महामंत्री दुष्यंत गौतम ने भाजपा के अन्य पदाधिकारियों के साथ तिरंगा यात्रा में शामिल हुए। इस मौके पर जिला अध्यक्ष दीपक गाबा और क्षेत्रीय विधायक, पार्षद और पार्टी नेता भी उपस्थित थे।

दक्षिण दिल्ली जिले की तिरांगा यात्रा में जिलाध्यक्ष राजकुमार चौटाला के नेतृत्व में सैकड़ों ने ओखला में तिरंगा यात्रा निकाली।

दिल्ली भाजपा के पूर्व अध्यक्ष सतीश

उपाध्याय के नेतृत्व में आज दिल्ली इंजीनियर एसोसिएशन द्वारा आई.एन.ए. में तिरंगा यात्रा निकाली गई। तिरंगा यात्रा में सतीश उपाध्याय ने कहा कि देश अभी भूला नही है कि अरविंद केजरीवाल ने 2016 में सेना से पाकिस्तान पर सर्जिकल स्ट्राइक के सबूत मांग कर पाकिस्तान सरकार का मनोबल बढ़ाया था और आज फिर इन्ही अरविंद केजरीवाल की पार्टी के वरिष्ठ नेता रोज बयान देकर सरकार द्वारा सीजफायर को स्वीकार करने पर सवाल खड़े कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि एक बार देश के जवानों से उनके पराक्रम के सबूत मांगने पर दिल्लीवालों ने सत्ता से उखाड़ फेंका और अब इस तरह के बयानबाजी पर अब उन्हें विपक्ष में भी बैठने लायक नहीं छोड़ेंगे।

इस अवसर पर भाजपा के राष्ट्रीय महामंत्री दुष्यंत गौतम ने कहा कि पाकिस्तान द्वारा जिस कायराना हरकत को अंजाम दिया गया है, वह भारत नहीं बर्दाश्त करेगा और अभी तक भारतीय सेना द्वारा उसका जवाब दिया गया है, आगे भी भारत किसी भी आतंकी गतिविधि को बर्दाश्त नहीं करेगा। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में यह साफ संदेश है कि अब पाकिस्तान के किसी भी हरकत का जवाब उसी के तरीके से दिया जाएगा। इस मौके पर विधायक अनिल गोयल एवं संजय गोयल भी उपस्थित थे।

कमलजीत सहरावत ने कहा कि आज का भारत बदल चुका है। यह नया भारत शांति चाहता है, पर आतंक के समूल विनाश के लिए किसी भी सीमा तक जाने को तत्पर है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में देश ने स्पष्ट कर दिया है कि अब भारत किसी प्रकार के नुक्लियर धमकी को बर्दाश्त नहीं करेगा। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अपने बयान में साफ कहा है कि ₹टेरर और टॉक साथ नहीं चल सकते। टेरर और ट्रेड का पाखंड अब नहीं चलेगा। जब-जब खून बहेगा, पानी का रास्ता बंद होगा। ऑपरेशन सिन्दूर स्थगित है, पर समाप्त नहीं। पाकिस्तान से बात होगी तो अब सिर्फ पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर पर ही होगी या फिर आतंकवाद पर।

दिल्ली स्पोर्ट्स यूनिवर्सिटी द्वारा आयोजित सफल टैलेंट स्काउटिंग इवेंट ने पूरे भारत से छात्रों को आकर्षित किया

मुख्य संवाददाता

दिल्ली स्पोर्ट्स यूनिवर्सिटी ने 6 और 7 मई, 2025 को त्यागराज स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स में अपना वार्षिक टैलेंट स्काउटिंग इवेंट सफलतापूर्वक आयोजित किया। इस वर्ष के आयोजन में भारत भर के 10 से अधिक राज्यों से प्रभावशाली भागीदारी देखी गई, जो दिल्ली स्पोर्ट्स स्कूल की तेज़ी से बढ़ती मान्यता को दर्शाता है।

दो दिवसीय कार्यक्रम का उद्देश्य कक्षा 6वीं से 9वीं और 11वीं के छात्रों के लिए परीक्षण आयोजित करना था। पहले दिन बॉक्सिंग, तैराकी, भारोत्तोलन और कुश्ती के लिए लेवल 1 और लेवल 2 टेस्ट पूरा करने पर ध्यान केंद्रित किया गया, जबकि दूसरे दिन तीरंदाजी, शूटिंग, टेबल टेनिस और लॉन टेनिस के लिए टेस्ट शामिल थे। दोनों दिन एथलेटिक्स और बैडमिंटन के ट्रायल आयोजित किए गए, जिन्हें कक्षा-वार विभाजित किया गया - कक्षा 6, 7 और 11 के लिए पहला दिन और कक्षा 8 और 9 के लिए दूसरा दिन। युवा खेल प्रेमियों ने इन सभी विषयों में अपने कौशल का प्रदर्शन बड़े उत्साह के साथ किया।

प्रतिभागियों ने एक व्यापक मूल्यांकन प्रक्रिया से गुज़रा जिसमें उन्नत उपकरणों और तकनीकों का उपयोग करके आयोजित 11 मोटर गुणवत्ता परीक्षण शामिल थे, साथ ही खेल-विशिष्ट मूल्यांकन भी किए गए। इस कठोर दृष्टिकोण का उद्देश्य भारत में खेलों के मानक को बढ़ाने के दिल्ली स्पोर्ट्स यूनिवर्सिटी के मिशन के अनुरूप उभरती हुई खेल प्रतिभाओं की पहचान करना और उनका पोषण करना था।

सकारात्मक माहौल को और बढ़ाते हुए, कई छात्रों के साथ उनके माता-पिता या अभिभावक भी थे, जिन्होंने ट्रायल देखा और प्रतिभागियों के लिए किए गए सुचारू संचालन और विचारशील व्यवस्थाओं की सराहना की। सुव्यवस्थित प्रक्रिया और एथलीट-अनुकूल वातावरण की सभी उपस्थित लोगों ने व्यापक रूप से प्रशंसा की।

यह कार्यक्रम युवा एथलीटों के लिए अपनी क्षमता दिखाने के लिए एक मंच और प्रतिष्ठित दिल्ली स्पोर्ट्स स्कूल में प्रवेश पाने का मार्ग दोनों के रूप में कार्य करता है। स्कूल एक एकीकृत कार्यक्रम प्रदान करता है जिसमें गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, आवासीय सुविधाएँ और विश्व स्तरीय खेल अवसंरचना तक पहुँच शामिल है - इन सभी का उद्देश्य भारत में खेल आइकन की अगली पीढ़ी का पोषण करना है।

दिल्ली स्पोर्ट्स यूनिवर्सिटी युवा एथलीटों को समर्थन और सशक्त बनाने के लिए प्रतिबद्ध है, यह सुनिश्चित करते हुए कि उन्हें अपने चुने हुए खेलों में उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए आवश्यक मार्गदर्शन और संसाधन प्राप्त हों।

श्री गुरु रविदास विश्व महापीठ ने की दिल्ली की मुख्यमंत्री से मुलाकात

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। संत शिरोमणि श्री गुरु रविदास विश्व महापीठ के अंतर्राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय महामंत्री श्री दुष्यंत कुमार गौतम के नेतृत्व में पीठ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सुरजीत कुमार ; राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री धर्मवीर ; राष्ट्रीय प्रवक्ता श्री राजवीर सिंह ; दिल्ली प्रांत के अध्यक्ष श्री मनोज कुमार आजाद ; संगठन महामंत्री प्रो. मनोज कुमार कैन;महामंत्री श्रीमती सुनीता पॉल उपाध्यक्ष श्री सोहनबीर कैन ,निर्मल कुमार कैम, श्री अनिल कुमार , श्री रामस्वरूप जाटव; मंत्री श्रीमती सुमन चौधरी ; श्री मेहर सिंह छालिया तथा श्री गुरु रविदास विश्रामधाम मंदिर देव नगर, करोल बाग के प्रधान श्री गोपाल कृष्ण और उनके साथी श्री शिवचरण पीपल , श्री दिनेश कुमार, श्रीमती वीणा जाजोरिया ने दिल्ली की मुख्यमंत्री श्रीमती रेखा

गुप्ता जी और दिल्ली सरकार के कैबिनेट मंत्री श्री रविन्द्र इंद्रराज एवं श्री मनिंदर सिंह सिरसा जी से केंद्रीय सचिवालय, दिल्ली में एक शिष्टाचार भेंट की ।

पीठ की ओर से मुख्यमंत्री जी को एक निवेदन मांग पत्र दिया गया । इस पत्र में निम्नलिखित चार प्रमुख मांगे रखी गई :-

1 :-जहांगीरपुरी मेट्रो स्टेशन का नाम श्री गुरु रविदास पुरी मेट्रो स्टेशन रखा जाए । क्योंकि जहांगीर पुरी का नाम श्री गुरु रविदास पुरी है ।

2 :-संत शिरोमणि श्री गुरु रविदास जी के नाम से दिल्ली में किसी स्कूल, कॉलेज या सरकारी संस्थान का नाम श्री गुरु रविदास जी के नाम पर होना चाहिए।

3 :-मादीपुर में निर्माणाधीन अस्पताल का नाम श्री गुरु रविदास जी के नाम पर रखा जाए ।

4 :-रोहिणी मेट्रो स्टेशन वेस्ट का नाम बाबा साहब डॉ भीमराव अंबेडकर जी के नाम पर होना चाहिए ।

मुख्यमंत्री जी ने सभी बिंदुओं पर चर्चा करते हुए आश्वासन दिया कि भविष्य में इन विषयों पर अवश्य विचार किया जाएगा । श्री गुरु रविदास विश्व महापीठ की ओर से मुख्यमंत्री और मंत्रियों का आभार व्यक्त किया गया ।

गुरुग्राम वासियों के लिए खुशखबरी, आखिर 10 साल के इंतजार के बाद मेट्रो रूट के पहले चरण का टेंडर

परिवहन विशेष न्यूज

गुरुग्राम में मेट्रो विस्तार के पहले चरण का टेंडर 10 साल के इंतजार के बाद खुला है। एलएंडटी समेत आठ कंपनियों ने इसमें भाग लिया है। मुख्यमंत्री की अध्यक्षता में एक कंपनी का चयन होगा। मिलेनियम सिटी मेट्रो स्टेशन से सेक्टर-101 तक कॉरिडोर बनेगा जिस पर 14 मेट्रो स्टेशन होंगे।

गुरुग्राम : लगभग 10 साल के इंतजार के बाद पुराने गुरुग्राम में मेट्रो विस्तार को लेकर टेंडर खुला है। यह टेंडर प्रथम चरण के दौरान किए जाने वाले विस्तार को लेकर खोला गया है।

एलएंडटी सहित आठ कंपनियों ने टेंडर में भाग लिया है। इनमें से किसी एक कंपनी का चयन मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी अध्यक्षता में आयोजित होने वाली बैठक में किया जाएगा।

चयन के बाद वर्क अलॉट किया जाएगा। फिर कंपनी काम करने की तैयारी शुरू करेगी यानी जुलाई से जमीनी स्तर पर काम शुरू होगा जबकि प्रोजेक्ट के लिए बजट की भी व्यवस्था एक साल पहले ही हो चुकी है।

गुरुग्राम मेट्रो रेल लिमिटेड ने तीन चरण में विस्तार की योजना बनाई

प्रोजेक्ट बेहतर तरीके से तैयार हो, इसके लिए गुरुग्राम मेट्रो रेल लिमिटेड ने तीन चरण में विस्तार की योजना बनाई है। प्रथम चरण के दौरान मिलेनियम सिटी मेट्रो स्टेशन से लेकर सेक्टर-9 के साथ ही सेक्टर-101 तक का कॉरिडोर विकसित किया जाएगा।

कॉरिडोर पर 14 स्टेशन होंगे, 1286 करोड़ रुपये होंगे खर्च

कॉरिडोर पर 14 स्टेशन होंगे। कॉरिडोर के ऊपर 1286 करोड़ रुपये खर्च होने का अनुमान है। बृहस्पतिवार को टेंडर खुलने के बाद अब भाग लेने वाली कंपनियों में एक का चुनाव करने की प्रक्रिया शुरू होगी।

कंपनी के चयन के बाद वर्क अलॉट करने की प्रक्रिया शुरू की जाएगी। पूरी प्रक्रिया में जून निकल जाएगा। ऐसे में जुलाई से पहले काम शुरू होना संभव नहीं दिख रहा है।

कई महीने पहले एक मई से जमीनी स्तर पर काम शुरू किए जाने का लक्ष्य रखा गया था। मेट्रो के विस्तार का शिलान्यास भी एक साल पहले हो चुका है। पूरी प्रक्रिया कछुआ गति से चलने से लोग निराश हो चुके हैं।

मिलेनियम सिटी सेंटर मेट्रो स्टेशन से साइबर हब तक होना है विस्तार

नए कॉरिडोर पर सबसे पहला स्टेशन मिलेनियम सिटी सेंटर गुरुग्राम मेट्रो स्टेशन से आगे सेक्टर-45 होगा।

इसके बाद साइबर पार्क, सेक्टर-47, सुभाष चौक, सेक्टर-48, सेक्टर-72ए, हीरो होंडा चौक, उद्योग विहार फेज-छह, सेक्टर-10, सेक्टर-37, बसई गांव, सेक्टर-9, सेक्टर-सात, सेक्टर-चार, सेक्टर-पांच, अशोक विहार, सेक्टर-तीन, बजघेड़ा रोड, पालम विहार एक्सटेंशन, पालम विहार, सेक्टर-23ए, सेक्टर-22, उद्योग विहार फेज-चार, उद्योग विहार फेज-पांच एवं साइबर हब के नजदीक स्टेशन होगा।

28.5 किलोमीटर लंबे इस कारिडोर पर 27 एलिवेटेड स्टेशन बनाए जाएंगे। कॉरिडोर के निर्माण पर लगभग 5,452.72 करोड़ रुपये खर्च होने का अनुमान है।

गाजियाबाद में घर और व्यावसायिक भूखंड खरीदने का सुनहरा मौका, जीडीए इस तारीख को करेगा नीलामी

परिवहन विशेष न्यूज

गाजियाबाद विकास प्राधिकरण 28 मई को हिंदी भवन में आवासीय और व्यावसायिक भूखंडों की नीलामी करेगा। इंदिरापुरम वैशाली समेत अन्य योजनाओं में स्थित विभिन्न आकार के भूखंड नीलामी में शामिल हैं। इच्छुक खरीदार 26 मई तक जीडीए से ब्राशर प्राप्त कर आवेदन जमा कर सकते हैं। सफल आवेदकों को 28 मई को नीलामी में भाग लेने का अवसर मिलेगा। जीडीए आवासीय और व्यावसायिक भूखंड़ों की 28 मई को करेगा नीलामी।

गाजियाबाद। जीडीए आगामी 28 मई को आवासीय और व्यवसायिक निर्माण भूखंडों की हिंदी भवन में नीलामी करेगा। प्राधिकरण के विभिन्न योजनाओं में आवासीय, व्यवसायिक और औद्योगिक भूखंड रिक्त हैं। दिल्ली और नोएडा से सटे क्षेत्र में रिक्त भूखंड को लेकर जीडीए गंभीर है।

प्राधिकरण की ओर से इस बार की नीलामी में इंदिरापुरम में 27 व्यवसायिक, 15 निर्मित आवासीय भवन, 21 दुकानों की संपत्ति शामिल की है। इंद्रप्रस्थ योजना में 22 व्यवसायिक और नौ दुकानों के भूखंड को नीलामी प्रक्रिया में शामिल किया गया है।

प्राधिरण की ओर से इस बार वैशाली, कोयल एन्क्लेव, कर्पूरीपुरम और पटेलनगर में भी 30 से अधिक आवासीय, व्यवसायिक व दुकानों के भूखंड को नीलामी के लिए रखा जाएगा। अन्य योजनाओं में भी रिक्त भूखंडों को इस प्रक्रिया में रखने की तैयारी है।

संपत्तियों से संबंधित जानकारी और ब्राशर को भी जीडीए ने अपनी वेबसाइट पर अपलोड किया है। ताकि संपत्ति खरीदने के इच्छुक पसंदीदा भूखंड का चयन कर नीलामी में बोली लगा सकें। जीडीए अपर सचिव प्रदीप कुमार सिंह ने बताया कि इसके लिए 26 मई तक बैंक जाकर ब्राशर को नीलामी प्रक्रिया में शामिल होने वाले इच्छुक खरीदार ले सकते हैं।

इसी दिन तक प्राधिकरण में फार्म भरकर जमा करना होगा, जो आवेदक 26 मई तक फार्म प्राधिकरण में जमा कराएगा उसे नीलामी में प्रतिभाग करने का मौका मिलेगा। इस प्रक्रिया के बाद जमा फार्म की जांच की जाएगी। इसके बाद उन्हें 28 मई को नीलामी में शामिल किया जाएगा।

इन्दौर में भव्य तिरंगा यात्रा में मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री मोहन यादव भी शामिल हुए

इन्दौर में निकली गई भव्य तिरंगा यात्रा।

'सर्व प्रथम राष्ट्र की वंदना करने की प्रेरणा देने वाले , मातृभूमि के रखवालों के प्रति हम सभी भारतवासियों के विचारों में राष्ट्र प्रेम होना समय की आवश्यकता है। तिरंगा हम सभी के लिए स्वाभिमान है।यह भारत का सम्मान है। हाल ही में पहलगाम पर हुएं आंतकी हमलें के बाद दुश्मन पाकिस्तान को जोरदार ज़बाब देने वाले आपरेशन सिंदुर से शोर्य का शंखनाद करने वाले तीनों सेना के यह सभी बहादुरी की शान में हम यूं ही तिरंगा हाथों में थम कर सेना का सम्मान करें।

इन्दौर में राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए नागरिक अभियान समिति द्वारा भव्य तिरंगा यात्रा निकाली गई। इस यात्रा में प्रदेश के यशस्वी मुख्यमंत्री मोहन यादव जी भी शामिल हुएं।

कानपुर में बाइक चलाने की जिद ने ली युवती की जान ,नहर में गिरे पति को लोगों ने बचाया

सुनील बाजपेई

कानपुर। बाइक चलाने की जितने एक युवती की जान ले ली। वह कन्नौज से अपने पति के साथ मोटर साइकिल से लौट रही थी। इसी दौरान उसने पद से मोटरसाइकिल चलाने की जीत की पत्नी उसकी बात मान ली जिसके बाद बाइक अनियंत्रित हो गई और वह पद के साथ नहर में जा गिरी। स्थानीय लोगों ने तुरंत पति को बचा लिया। पत्नी को एक घंटे की खोज के बाद गोताखोरों ने बाहर निकाला और गंभीर हालत में उपचार के लिए बिल्हौर सीएचसी भेजा गया। जहां डॉक्टरों ने जांच के बाद महिला को मृत घोषित कर दिया।

पुलिस से प्राप्त जानकारी के मुताबिक यह

घटना बिल्हौर के ककवन में हुई। घटना के समय बछना गांव के आसिफ अपनी पत्नी सोनम को ससुराल से लेकर लौट रहा था। सोनम ने बाइक चलाने की इच्छा जताई। पति ने उसकी बात मान ली। इसी दौरान मकनपुर बिषधन मार्ग पर खरपतपुर झाल की तरफ नहर पट्टी पर बाइक बेकाबू हो गई और तेज रफ्तार बाइक नहर में जा गिरी। सूचना पर मौके पर पहुंची पुलिस ने लाश को पोस्टमार्टम के लिए भिजवाया है। वहीं घटना से परिवार में कोहराम भी मचा है।

राम चहिए।

' मोती की माला में ढूंढ रहा में अपने राम को
कहाँ मिलोगे मेरे प्रभु राम ?
जहां राम नहीं, वहाँ कोई काम नहीं,
हमें तो हमारे राम चहिए।

बिखरी हुई इस माला में कब आओगे ?
कब बैर शबरी के खाओगे मेरे राम ?
तुम्हारे बिना कुछ भी नहीं इस दुनिया में मेरे राम,
हमें तो हमारे राम चहिए।

मैं हनुमान, तुम मेरे प्रभु श्रीराम,
मैंने तो अपने हृदय में तुझे बसा लिया है
देखो मैंने यहाँ राम दरबार लगा लिया है,
क्योंकि हमें तो हमारे राम चहिए।

आपने तो पत्थर बनी अहिल्या को तार दिया,
आप खैवनहार हो तभी तो केवट को भवसागर से पार लगाया
विभीषण की भक्ति ने उसका भाग्य चमकाया।
और रावण के घमंड को चूर-चूर कर मार गिराया,
तभी तो हमें राम चहिए॥

(हरिहर सिंह चौहान)

ऑपरेशन सिंदूर से बदली नीतियों का वैश्विक संकेत

ऑपरेशन सिंदूर के तहत चली महज चार दिनों की कार्रवाई के बाद संघर्ष विराम होने को लेकर सोशल मीडिया पर हंगामा है। बड़े वर्ग का मानना है कि पाकिस्तानी उकसावे के बाद जारी भारतीय कार्रवाई से पाकिस्तान की गर्दन भारतीय पैरों के नीचे आ गई थी।

बीती छह मई की देर रात को पाकिस्तान स्थित आतंकी ठिकानों पर गरजती मिसाइलों ने दुनिया को कई संदेश दिए हैं। भारतीय कार्रवाई का पहला संदेश यह है कि अब ना सिर्फ भारत, बल्कि उसकी विदेश नीति भी बदल चुकी है। अब अगर भारत का बेगुनाह खून बहेगा तो खून बहाने वाले नापाक हाथों को भारत कहीं से भी ढूंढ़ निकालेगा और उसकी कब्र खोदने के लिए कोई कसर नहीं छोड़ेगा। पाकिस्तानी हमले के सफल प्रतिकार ने स्वदेशी हथियार तकनीक की खुद-ब-खुद ब्रांडिंग हो गई। पहलगाम के खिलाफ हुई कार्रवाई के बाद भारतीय राजनीति और राजनय को देखने का दुनिया का नजरिया बदलना तय है।

ऑपरेशन सिंदूर के तहत चली महज चार दिनों की कार्रवाई के बाद संघर्ष विराम होने को लेकर सोशल मीडिया पर हंगामा है। बड़े वर्ग का मानना है कि पाकिस्तानी उकसावे के बाद जारी भारतीय कार्रवाई से पाकिस्तान की गर्दन भारतीय पैरों के नीचे आ गई थी। लिहाजा जरूरी था कि उसकी कमर तोड़ दी जाए। भारत के एक बड़े वर्ग को उम्मीद थी कि मौजूदा कार्रवाई के जरिए पाकिस्तान के कब्जे वाला कश्मीर भी भारत का हिस्सा होगा। बहुत लोगों तो लगता था कि अगर ऑपरेशन सिंदूर जारी रहता तो बलूचिस्तान के लिए पाकिस्तान से अलग होने की राह आसान हो जाती। इस लिहाज देखें तो भारत का लोकमानस पाकिस्तान के खिलाफ कार्रवाई जारी रखने के पक्ष में था या कह सकते हैं कि अब भी है। लेकिन ध्यान रखना होगा कि युद्ध कभी-भी जनमत के दबाव में लड़े जाते। आधुनिक दौर में जब लड़ाई और हथियारों में तकनीक की पहुंच और पैठ बढ़ी है, सिर्फ जनमत के दबाव में युद्ध लड़ना ताकतवर से ताकतवर देश के लिए संभव नहीं। इस बीच संघर्ष विराम पर राष्ट्रपति ट्रंप के उतावले दावों ने संघर्ष विराम की हकीकत की जिज्ञासा बढ़ा दी है। लोग यह जानने के लिए उतावले हैं कि संघर्ष विराम की असल वजह आखिर क्या है? वैसे ऐसी संवेदनशील जानकारियां शायद ही कभी बाहर आ पाती हैं। इसलिए संघर्ष विराम के पीछे की असलियत को आने वाला इतिहास ही जान पाएगा।

जिस तरह पाकिस्तान के एयरबेस समेत तमाम सैनिक ठिकानों को भारतीय सेना ने निशाना बनाया है, उससे बिलबिलाकर वह अमेरिका की शरण में पहुंचा और युद्ध विराम कराने के लिए गुहार लगाने लगा। यह जानकारी कुछ अमेरिकी अखबारों के पन्नों पर आ चुकी है। बहरहाल ऑपरेशन सिंदूर ने संदेश दिया है कि अब भारत रणनीति के तहत जवाब नहीं देगा, बल्कि अपने नागरिकों पर हमले, संप्रभुता और अखंडता पर चोट की हालत में वह निर्णायक कार्रवाई करेगा। इस ऑपरेशन ने एक लक्ष्मण रेखा खींच दी है, जिसे नजरंदाज करना पाकिस्तान के लिए अब संभव नहीं होगा। उसे अब पता चल गया है कि राजनीति और सेना पोषित आतंकवाद और आतंक की नीति को सीधा और करारा जवाब मिलेगा।

भारत पिछले करीब साढ़े चार दशक से आतंकवाद को झेल रहा है। पाकिस्तान पहले पंजाब को आतंकवादी आग से झुलसाता रहा तो बाद के दिनों में जम्मू-कश्मीर में खून बहाता रहा। पाक परस्त आतंकी अगर भारतीय संसद, वाराणसी, जयपुर, मुंबई आदि जगहों पर बेगुनाह खून बहाने में कामयाब रहे तो इसकी बड़ी वजह रही पाकिस्तान की आतंकवाद केंद्रित नीति। ऑपरेशन सिंदूर के जरिए भारत ने संदेश दिया है कि अब यह नीति नहीं चलेगी। इस बार आतंकवादियों और उनके सरपरस्तों को जिस तरह भारत ने सफल निशाना बनाया, उसके बाद अब आतंकी कार्रवाई करने से पहले सौ बार सोचने को मजबूर होंगे। अब उन्हें सोचना होगा कि आतंक फैलाकर वे दूसरे देश की सीमा में जाकर चैन से नहीं रह पाएंगे। भारत की सेना उन्हें उनके घर में ही मारेगी।

ऑपरेशन सिंदूर पर संघर्ष विराम के बाद प्रधानमंत्री मोदी ने राष्ट्र के नाम संबोधन में दो-तीन बड़ी बातें कहीं। पहला यह कि खून और पानी साथ नहीं बहेगा। यानी सिंधु जल समझौता स्थगित ही रहेगा। उन्होंने यह भी कहा कि टेरर यानी आतंक और ट्रेड यानी कारोबार एक साथ नहीं चलेगा। यानी आतंक फैलाने वाले देशों के साथ भारत ना तो कारोबार करेगा और न ही उन्हें कोई विशेष दर्जा देगा। सवाल यह है कि भारत की इस बदली नीति की वजह क्या है? भारत की इस बदली नीति की वजह है, उसकी बढ़ती आर्थिक ताकत। अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष के लिहाज से भारत दुनिया की चौथी बड़ी अर्थव्यवस्था बनने जा रहा है। जल्द ही जापान की अर्थव्यवस्था को वह पीछे छोड़ देगा। भारत की स्वदेशी हथियार तकनीक, चाहे आकाश मिसाइल हो या रूस के सहयोग से विकसित ब्रह्मोस, उन्होंने अपनी अचूक मारक क्षमता दिखाई है। एक तरफ देश आर्थिक ताकत बढ़ाता जा रहा है तो दूसरी तरफ सैनिक ताकत भी बढ़ रही है। शांति के लिए मजबूत आर्थिक और सैनिक ताकत जरूरी होती है। कहना न होगा कि आर्थिक और सामरिक ताकत की वजह से भारत अपनी नीति बदलता हुआ दिख रहा है। भारत की अब तक की घोषित नीति रही है कि वह किसी दूसरे देश के मामले में न हस्तक्षेप करेगा और न ही किसी दूसरे देश का हस्तक्षेप मंजूर करेगा। ऑपरेशन सिंदूर इस नीति में बदलाव का वाहक बनकर आया है। अब तक भारत आतंक के खिलाफ विदेशी धरती पर कार्रवाई के लिए विदेशी ताकतों पर निर्भरत रहता है। ऑपरेशन सिंदूर के जरिए भारत ने दिखाया है कि अब वह अपनी जनता की रक्षा के लिए किसी की इजाजत का इंतजार नहीं करेगा। इस ऑपरेशन के जरिए भारत ने दुनिया को संदेश दिया है कि अब आतंकी और उसके मास्टरमाइंड कहीं नहीं छिप सकते। भारत उन्हें खोज निकालेगा और उन्हें उनके किए की सजा के तहत अंजाम पर पहुंचाएगा। महिलाओं के माथे का सिंदूर मिटाने वाले आतंकियों को मिटाने के लिए चले ऑपरेशन सिंदूर ने यह भी दिखाया है कि अगर पाकिस्तान आतंकी कार्रवाई के खिलाफ जवाबी हमला करेगा तो उस ना सिर्फ हमला माना जाएगा, बल्कि उसे करारा जवाब भी दिया जाएगा।

आजादी के बाद से ही भारत और पाकिस्तान के रिश्तों के बीच कश्मीर बड़ा मुद्दा रहा है। पाकिस्तान हर संभव मंचों, अंतरराष्ट्रीय बिरादरी आदि के सामने कश्मीर राग अलापता रहा है और इसके जरिए जरूरी सहयोग और संसाधन भी हासिल करता रहा है। इस लिहाज से कह सकते हैं कि अब तक भारत-पाक के बीच कश्मीर का नैरेटिव हावी रहा है, लेकिन अब हालात बदल गए हैं। अब भारत-पाक के बीच कश्मीर की बजाय आतंक बड़ा नैरेटिव बनकर उभरा है। राष्ट्र के नाम अपने संबोधन में प्रधानमंत्री का यह कहना कि अब पाकिस्तान से सिर्फ आतंक और पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर पर बात होगी, भारत की इसी बदली नीति का स्पष्ट संकेत है।

बालाकोट एयर स्ट्राइक और सर्जिकल स्ट्राइक के दौरान भी भारत ने सीमित कार्रवाई की और संयम का परिचय दिया। ये कार्रवाइयां पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर में ही हुईं। चूंकि भारत का समूचे कश्मीर पर दावा है, लिहाजा इन कार्रवाइयों में यह भी संकेत रहा कि भारत अपनी ही भूमि पर कार्रवाई कर रहा है। लेकिन ऑपरेशन सिंदूर से भारत ने साफ संकेत दिया है कि अब वह आतंक के खिलाफ सिर्फ पाक अधिकृत कश्मीर ही नहीं, समूचे पाकिस्तान में बिना जमीनी तौर पर घुसे ही जोरदार और निर्णायक कार्रवाई कर सकता है।

साफ है कि ऑपरेशन सिंदूर के जरिए भारत ने जहां आक्राकम विदेश नीति का मुजाहिरा किया है, वहीं उसने आतंक के खिलाफ अपने निर्णायक संकल्प और नीति की घोषणा की है। इसके साथ ही स्वदेशी हथियार तकनीक की हुई वैश्विक ब्रांडिंग एक तरह से बोनस कही जा सकती है। इससे जहां स्वदेशी हथियार तकनीक का बाजार बढ़ेगा, वहीं आतंक को लेकर भारत की बदली नीति से पड़ोसी देशों को सचेत रहना होगा।

– उमेश चतुर्वेदी

हुंडई भारत में लॉन्च करेगी 26 कारें; नई वेन्यू, क्रेटा और हाइब्रिड गाड़ियां होंगी शामिल

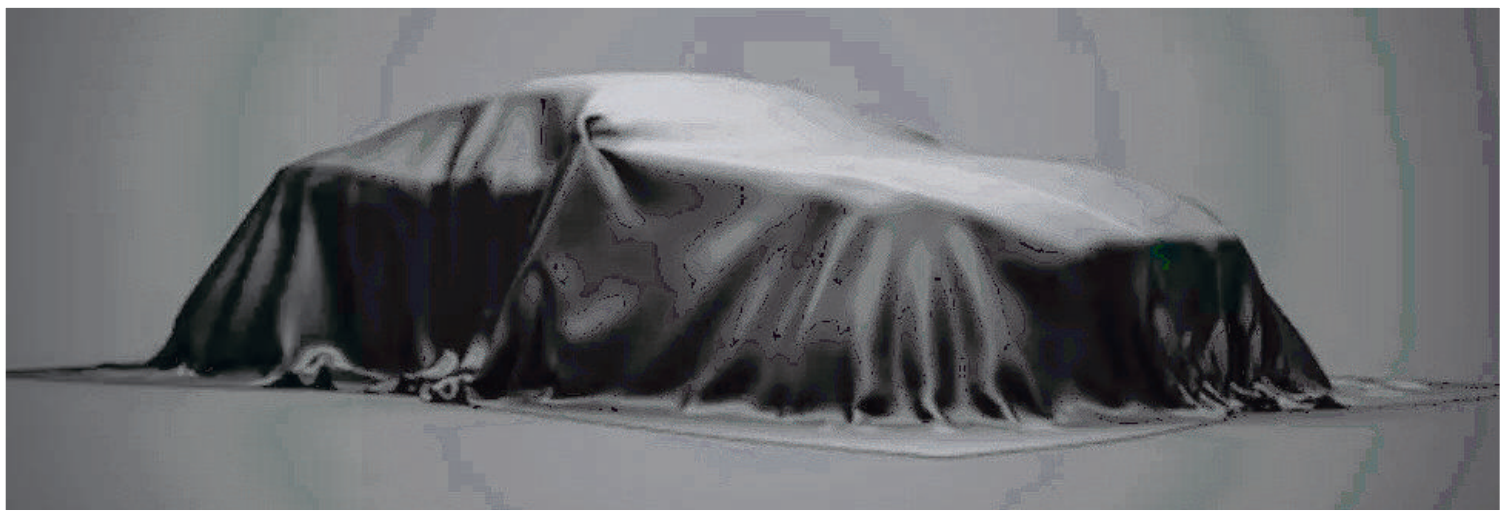

परिवहन विशेष न्यूज

आगामी हुंडई कारें हुंडई इंडिया 2030 तक भारतीय बाजार में अपनी 26 गाड़ियां लॉन्च करने की घोषणा की है। इसमें 20 ICE गाड़ियां और 6 इलेक्ट्रिक कार रहने वाली है। यह सभी नए मॉडल पूर्ण मॉडल परिवर्तन और इसके वर्तमान पोर्टफोलियो के लिए उत्पाद संवर्द्धन शामिल हैं।स फीचर्स है। इन गाड़ियों में नई जनरेशन Venue नई क्रेटा नई हाइब्रिड एसयूवी गाड़ियां शामिल रहने वाली है।

नई दिल्ली। पिछले दो वर्षों से भारतीय बाजार में अपनी गिरती हिस्सेदारी को बेहद गंभीरता से लेते हुए देश की प्रमुख कार कंपनी हुंडई मोटर इंडिया ने 26 नये कारों को लांच करने का एलान किया है। इनमें से ज्यादातर मॉडल बिल्कुल नई होंगी, जबकि कुछ मौजूदा प्रख्यात मॉडलों का उन्नत वर्जन होगा।

20 मॉडल ICE के होंगे

हुंडई मोटर इंडिया (एचएमआइ) के एमडी उनसू किम ने कहा है कि, "सारे मॉडल वर्ष 2030 तक लांच किये जाएंगे। इनमें से 20 मॉडल ICE (इंटरनल कम्बंशन ईंजन) पारंपरिक पेट्रोल या डीजल चालित होंगे, जबकि शेष छह इलेक्ट्रिक वाहन होंगे। लांच होने वाले कुछ वाहनों में बिल्लुक नई किस्म के ईंजन होंगे, जिनको विकसित किया जा रहा है। कंपनी के एमडी किम का कहना है कि भारतीय बाजार के लिए तैयार किये जा रहे प्रोडक्ट्स में एसयूवी ज्यादा होंगे क्योंकि भारत में बेची जाने वाली हर तीन कारों मे दो एसयूवी हैं।

हिस्सेदारी पिछले 12 वर्षों के न्यूतनम स्तर पर

शेयर बाजार में सूचीबद्ध एचएमआइ की तरफ से यह घोषणा तब हुई है जब भारतीय बाजार में उसकी हिस्सेदारी पिछले 12 वर्षों के न्यूतनम स्तर पर पहुंचने की खबर आई है। बताया जा रहा है कि दक्षिण कोरियाई मुख्यालय से एक टीम भी भारत भेजी गई है, ताकि गिरते बाजार हिस्सेदारी को थामने की दीर्घकालिक रणनीति बनाई जा सके। वित्त वर्ष 2025 में हुंडई की बाजार हिस्सेदारी 14 फीसद के करीब आ गई है, जबकि चार वर्ष पहले यह लगातार 17-18.5 फीसदी के बीच बनी हुई थी। अप्रैल, 2025 में यह घट कर 13 फीसद से भी नीचे आ गई है, जिसकी वजह से कभी भारतीय बाजार में दूसरे नंबर की यह कंपनी अब मारुति सुजुकी, महिंद्रा एंड महिंद्रा व टाटा मोटर्स के बाद चौथे स्थान पर आ गई है।

बिक्री में पहले नंबर हुंडई क्रेटा

पिछले दो महीने से हुंडई क्रेटा बिक्री के मामले में पहले नंबर पर बनी हुई है। यह मार्च और अप्रैल 2025 में भारत की सबसे ज्यादा बिकने वाली कार बनी। इसकी बिक्री के पीछे का कारण इसमें मिलने वाले प्रीमियम इंटीरियर और एडवांस फीचर्स है।

नई जीप कम्पास ग्लोबल लेवल पर पेश, साल 2025 के आखिरी से शुरू होगा

परिवहन विशेष न्यूज

नई जनरेशन जीप कम्पास को ग्लोबल लेवल पर पेश कर दिया गया है। नई कंपास पहले से ज्यादा शानदार और मजबूत दिखाई दे रही है। इसमें चौकोर शेप मस्कुलर व्हील आर्च और स्लिम LED लाइट्स को पहले से बेहतर दिया गया है। वहीं इसके आइकॉनिक सेवेन-स्लॉट ग्रिल को नया मॉडर्न लुक दिया गया है जो इलेक्ट्रिक मॉडल में काफी हद तक बंद है।

नई दिल्ली। ऑटोमेकर जीप ने नई जनरेशन Jeep Compass को ग्लोबल लेवल पर पेश कर दिया है। कंपनी ने नई जीप कंपास का खुलासा इटैलियन फुटबॉलर जुवेंटस एफसी के साथ किया है। आइए जानते हैं कि नई Jeep Compass का डिजाइन कैसा है और इसमें क्या बेहतरीन फीचर्स देखने के लिए मिलेंगे?

New Jeep Compass का डिजाइन

इसे पहले से काफी बेहतरीन डिजाइन दिया गया है। यह पहले से ज्यादा शानदार और अट्रैक्टिव दिखाई देती है। यह पहले से ज्यादा मजबूत और मॉडर्न दिखती है। इसमें चौकोर शेप, मस्कुलर व्हील आर्च, और स्लिम LED लाइट्स दी गई है। इसके आइकॉनिक सेवेन-स्लॉट ग्रिल को नया मॉडर्न लुक दिया गया है, जो इलेक्ट्रिक मॉडल में काफी हद तक बंद है। इसे लाइन ग्रीम कलर और ब्लैक रूफ के साथ लेकर आया गया है। इसमें 20-इंच के बड़े अलॉय व्हील्स दिए गए हैं। नई कंपास को STLA मीडियम प्लेटफॉर्म पर बनाया गया है, जो इसे पहले से ज्यादा मजबूत और तकनीक से लैस कर देती है।

इंजन और पावरट्रेन ऑप्शन

New Jeep Compass को तीन पावरट्रेन के साथ लेकर आया गया है। इसमें 1.2-लीटर माइल्ड-हाइब्रिड पेट्रोल इंजन दिया गया है, जो 145 की पावर जनरेट करेगा। इसका 1.6-लीटर प्लग-इन हाइब्रिड इंजन 195 hp की पावर देगा। इसे पूरी तरह से इलेक्ट्रिक मॉडल में भी लॉन्च किया जाएगा, जिसमें 97 kWh तक की बैटरी मिलेगी, जो सिंगल चार्ज में 700 किमी तक की ड्राइविंग रेंज देगी।

कब होगी लॉन्च?

New Jeep Compass का प्रोडक्शन साल 2025 के अंत से इटली में शुरू होगी। इसका प्रोडक्शन पूरा होने के बाद इसे सबसे पहले यूरोप में बिक्री के लिए लॉन्च किया जाएगा। भारतीय बाजार में इसे कब लॉन्च किया जाएगा, अभी तक कंपनी की तरफ से पुष्टि नहीं की गई है। भारत में मौजूदा दूसरी पीढ़ी की कंपास 2026 तक बिक्री में बनी रह सकती है। वहीं, नई कंपास को साल 2026 के आखिरी या साल 2027 के शुरुआत में लॉन्च किया जा सकता है।

मारुति ई विटारा तीन वेरिएंट हो सकती है लॉन्च, जानिए किसमें मिलेंगे कौन-से फीचर्स

परिवहन विशेष न्यूज

ऑटो डेस्क मारुति सुजुकी की पहली इलेक्ट्रिक कार मारुति ई-विटारा सितंबर 2025 में भारत में लॉन्च होने वाली है। यह कई बेहतरीन फीचर्स से लैस होगी और 500 किमी से ज्यादा की ड्राइविंग रेंज देगी। ई-विटारा में दो बैटरी पैक मिलेंगे और यह 10 रंगों में उपलब्ध होगी। इसे डेल्टा जेटा और अल्फा जैसे तीन वेरिएंट में लॉन्च किया जाएगा जिनमें अलग-अलग खूबियाँ होंगी।

नई दिल्ली। मारुति सुजुकी की पहली इलेक्ट्रिक कार Maruti e Vitara भारत में सितंबर 2025 में लॉन्च होने वाली है। मारुति की पहली इलेक्ट्रिक कार कई बेहतरीन फीचर्स से लैस रहने वाली है। वहीं, इसमें 500 से ज्यादा ड्राइविंग रेंज मिलेगा। ई-विटारा में दो बैटरी पैक मिलेगा। कंपनी ने पहले ही इसके सभी फीचर्स का खुलासा कर दिया है। हम यहां पर आपको इसके किस वेरिएंट में क्या फीचर्स मिलेंगे, इसके बारे में बता रहे हैं?

500 किमी से ज्यादा मिलेगी रेंज

Maruti e Vitara में दो बैटरी पैक 48.8kWh और 61.1kWh मिलेगा। इसमें एक इलेक्ट्रिक मोटर मिलेगा। यह एक बार चार्ज होने के बाद 500 किमी से ज्यादा की ड्राइविंग रेंज देगी। कंपनी इसको लेकर दावा करती है कि डीसी फास्ट चार्जर से इसकी बैटरी महज 50 मिनट में 80 फीसद तक चार्ज हो जाएगी।

10 कलर ऑप्शन में होगी लॉन्च

नई मारुति सुजुकी ई विटारा को 10 रंगों में पेश किया जाएगा। इन कलर स्कीम में ओपुलेंट रेड, ब्लूश ब्लैक, आर्कटिक व्हाइट, ग्रैंड्यूर ग्रे, स्प्लेंडिड सिल्वर, नेक्सा ब्लू, और ड्यूल-टोन शेड्स जिसमें लैंड ब्रीज ग्रीन, स्प्लेंडिड सिल्वर, ओपुलेंट रेड और आर्कटिक व्हाइट शामिल हैं। इस सभी कलर के साथ इसकी रूफ ब्लूइश ब्लैक कलर की होगी। इसे तीन वेरिएंट में लॉन्च किया जाएगा, जो डेल्टा, जेटा और अल्फा होंगे। आइए जानते हैं कि इनमें क्या-क्या फीचर्स मिलेंगे।

Maruti e Vitara वेरिएंट के फीचर्स

1. e Vitara Delta

श्री-पॉइंट LED DRLs और टेल लाइट्स
ऑटोमेटिक हेडलैंप फंक्शन
फॉग लाइट्स
18 इंच के अलॉय व्हील्स
इंटीग्रेटेड स्पॉइलर
टर्न इंडिकेटर के साथ ORVMs
बारिश-सेंसिंग वाइपर
10.25 इंच पूरी तरह से डिजिटल इंस्ट्रूमेंट क्लस्टर
10.1 इंच टचस्क्रीन इन्फोटेनमेंट सिस्टम
वायरलेस ऐप्पल कारप्ले और एंड्रॉइड ऑटो कनेक्टिविटी
फैब्रिक सीट अपहोस्ट्री
सॉफ्ट-टच इंटीरियर इनसर्ट्स
एयर प्यूरिफायर
स्टोरेज के साथ फ्रंट आर्मरेस्ट
फ्रंट और रियर USB टाइप-A और टाइप-C चार्जिंग पोर्ट
टिंट और टेलेस्कोपिक एडजेस्टेबल स्टीयरिंग
स्टीयरिंग-माउंटेड कंट्रोल
इंजन स्टार्ट-स्टॉप बटन
ऑटोमेटिक क्लाइमेट कंट्रोल
रियर एसी वेंट्स
40:20:40 स्प्लिट रियर सीटें
स्लाइडिंग और रिक्लाइनिंल रियर सीट
इलेक्ट्रिकली फोल्डेबल ORVMs
कप होल्डर्स के साथ रियर आर्मरेस्ट
इंफिनिटी सेर्स म्यूजिक सिस्टम
सात एयरबैग
सामने और पीछे की पार्किंग सेंसर
TPMS
ABS, EBD, ESP, EPB और BA
हाइट एडजस्टेबल फ्रंट सीट बेल्ट
सुजुकी कनेक्ट
ड्राइव मोड

2. e Vitara Zeta

वायरलेस मोबाइल चार्जर
रिवर्स पार्किंग कैमरा
ऑटो-डिमिंग IRVM

3. e Vitara Alpha

LED प्रोजेक्टर हेडलैम्प्स
फॉलो-मी-होम हेडलैम्प्स
10-वे पावर एडजस्टेबल ड्राइवर सीट
फैब्रिक और लेदरेट सीट अपहोस्ट्री
फिक्स्ड ग्लास के साथ इलेक्ट्रिक सनरूफ
फ्रंट वेंटिलेटेड सीटें
सबवूफर
360-डिग्री कैमरा
ADAS फीचर्स
डुअल टोन पेंट (वैकल्पिक)

होंडा अमेज का एक वेरिएंट हुआ बंद, कई बेहतरीन फीचर्स से था लैस

परिवहन विशेष न्यूज

होंडा अमेज के तीसरे जनरेशन के लॉन्च होने के बाद दूसरी पीढ़ी के दो वेरिएंट S और VX की बिक्री जारी रखी गई थी। अब कंपनी ने इसके VX की बिक्री को बंद कर दिया है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक जल्द ही इसके S वेरिएंट की बिक्री को भी बंद कर दिया जाएगा। यह दोनों वेरिएंट कई बेहतरीन फीचर्स के साथ आती है।

नई दिल्ली। जब भी कोई ऑटोमेकर अपनी किसी वाहन का नया जनरेशन लेकर आती है, तो पुराने जनरेशन को तब तक बेचती है जब तक उसके सभी स्टॉक खत्म नहीं हो जाते है। कुछ ऐसा ही Honda ने किया है। होंडा ने दिसंबर 2024 में तीसरी जनरेशन Honda Amaze को लॉन्च किया था। अब कंपनी ने दूसरी जनरेशन के VX ट्रिम को भारतीय बाजार से हटा दिया है। आइए जानते हैं कि यह किन फीचर्स के साथ आती थी और इसे क्यों बंद किया गया है।

क्यों हुई बंद?

3rd Gen Honda Amaze को दिसंबर 2024 में लॉन्च किया गया था। इसके लॉन्च होने के बाद भी कंपनी ने इसकी दूसरी जनरेशन की अमेज S और VX वैरिएंट्स की बिक्री को भारत में जारी रखा था। अब कंपनी ने तीसरी जनरेशन की अमेज की बढ़ती मांग को देखते हुए, होंडा धीरे-धीरे दूसरी जनरेशन के मॉडल को बंद करने की तरफ बढ़ रही है। इसकी शुरुआत कंपनी ने VX वैरिएंट को बंद करके कर दिया है। अब दूसरी जनरेशन अमेज की केवल S वेरिएंट ही बिक्री के लिए उपलब्ध है और इसे भी आगे चलकर बंद किया जा सकता है।

S वैरिएंट की कीमत और फीचर्स

सेकेंड जनरेशन अमेज S के मैनुअल ट्रांसमिशन को 7.62 लाख रुपये और ऑटोमैटिक (CVT) को 8.52 लाख रुपये की एक्स-शोरूम कीमत में पेश किया जाता है। अगर आप इसके प्लैटिनम व्हाइट पर्ल कलर को खरीदते हैं, तो इसकी कीमत थोड़ी ज्यादा हो सकती है। इसमें मिलने वाले फीचर्स की बात करें, तो यह डुअल एयरबैग्स, LED DRLs, LED टेल लाइट्स, 14-इंच के व्हील्स, मैनुअल AC, 2-डिन म्यूजिक सिस्टम, और इलेक्ट्रिकली एडजस्टेबल ORVMs जैसी सुविधाओं के साथ आती है। इसमें 1.2-लीटर पेट्रोल इंजन मिलता है, जो 90 PS की पावर और 110 Nm का टॉर्क जनरेट करता है। यह 5-स्पीड मैनुअल या CVT गियरबॉक्स के साथ आता है। इसे लूनर सिल्वर मेटैलिक, रेडिएंट रेड मेटैलिक, गोल्डन ब्राउन मेटैलिक, और मेट्योरॉइड ग्रे मेटैलिक कलर ऑप्शन के साथ पेश किया जाता है।

व्हाट्सऐप पर मिलेगी आरटीओ की पूरी सर्विस, बार-बार के चक्कर से मिलेगा छुटकारा

परिवहन विशेष न्यूज

उत्तर प्रदेश परिवहन विभाग ने व्हाट्सएप चैटबॉट शुरू किया है। इससे ड्राइविंग लाइसेंस वाहन पंजीकरण और चालान की जानकारी घर बैठे मिल जाएगी। रोड टैक्स भरने आवेदन की स्थिति जानने और वाहन स्वामित्व बदलने की प्रक्रिया भी जान सकते हैं। यह चैटबॉट 24x7 उपलब्ध रहेगा जिससे लोगों को आरटीओ के चक्कर नहीं काटने पड़ेंगे और सभी आरटीओ सर्विस आसानी से मिल जाएंगी।

नई दिल्ली। उत्तर प्रदेश परिवहन विभाग ने लोगों की सहायता के लिए व्हाट्सएप चैटबॉट को पेश किया है। इस चैटबॉट को वाहन और सारथी डेटाबेस के साथ जोड़ा गया है, जिसकी वजह से आरटीओ कार्यालय जाए बिना लोग ड्राइविंग लाइसेंस की जानकारी, वाहन पंजीकरण सेवाओं, चालान की स्थिति समेत और भी कई चीजों के बारे में पता कर सकते हैं। इसके साथ ही यह चैटबॉट बाकी सर्विस जैसे रोड टैक्स पेमेंट, आवेदन की स्थिति ट्रैकिंग और वाहन के स्वामित्व के हस्तांतरण के लिए एक चरण-दर-चरण प्रक्रिया के बारे में भी जानत सकते हैं। आइए जानते हैं कि इस व्हाट्सएप चैटबॉट का आप कैसे इस्तेमाल कर सकते हैं और इसका लोगों के क्या फायदा होगा?

व्हाट्सएप चैटबॉट कैसे एक्सेस करें?

व्हाट्सएप चैटबॉट का इस्तेमाल करने के लिए आपको अपने स्मार्टफोन में +918005441222 को सेव करना होगा और व्हाट्सएप पर जाकर hi लिखकर सेंड करें। इस तरह से आप इसे एक्सेस कर सकते हैं।

मैसेज भेजने के बाद, चैटबॉट आपसे लैग्वेज यानी भाषा का चुनाव कपने के लिए कहेगा, जो इंलिश और हिंदी होगा। जिसमें आप बातचीत करने में कंफर्टेबल हो उसका चुनाव कर सकते हैं।

इसके बाद व्हाट्सएप चैटबॉट आपका स्वागत एक मैसे और मेनू के साथ करेगा, जिसमें आपको मदद की जरूरत है। इसमें आपको इविंग लाइसेंस, वाहन पंजीकरण, देखने और चालान के भुगतान, वाणिज्यिक वाहन परमिट, सड़क सुरक्षा, फेसलेस (ऑनलाइन) सेवाओं, उपयोगकर्ता की सुविधा और सुरक्षा के लिए सड़क से संबंधित सेवाओं के साथ-साथ परिवहन विभाग द्वारा सभी महत्वपूर्ण घोषणाओं के लिए एक और ऑप्शन के बारे में सेवाओं के लिए आप्शन शामिल है।

मेनू में आवश्यक सेवा ऑप्शन का चयन करने के बाद आपको केवल संकेतों का पालन करना होगा और आपको वह जानकारी PDF के रूप में शेयर की जाएगी।

जब आपको जानकारी मिल जाएगी, तो चैटबॉट आपको मुख्य या पिछले मेनू में लौटने का ऑप्शन देगा। आप अपनी जरूरत के हिसाब से ऑप्शन का चुनाव कर सकते हैं।

लोगों को क्या मिलेगा फायदा?

उत्तर प्रदेश परिवहन विभाग का यह व्हाट्सएप चैटबॉट 24x7 लोगों के लिए उपलब्ध रहेगा। यह आपको छुट्टी वाले दिन भी सर्विस देगा। इसकी वजह से आपको बार-बार RTO के चक्कर नहीं लगाना पड़ेगा। इसे साथ ही इस पर सभी आरटीओ सर्विस मिलने से लोगों को अपनी समस्या का सामाधान जल्दी से मिल जाएगा। इतना ही नहीं, इसके जरिए आप अपने जरूरी RTO कागजात को भी अपलोड कर सकते हैं, जिसकी वजह से आपको कागजात की फोटोकॉपी करने या उसकी ऑरिजनल कॉपी को आरटीओ लेकर जाने की जरूरत नहीं पड़ेगी।

फसलों की विविधता को कम करेगी बढ़ती गर्मी

विजय गर्ग

ग्लोबल वार्मिंग दुनिया में फसलों की विविधता को कम कर सकती है। एक नए अध्ययन में चेतावनी दी गई है कि यदि वैश्विक तापमान 1.5 डिग्री सेल्सियस से अधिक हो जाता है, तो विशाल क्षेत्र फसल विविधता खो सकते हैं, जिससे विश्वव्यापी खाद्य सुरक्षा के लिए जोखिम बढ़ सकता है। शोधकर्ताओं का अनुमान है कि उच्च तापमान के कारण वैश्विक खाद्य उत्पादन का लगभग एक तिहाई हिस्सा खतरे में पड़ सकता है। फिनलैंड के आल्टो विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने नेचर फूड में प्रकाशित शोध में बताया कि तापमान, वर्षा पैटर्न और समग्र शुष्कता में परिवर्तन किस तरह दुनिया भर में 30 प्रमुख खाद्य फसलों के विकास को प्रभावित करेंगे।

शोध के परिणाम बताते हैं कि निम्न अक्षांश क्षेत्र, खास कर उष्णकटिबंधीय देशों के बड़े हिस्से सबसे अधिक नुकसान उठाने वाले हैं। जैसे-जैसे तापमान बढ़ेगा, इन क्षेत्रों में कृषि के लिए बहुत अधिक भूमि अनुपयुक्त होती जाएगी। साथ ही उगाई जा सकने वाली फसलों की विविधता में भी भारी गिरावट आएगी। अध्ययन का नेतृत्व करने वाली शोधकर्ता सारा हेइकोनेन ने कहा कि विविधता के नुकसान का मतलब है कि कुछ क्षेत्रों में खेती के लिए उपलब्ध खाद्य फसलों के दायरे में काफी कमी आ सकती है। इससे खाद्य सुरक्षा कम होगी और पर्याप्त कैलोरी और प्रोटीन प्राप्त करना अधिक कठिन हो जाएगा।

इन बदलती परिस्थितियों से दुनिया के मौजूदा खाद्य फसल उत्पादन का आधा हिस्सा प्रभावित हो सकता है। चावल, मक्का, गेहूं, आलू और सोयाबीन जैसी प्रमुख फसलों को उपयुक्त कृषि भूमि में भारी कमी का सामना करना पड़ सकता है। इससे उन लोगों के लिए चुनौतियां बढ़ सकती हैं जो दैनिक पोषण के लिए इन फसलों पर निर्भर हैं। कई अन्य फसलें भी असुरक्षित हैं जिनमें अनाज और दालों के अलावा उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में उगने वाली जड़ वाली फसलें शामिल हैं। जिमीकंद जैसी जड़ वाली फसलें कम आय वाले क्षेत्रों में खाद्य सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण हैं। अफ्रीका के सहारा रेगिस्तान के दक्षिण में स्थित देश सबसे अधिक प्रभावित होंगे।

यदि ग्लोबल वार्मिंग 3 डिग्री सेल्सियस से अधिक हो जाती है तो इन देशों में वर्तमान उत्पादन का लगभग तीन-चौथाई हिस्सा खतरे में पड़ जाएगा। वैश्विक तापमान का असर सब जगह एक जैसा नहीं होगा। नया अध्ययन निम्न अक्षांश और मध्य से उच्च अक्षांश क्षेत्रों (भूमध्य रेखा और ध्रुवीय क्षेत्रों के बीच में गर्म और ठंडी जलवायु वाले क्षेत्र) के बीच एक स्पष्ट अंतर को दर्शाता है। भूमध्य रेखा के नजदीकी देशों को जहां फसल की भारी क्षति और विविधता में गिरावट का सामना करना पड़ सकता है, वही ठंडी जलवायु वाले देश अपने समग्र उत्पादन स्तर को बनाए रख सकते हैं।

वैज्ञानिकों ने यह भी अनुमान लगाया है कि मध्य और उच्च अक्षांश वाले क्षेत्र गर्म होती दुनिया में फसलों की एक विस्तृत श्रृंखला की खेती करने में सक्षम हो सकते हैं। अध्ययन के वरिष्ठ लेखक मैटी कुम्मू का कहना है कि जलवायु में अनुकूल बदलाव अधिक पैदावार की गारंटी नहीं देता है। जलवायु परिवर्तन से कुछ स्थानों पर उत्पादन बढ़ सकता है लेकिन वार्मिंग नए कीट पैदा कर सकती है और चरम मौसम की घटनाएं ला सकती है।

खाद्य असुरक्षा से जूझ रहे देश, खास कर अफ्रीकी देश पहले से ही कठिनाइयों का सामना कर रहे हैं क्योंकि बढ़ते तापमान अन्य सामाजिक और आर्थिक दबावों के साथ मेल खाते हैं। कई कम अक्षांश वाले क्षेत्रों में, खास तौर पर अफ्रीका में, दुनिया के अन्य क्षेत्रों की तुलना में पैदावार कम है। ये देश उर्वरकों और सिंचाई तक अपनी पहुंच बढ़ाने के साथ-साथ उत्पादन और भंडारण श्रृंखला के माध्यम से खाद्य नुकसान को कम करके वे अधिक पैदावार प्राप्त कर सकते हैं। हालांकि वैश्विक गर्मी

इन अनुमानों में बहुत अधिक अनिश्चितता जोड़ेगी और संभवतः और भी अधिक कार्रवाई की आवश्यकता होगी, जैसे कि अनुरूप फसल का चयन करना और प्रजनन के नए तरीके अपनाना। मॉडल के जरिए अध्ययन और विश्लेषण करना आसान लगता है लेकिन यह समझना सबसे कठिन है कि बदलाव कैसे किए जाएं।

रिपोर्ट में सुझाव दिया गया है कि कम अक्षांश वाले देशों में नीति-निर्माताओं को कृषि के इंफ्रास्ट्रक्चर में अंतर को पाटने के तरीकों की तलाश करनी चाहिए। साथ ही अधिक प्रतिकूल बढ़ती परिस्थितियों के लिए भी तैयार रहना चाहिए। ऐसे प्रयासों के बिना स्थानीय समुदायों को, जो पहले से ही खाद्य कमी के खतरे में हैं, आने वाले वर्षों में और भी अधिक संघर्ष करना पड़ेगा। दुनिया की खाद्य फसलों को सुरक्षित करना मध्य और उच्च अक्षांश वाले क्षेत्रों के लिए किसानों और नीति निर्धारकों को लचीला बने रहना होगा। गर्मी नई फसलों के लिए द्वार खोल सकती है, लेकिन वैश्विक मांग और बाजार की ताकतों में बदलाव लोगों द्वारा खेती के लिए चुने जाने वाले तरीकों को और भी बदल सकते हैं। नई स्थितियों से निपटने के लिए किसानों द्वारा जो तरीके अपनाए जा सकते हैं, उनमें विभिन्न फसल किस्मों के साथ प्रयोग करना, रोपण के मौसमों को समायोजित करना तथा गर्म मौसम और कीटों से निपटने के लिए बुनियादी ढांचे में निवेश करना शामिल है।

शोधकर्ताओं का कहना है कि अगर हम भविष्य में अपनी खाद्य प्रणाली को सुरक्षित करना चाहते हैं, तो हमें जलवायु परिवर्तन को कम करना पड़ेगा और इसके प्रभावों के अनुकूल होना पड़ेगा। भले ही सबसे बड़े परिवर्तन भूमध्यरेखीय क्षेत्रों में हों, हम सभी वैश्विक खाद्य प्रणाली के माध्यम से इन प्रभावों को महसूस करेंगे। अतः हमें इन समस्याओं को दूर करने के लिए मिलकर काम करना पड़ेगा। इस अंतर्संबंध का मतलब है कि दुनिया के एक हिस्से में जलवायु द्वारा संचालित फसल विफलताओं का असर समस्त सप्लाई चेन पर पड़ेगा, जिससे हर जगह खाद्य कीमतों और उपलब्धता पर असर पड़ सकता है। अध्ययन इस बात पर जोर देता है कि जलवायु परिवर्तन को कम करना आवश्यक है, लेकिन एक गर्म और अधिक अप्रत्याशित ग्रह पर उत्पन्न होने वाली परिस्थितियों से निपटने के लिए बेहतर योजना बनाना भी उतना ही जरूरी है।

मोबाइल और टीवी देखने से बच्चों को कैसे रोकें?

विजय गर्ग

मोबाइल फोन, टैबलेट और स्मार्ट टीवी के उदय के साथ, कई माता-पिता अपने छोटे बच्चों को स्क्रीन से दूर रखने के लिए संघर्ष करते हैं। जबकि डिजिटल डिवाइस सामयिक शैक्षिक मूल्य, अत्यधिक स्क्रीन समय की पेशकश कर सकते हैं - विशेष रूप से टॉडलर्स और प्रीस्कूलर्स के लिए - उनके सामाजिक, भावनात्मक और शारीरिक विकास में बाधा डाल सकते हैं। तो माता-पिता निरंतर संघर्ष या अपराध के बिना स्वस्थ सीमाएं कैसे निर्धारित कर सकते हैं? यह गाइड परिवारों को स्क्रीन निर्भरता को कम करने और अधिक सार्थक, तकनीक-मुक्त कनेक्शन को बढ़ावा देने में मदद करने के लिए व्यावहारिक, अनुसंधान-समर्थित रणनीति प्रदान करता है।

स्क्रीन समय के लिए स्वस्थ सीमाएँ निर्धारित करना बच्चों और छोटे बच्चों के लिए स्क्रीन समय सीमित करना उनके संज्ञानात्मक, भावनात्मक और सामाजिक विकास का समर्थन करने के लिए आवश्यक है। बाल चिकित्सा विशेषज्ञ परिवार के साथ वीडियो कॉल को छोड़कर दो साल से कम उम्र के बच्चों के लिए किसी भी स्क्रीन उपयोग से बचने की सलाह देते हैं। 2-5 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए, स्क्रीन का समय प्रति दिन एक घंटे तक सीमित होना चाहिए, जो शैक्षिक और उच्च गुणवत्ता वाली सामग्री पर केंद्रित हो। बड़े बच्चों को एक संतुलित दिनचर्या बनाए रखनी चाहिए, यह सुनिश्चित करना कि स्क्रीन का उपयोग नींद, शारीरिक गतिविधि, सीखने या पारिवारिक बातचीत में हस्तक्षेप न करे।

संलग्न विकल्पों को प्रोत्साहित करना बच्चों पर कब्जा करने के लिए स्क्रीन पर भरोसा करने के बजाय, माता-पिता को एक उत्तेजक, स्क्रीन-मुक्त वातावरण बनाने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। आउटडोर खेल, एक साथ किताबें पढ़ना, पहेली, रचनात्मक शिल्प और परिवार बोर्ड गेम न केवल मनोरंजन प्रदान करते हैं, बल्कि भावनात्मक संबंध और विकासात्मक कौशल का पोषण भी करते हैं। स्क्रीन-फ्री ज़ोन की स्थापना - जैसे बेडरूम या डिनर टेबल - और स्क्रीन-फ्री घंटे, विशेष रूप से सोने से पहले, बच्चों को हवा देने और नींद की गुणवत्ता में सुधार करने में मदद करता है।

उदाहरण के लिए अग्रणी और शामिल रहना माता-पिता स्वस्थ स्क्रीन की आदतों को मॉडलिंग करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। बच्चे अक्सर वयस्क व्यवहार की नकल करते हैं, इसलिए माइंडफुल स्क्रीन उपयोग का प्रदर्शन करते हैं और सक्रिय, गैर-स्क्रीन गतिविधियों में बच्चों के साथ संलग्न होते हैं, एक सकारात्मक उदाहरण सेट करते हैं। जब स्क्रीन उपयोग की अनुमति दी जाती है, तो सह-देखने वाले कार्यक्रम और सामग्री पर चर्चा करने से अनुभव अधिक शैक्षिक हो जाता है। स्पष्ट नियमों और सीमाओं के साथ एक पारिवारिक मीडिया योजना स्थापित करना स्थिरता सुनिश्चित करता है। यदि चुनौतियां उत्पन्न होती हैं, जैसे कि स्क्रीन की लत या व्यवहार में परिवर्तन के संकेत, माता-पिता को व्यक्तिगत मार्गदर्शन के लिए बाल रोग विशेषज्ञों से परामर्श करने की सलाह दी जाती है।

एआई तकनीक से बदलते पढ़ने-पढ़ाने के तौर-तरीके

विजय गर्ग

एआई हमारे जीवन के हर पहलू को छू रही है जिसमें शिक्षा का क्षेत्र भी शामिल है। इस तकनीक ने न केवल पढ़ाने के, बल्कि मूल्यांकन के तरीके भी बदले। वहीं बड़ा बदलाव है विद्यार्थी की सीखने की गति, रुचि, और स्तर को ध्यान में रख पर्सनलाइज्ड सामग्री प्रदान करना। एआई शिक्षा को इंटेरेक्टिव बनाने के अलावा स्किल से जोड़ रही है।

डॉ. मनु मिङ्काइक्कीसवीं सदी की अब तक की सबसे बड़ी तकनीकी उपलब्धियों में से एक है आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस यानी एआई। एक ऐसी तकनीक जो मशीनों को सोचने, समझने और निर्णय लेने की क्षमता प्रदान करती है। एआई हमारे जीवन के हर पहलू को छू रही है। जो अब केवल रोबोटिक्स या औद्योगिक क्षेत्र तक सीमित नहीं, बल्कि शिक्षा के क्षेत्र में भी इसका उपयोग हो रहा है।

एआई ने न केवल पढ़ाने के तरीके को बदला है, बल्कि सीखने, मूल्यांकन और विद्यार्थियों की व्यक्तिगत जरूरतें समझने के नजरिए को भी क्रांतिकारी बना दिया। दरअसल हर विद्यार्थी की सीखने की क्षमता, गति और रुचि अलग-अलग होती है। पारंपरिक शिक्षा प्रणाली में सभी छात्रों को एक समान तरीके से पढ़ाया जाता था, जिससे कई छात्र पीछे रह जाते थे। जबकि एआई आधारित लर्निंग टूल्स जैसे एडैप्टिव लर्निंग सिस्टम्स अब छात्र की सीखने की गति, रुचि, और कमजोरियों को ध्यान में रख उन्हें अनुकूल सामग्री प्रदान करते हैं।

मसलन, बायजूस, खान अकेडमी और कोर्सेरा जैसे प्लेटफॉर्म एआई की मदद से छात्रों को उनके स्तर के अनुसार टॉपिक्स सुझाते हैं और बेहतर समझाने के लिए पर्सनलाइज्ड कंटेंट प्रदान करते हैं। इससे छात्रों को अपनी गति से सीखने का मौका मिलता है, जिससे उनकी समझ और आत्मविश्वास बढ़ते हैं।

एआई आधारित स्मार्ट ट्यूटर और चैटबॉट्स छात्रों को 24×7 सहायता प्रदान करते हैं। अब छात्रों को हर छोटी-छोटी शंका के लिए शिक्षक का इंतजार नहीं करना पड़ता। ये वर्चुअल असिस्टेंट तुरंत सवालों के जवाब देते हैं, चाहे वह गणित का

जटिल फॉर्मूला हो या इतिहास की महत्वपूर्ण तारीख। वहीं डुओलिंगो जैसे प्लेटफॉर्म एआई का प्रयोग कर भाषा सीखने की प्रगति ट्रैक करते हैं व उसी मुताबिक नए पाठ्यक्रम प्रदान करते हैं, जिससे सीखने की प्रक्रिया और अधिक प्रभावी बनती है।

ध्यान रहे, एआई का मतलब यह नहीं कि शिक्षकों की जरूरत खत्म हो गई है। बल्कि, एआई ने शिक्षकों को और अधिक प्रभावी और डेटा-सक्षम बना दिया है। मसलन, अब शिक्षक यह समझ सकते हैं कि कौन-सा छात्र कहां पिछड़ रहा है और उसी के अनुसार व्यक्तिगत मार्गदर्शन दे सकते हैं। वहीं एआई तकनीक की मदद से शिक्षक अपने समय का अधिकतम उपयोग पढ़ाने के अलावा मार्गदर्शन, प्रेरणा और रचनात्मक गतिविधियों के लिए कर पा रहे हैं। एआई शिक्षकों का सहायक बन शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ा रही है।

यह भी कि एआई आधारित ऑनलाइन परीक्षा प्रणाली अब उत्तरों का त्वरित और सटीक मूल्यांकन कर रही है। कई शिक्षण संस्थान एआई की मदद से क्विज़ का मूल्यांकन कर छात्रों को तुरंत परिणाम जारी कर सुधार के सुझाव देते हैं। इससे छात्रों को अपनी कमजोरियों का तुरंत पता चलता है जिनमें वे समय रहते सुधार कर सकते हैं। साथ ही, यह शिक्षकों का कीमती समय बचाती है, जिसे वे अन्य रचनात्मक और शैक्षिक गतिविधियों में लगा सकते हैं।

एआई ने शिक्षा को दुनिया के प्रत्येक कोने तक पहुंचाने में अहम भूमिका निभाई है। विशेष रूप से उन छात्रों के लिए जो स्कूल नहीं जा सकते, एआई आधारित वर्चुअल क्लासरूम और टूल्स ने उनके लिए नई राहें खोली हैं।

स्पीच-टू-टेक्स्ट और टेक्स्ट-टू-स्पीच जैसी तकनीकों ने दृष्टिहीन और श्रवण बाधित छात्रों को भी शिक्षा प्राप्ति का अवसर दिया है। इससे शिक्षा समावेशी बन रही है।

एआई केवल पढ़ाई में सहायक नहीं है, बल्कि खुद एक महत्वपूर्ण कैरियर स्किल बन चुका है। आज स्कूलों और कॉलेजों में एआई, मशीन लर्निंग, और डेटा साइंस जैसे विषय पढ़ाए जा रहे हैं ताकि विद्यार्थी भविष्य की तकनीकी नौकरियों के लिए तैयार हो सकें। 'एआई फॉर यूथ' प्रोग्राम इस दिशा में एक बड़ा कदम है, जो युवाओं की एआई के कौशल विकास में मदद करता है।

एआई केवल एक तकनीकी उपकरण नहीं है, बल्कि यह शिक्षा में एक नई सोच का प्रतीक है। शिक्षा अब केवल परीक्षा पास करने का माध्यम नहीं रह गई है, बल्कि समझ, अनुभव और नवाचार का केंद्र बन गई है। छात्र अब जिज्ञासु हैं, सवाल पूछते हैं और खुद से सीखने की कोशिश करते हैं। एआई इस प्रक्रिया को निरंतर समर्थन प्रदान करता है, जिससे शिक्षा अधिक इंटरैक्टिव, रोचक और प्रभावी बनती है। दरअसल, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस ने शिक्षा को स्मार्ट, व्यक्तिगत और इंटरेक्टिव बना दिया है। आज शिक्षा केवल किताबों तक सीमित नहीं है, बल्कि तकनीक के सहारे हर बच्चा, हर उम्र का व्यक्ति अपने समय व तरीके के हिसाब से सीख सकता है।

हालांकि, एआई का उपयोग सोच-समझकर और जिम्मेदारी के साथ किया जाना चाहिए। यह भी कि मानवीय शिक्षकों की भूमिका कभी खत्म नहीं होगी, बल्कि एआई उन्हें और बेहतर बनाने का एक सशक्त माध्यम है। तो भविष्य की शिक्षा की शुरुआत हो चुकी है ...और उसका नाम है आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस। जो कोई नागरिक इस बदलाव का हिस्सा बनना चाहते हैं, वे एआई आधारित शिक्षा के अवसरों को अपनाएं और सीखने की इस नई क्रांति का आनंद लें!

बहिष्कार 'एहसान फरामोश'

तुर्किये 'एहसान फरामोशी' का सबसे बदनाम उदाहरण हो सकता है। जब फरवरी, 2023 में तुर्किये में 7.8 तीव्रता का भूकंप आया था, करीब 40,000 लोग मारे गए थे, इमारतें 'मिट्टी-मलबा' हो गई थीं, तब भारत ने मदद का पहला हाथ बढ़ाया था। भारत ने उसे मानवीय दायित्व समझा और पूरा अभियान चलाया। हमारे एनडीआरएफ के जवानों ने दबी हुई जिंदगियों को प्राण देने की कोशिश की, डॉक्टरों ने कई कमाल किए और भारत ने तुर्की अवाम के लिए भोजन-पानी के बंदोबस्त किए। बेशक तुर्किये एहसान न माने, लेकिन वह 'एहसान फरामोश' क्यों हुआ? भारत-पाक के हालिया सैन्य संघर्ष के दौरान उसने पाकिस्तान का साथ दिया, 350 से अधिक ड्रोन सप्लाई किए, समुद्री जहाज तक भेजा और सैनिक भी उस संघर्ष का हिस्सा बने। चूंकि सैन्य कार्रवाई के दौरान तुर्किये के 2 'ड्रोन ऑपरेटर' मारे गए, लिहाजा तुर्की सैनिकों की मौजूदगी की पुष्टि होती है। तुर्किये ने पाकिस्तान के समर्थन में बयान भी दिए। आखिर तुर्किये भारत-विरोधी क्यों हुआ? बहरहाल भारत की राष्ट्रीय प्रतिक्रिया यह सामने आई है कि टूर-ट्रैरवल कंपनियों, औद्योगिक संगठनों, विश्वविद्यालय और सामाजिक-राजनीतिक संगठनों ने तुर्किये पर 'सर्जिकल स्ट्राइक' कर दी है। करीब 250 फीसदी टूर और बुकिंग रद्द करवा दी गई हैं। तुर्किये और अजरबैजान जाने वाले पर्यटकों की बुकिंग में 60 फीसदी गिरावट आई है। यह सिलसिला अभी जारी है। ट्रैरवल कारोबार से जुड़ी कंपनियों का आकलन है कि करीब 5000 करोड़ रुपए का नुकसान तुर्किये को होगा। 2024 में 3.30 लाख से अधिक भारतीय पर्यटक तुर्किये गए थे और करीब 2.43 लाख सैलानी अजरबैजान घूमने गए थे। छोटी और सीमित अर्थव्यवस्थाओं के लिए पर्यटकों की ये संख्या कम नहीं है। सेब, संगमरमर और अन्य सामान आयात करना व्यापारियों ने खुद ही बंद कर दिया है। 2023-24 में तुर्किये को हमने 3885 वस्तुओं का निर्यात किया और 2482 वस्तुओं का आयात भी किया, लेकिन अब बहिष्कार करने और पाबंदी लगाने की मांगें हुंकारों की तरह बुलंद हैं। 2023-24 में भारत ने तुर्किये से करीब 821 करोड़ रुपए के सेब खरीदे थे। राजस्थान और महाराष्ट्र में सबसे अधिक संगमरमर, करीब 14 लाख टन, तुर्किये से ही आयात किया जाता है।

भारत और तुर्किये के बीच वित्त वर्ष 2024 में द्विपक्षीय व्यापार 10.4 अरब डॉलर का हुआ था। 2000-24 के दौरान तुर्किये ने 240.18 मिलियन डॉलर का प्रत्यक्ष विदेशी निवेश भारत में किया है। गौरतलब यह है कि तुर्किये की कंपनी 'सेलेबी' भारत के 9 अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डों पर ग्राउंड हैंडलिंग का काम कर रही हैं। यह बेहद संवेदनशील व्यवस्था है। क्या भारत सरकार उनकी सेवाएं निलंबित करने पर विचार करेगी? दरअसल भारतीय पर्यटकों ने तुर्किये और अजरबैजान की अर्थव्यवस्था को हजारों करोड़ रुपए दिए। वहां नौकरियां बढ़ीं, होटल और विमानन क्षेत्र का विस्तार हुआ, भारत में कई परियोजनाओं के अनुबंध तय किए गए, तो तुर्किये की अर्थव्यवस्था ही बढ़ी। अब 'एहसान फरामोश' को दंडित करना ही चाहिए। भारत सरकार स्पष्ट करे कि वह देश के गुस्से और आक्रोश को कितना समर्थन दे रही है? वैसे तो चीन, तुर्किये, अजरबैजान ने भारत-पाक संघर्ष के दौरान दुश्मन का ही समर्थन किया और उसे सैन्य सहयोग भी दिया। भारत ने चीन के सरकारी अखबार 'ग्लोबल टाइम्स' और सरकारी न्यूज एजेंसी 'शिन्हुआ' के 'एक्स' अकाउंट को ब्लॉक कर दिया है। तुर्किये की सरकारी प्रसारक कंपनी 'टीआरटी वर्ल्ड' को भी बंद कर दिया गया है। चीन पर इससे अधिक पाबंदियां नहीं लगाई जा सकतीं, क्योंकि उसके साथ व्यापार का आंकड़ा सर्वाधिक है। चीन के एयर डिफेंस सिस्टम को भारतीय वायुसेना ने 23 मिनट के लिए बिल्कुल जाम कर दिया था। उसी दौरान भारत ने अपना सैन्य मिशन पूरा किया। चीन की हथियारबंद मौजूदगी का इससे प्रामाणिक सबूत और क्या हो सकता है? बहरहाल तुर्किये ने इस्लामी देशों का 'खलीफा' बनने का मुगालता पाल रखा है, लिहाजा उसकी हेकड़ी तोडना बहुत जरूरी है। भारत बहिष्कार या अन्य सख्त विकल्प पर विचार करे। सऊदी अरब, संयुक्त अरब अमीरात, ईरान, अफगानिस्तान, कतर सरीखे प्रमुख इस्लामी देशों ने 'आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई' में भारत का समर्थन किया है। तुर्किये को उसके 'गिरगिटी रंग' के लिए सजा जरूर दी जानी चाहिए।

ऑपरेशन सिंदूर में ट्रंप कहां हैं?

इसमें रूस से खरीदे गए एस-400 एयर डिफेंस सिस्टम ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। अमरीका ने इसे न खरीदने के लिए दबाव भी बनाया था

चार दिन के बाद ऑपरेशन सिंदूर थम गया। सीजफायर हो गया। सीजफायर यानी दोनों पक्षों ने फायर करना या गोलियां चलानी बंद कर दी हैं। हिंदी में इसका अनुवाद युद्धविराम बनता है। कायदे से दोनों देशों को युद्धविराम की घोषणा करनी चाहिए थी। दोनों देशों ने ऐसा किया भी। लेकिन उनके घोषणा करने से दो मिनट पहले अमरीका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने अपने एकाऊंट पर युद्धविराम की सूचना ही नहीं दी, बल्कि यह भी कहा कि यह युद्धविराम मैंने कराया है। उसने केवल युद्धविराम की घोषणा ही नहीं की, बल्कि यह भी बताया कि दोनों देश किसी तीसरे तटस्थ देश में आपस में बातचीत करेंगे। उसने बातचीत का विषय भी बताया कि कश्मीर पर बातचीत करेंगे। ट्रंप की इन बातों में कितनी सच्चाई है और कितना बड़बोलापन, यह परखना जरूरी है। लड़ाई के दिनों में दोनों देश अमरीका से बातचीत कर रहे होंगे, इसमें तो कोई शक नहीं हो सकता। न भी कर रहे हों, तो अमरीका इतना तो सक्षम है ही कि स्वयं मोनिटर कर सके। पहलगाम हमले के बाद अमरीका संवेदना व पाकिस्तान निंदा का जुबानी जमा खर्च करता रहा। वहां के अखबार न्यूयार्क टाइम्स ने जब छापा कि पहलगाम पर उग्रवादी हमला हुआ है तो अमरीका प्रशासन ने चिल्ला कर कहा कि यह आतंकवादी हमला है और भारत को इसका उत्तर देने का पूरा अधिकार है। भारत ने तो पहले ही घोषणा की हुई है कि पाकिस्तान द्वारा प्रशिक्षित आतंकी हमला करेंगे तो भारत पाकिस्तान में घुसकर उनके ठिकानों पर हमला करेगा। यह उसने अपनी योजना के अनुसार किया भी। भारत ने इस प्रकार के नौ ठिकानों पर हमला किया और कहा जाता है उसमें लगभग एक सौ आतंकी, उनके सरगना और उनको प्रशिक्षित करने वाले मारे गए।

मारे गए आतंकियों के जनाजों में जिस प्रकार पाकिस्तानी सेना के लोग हाजिरी लगवा रहे थे और आंसू बहा रहे थे, उससे किसी को शक नहीं रह गया कि आतंकी परोक्ष रूप से पाकिस्तानी सेना की ही आतंकी रैजमेंट है। ऐसा नहीं कि अमरीका को यह सब पता नहीं था। उसके पास सामान्य तौर पर ये सब जानकारियां रहती हैं। कभी-कभी पोखरण जैसा कोई अपवाद हो जाता है। आतंकी प्रशिक्षण केन्द्रों पर हमले के बाद भारत ने स्पष्ट कर दिया कि उसका कार्य व उद्देश्य पूरा हो गया है। यह हमला पाकिस्तान पर नहीं है, बल्कि यह आतंक पर हमला है जिसे भारत लंबे अरसे से झेल रहा है। हमारा काम पूरा हो चुका है। पाकिस्तान को इसमें पडना नहीं चाहिए। अलबत्ता यदि पाकिस्तान इसमें कूदा तो भारत उसका माकूल जवाब देगा। यह सूचना सार्वजनिक रूप से ही दी गई थी। इसलिए अमरीका तक भी पहुंच ही गई थी। अमरीका ने भी अपना स्टैंड स्पष्ट कर दिया कि यह भारत-पाकिस्तान का आपसी मामला है, अमरीका का इससे कुछ लेना-देना नहीं है। चीन पाकिस्तान का गहरा दोस्त माना जाता है। लेकिन उस समय वह भी जुबानी जमा खर्च तक ही सीमित रहा। पाकिस्तान ने यही उचित समझा कि आतंकियों के साथ कन्धे से कन्धा मिला कर खड़े होना होगा। चीन व अमरीका भी चुपचाप तमाशा देखने के लिए तैयार थे। लेकिन उसका कारण दूसरा था। ये दोनों देश अब शुद्ध व्यापारी हैं। ट्रंप तो व्यक्तिगत तौर पर भी व्यापारी हैं। अमरीका तो पहले से ही है, लेकिन चीन ने जब से कार्ल माक्र्स को बाहर का रास्ता दिखा दिया है, तब से वह व्यापारी लक्ष्यों के अनुसार नीति बनाता-गिराता है। इन दोनों देशों ने न जाने गुणवत्ता की कितनी कहानियां सुना कर पाकिस्तान को अपने हथियार बेचे हुए हैं। इन देशों में जो कम्पनियां हथियार बनाती हैं, उनको दुनिया के सामने अपने माल की गुणवत्ता भी देखनी और दिखानी थी। हथियारों का उत्पादन चाकलेट के उत्पादन के समान नहीं है जिसकी गुणवत्ता ग्राहक तत्काल परख लेता है। हथियार की गुणवत्ता तो लड़ाई में ही परखी जाती है। यही कारण है कि अमरीका और चीन दोनों की इच्छा रही होगी कि पाकिस्तान जवाबी हमला करे। पाकिस्तान के पास तो कोई चारा ही नहीं था। यदि पाक सेना हमला नहीं करती तो सैयद आसिम मुनीर की सारी मुल्लागिरी उतर जाती है। अलबत्ता उसको भी विश्वास रहा ही होगा कि चीन और अमरीका के दिए हथियार रूपी कवच भारत को धूल चटा देंगे। इसलिए पाक सेना ने हमला कर दिया। आजकल हमले के तरीके बदल गए हैं। मामला ड्रोन और मिसाइलों से ही आगे बढ़ाया जाता है। पाकिस्तान ने इन दोनों तरीकों से हमला कर दिया। यह थल सेना की लड़ाई तो थी ही नहीं। हवा में हो रही इस लड़ाई में किसी देश का भी कोई सैनिक तो ड्रोन या मिसाइल के साथ होता नहीं।

इसलिए यह तकनीक की तकनीक से लड़ाई होती है। पाकिस्तान के पास जो चीन और अमरीका की दी हुई तकनीकें थीं, भारत को उसको अपनी तकनीक से रोकना था। इसी रोक पाने की क्षमता से ही सफलता या असफलता का निर्णय होने वाला था। सांस रोक कर अमरीका व चीन भी देख रहे थे। भारत ने पाकिस्तान द्वारा किए गए इस पहले हमले को सफलतापूर्वक रोक लिया। सभी मिसाइलों को आकाश में ही नष्ट कर दिया गया। ड्रोन को भी सफलतापूर्वक गिरा दिया गया। इसमें रूस से खरीदे गए एस-400 एअर डिफेंस सिस्टम ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। ध्यान रहे जब भारत ने रूस से यह सिस्टम खरीदा था, तब अमरीका ने बहुत प्रयास किया कि भारत उससे यह सिस्टम न खरीदे। यहां तक कि उसने भारत पर अनेक प्रकार के प्रतिबंध लगाने की धमकियां दीं। लेकिन भारत नहीं झुका और एस-400 खरीदा। भारत में निर्मित ब्राह्मोस ने अद्भुत काम किया। भारत की स्वदेशी तकनीक से निर्मित आकाश ने भी अपनी गुणवत्ता साबित की। इतना ही नहीं भारत का एयर डिफेंस सिस्टम पांच स्तरीय इनटिग्रेटिड था। इसका अर्थ है जब पाकिस्तान से कोई मिसाइल आती है तो उदाहरण के लिए मान लें कि जब वह तीन सौ किलोमीटर दूर है तो इनटिग्रेटिड सिस्टम चालू हो जाता है। पहले स्तर पर उसे गिराने की कोशिश होती है। यदि वह असफल हो जाता है और मिसाइल आगे निकल जाती है तो दूसरा स्तर सक्रिय हो जाता है। इस प्रकार पांच स्तरों पर कोशिश होती है। यही कारण है कि पाकिस्तान के हमले की मिसाइलों और ड्रोनों को पांच स्तरों में से किसी न किसी स्तर पर नष्ट कर दिया गया। अब चीन और अमरीका चौंके। लेकिन अब पाकिस्तान के हमले का उत्तर देने की बारी भारत की थी। भारत ने पाकिस्तान के लगभग सभी सैन्य ठिकानों को अपनी हिट लिस्ट में शामिल कर लिया। पाकिस्तान तो चिंतित था ही, उससे ज्यादा चिंता चीन और अमरीका को थी। उनके माल की परीक्षा होने वाली थी। यदि माल और तकनीक भारत के हमले में पिट गई तो क्या व्यापारियों का माल बिकना बंद नहीं हो जाएगा।

उसने उत्तर दिया और वह उत्तर दुनिया ने देखा। पाकिस्तान को चीन ने जो एयर डिफेंस सिस्टम पता नहीं कितनी कहानियां सुना कर बेचा था, वह तकनीक पिट गई। यही स्थिति अमरीका द्वारा दिए गए सिस्टम की हुई। अब अमरीका की भूमिका का दूसरा रूप शुरू हुआ। अब तक वह तमाशा देख रहा था, लेकिन अब उसके माल की भद्द पिटने लगी थी। उसके हथियारों की दुकानों के आगे लगी खरीददारों की भीड़ चौकन्ना होने लगी थी। पाकिस्तान के पास तो कोई विकल्प ही नहीं था। लेकिन पाकिस्तान की समस्या दूसरी थी। वह भारत से सीधी बात नहीं करना चाहता था। उसको लगता था कि इससे उसकी अपनी जनता के सामने हेठी होती है। इसलिए उसने अमरीका से गुहार लगाई कि यह लड़ाई बंद होनी चाहिए। अमरीका ने भारत को पाकिस्तान का यह संदेश दिया। भारत ने कहा लड़ाई के दरम्यान इस प्रकार की बातचीत दोनों देशों के डीजीएमओ के बीच होती है। दोनों डीजीएमओ की बात गोलीबारी बंद करने को लेकर हो गई। इसी बीच, हो सकता है पाकिस्तान ने फजीहत से बचने के लिए, ट्रंप से युद्धविराम की घोषणा करवा दी। अब ट्रंप ही इसका श्रेय ले रहा है। यह अमरीका की चाल है।

-कुलदीप चंद अग्निहोत्री

बदन की बाज़ीगरी या सशक्तिकरण का भ्रम?

'सोशल मीडिया पर देह की नुमाइश: सशक्तिकरण या आत्मसम्मान का संकट?'
'लाइक्स की दौड़ में खोती पहचान: नारी सशक्तिकरण का असली मतलब'

सोशल मीडिया पर नारी देह का बढ़ता प्रदर्शन क्या वाकई सशक्तिकरण है या महज़ लाइक्स और फॉलोअर्स की होड़? क्या हम सच्ची आज़ादी की ओर बढ़ रहे हैं या एक डिजिटल पिंजरे में कैद हो रहे हैं? क्या आत्मसम्मान की जगह केवल देह की नुमाइश रह गई है? क्या महिलाओं की पहचान अब सिर्फ उनके शरीर के आकार तक सिमट गई है? यह सवाल आज की डिजिटल पीढ़ी के सामने एक बड़ी चुनौती है, जो सशक्तिकरण और आत्मसम्मान के असली मायने खोजने की मांग करता है। तो सवाल यह है कि क्या हमें इस डिजिटल कोलाहल से बाहर निकलकर असली स्वतंत्रता का अर्थ समझना होगा? या फिर हम बस लाइक्स और फॉलोअर्स के खेल में उलझकर अपने असली अस्तित्व को खो देंगे?

–प्रियंका सौरभ

क्या हो गया है आजकल औरतों को? सोशल मीडिया पर उठते कोलाहल में हर ओर एक ही स्वर गूंज रहा है – देह प्रदर्शन का। कहीं चटकते-फड़कते रील्स में, कहीं भड़कते-उलझते डांस मूव्स में, और कहीं ज़ूम इन होती नज़रों के बीच, बस एक ही प्रदर्शन – अपनी चपल देह की अदा का। मानो देह ही पहचान बन गई हो।

सच पूछो तो इस दौर में देह का कारोबार जितना खुलकर हो रहा है, उतना पहले कभी न हुआ था। सोशल मीडिया ने देह को एक 'प्रॉडक्ट' बना दिया है, जिसे जितना ज्यादा दिखाओ, उतना ज्यादा लाइक्स, फॉलोअर्स और व्यूज़ बटोर लो। मानो आत्मसम्मान का कद अब कमेंट्स की लंबाई और लाइक्स की संख्या से मापा जाने लगा हो।

वो जो कभी सभ्यता की पहचान थी, अब डिजिटल हाट बाजार में बिक रही है। जिस समाज में नारी का सम्मान उसकी आंखों की लज्जा, चेहरे की सौम्यता और आचरण की मर्यादा से आंका जाता था, वहां आज उसका अस्तित्व उसके चोली के घेरे और पिंडलियों की नुमाइश में सिमट कर रह गया है।

यह डिजिटल क्रांति का अजीब दौर है, जहां औरतें 'बोल्ड' होने का झूठा अर्थ 'बदन दिखाने' से जोड़ बैठी हैं। यह कैसी आज़ादी है, जहां अपनी पहचान की कीमत देह के टुकड़ों में चुकानी पड़े? औरतें खुद को जिस फेमिनिज्म की आड़ में उभार रही हैं, क्या वो असल में नारी शक्ति का उत्थान है, या महज़ लाइक्स और फॉलोअर्स की दौड़?

सोचिए, इस देह प्रदर्शन की होड़ में कितनी महिलाएं खुद को खो रही हैं? क्या यह वाकई सशक्तिकरण है या एक नया बंधन, जहां औरतें एक डिजिटल पिंजरे में फंसती जा रही हैं, अपनी असली पहचान को खोकर बस एक देह भर बनती जा रही हैं?

नारी स्वतंत्रता का अर्थ तो आत्मसम्मान, शिक्षा, और निर्णय लेने की स्वतंत्रता था, न कि केवल बदन दिखाने का अधिकार। ये तो वही हुआ जैसे किसी को सोने की चिड़िया बना दो और फिर पिंजरे में कैद कर दो।

सवाल यह है कि क्या हमें इस डिजिटल कोलाहल से बाहर निकलकर असली स्वतंत्रता का अर्थ समझना होगा? या फिर हम बस लाइक्स और फॉलोअर्स के खेल में उलझकर अपने असली

अस्तित्व को खो देंगे?

आज सोशल मीडिया एक ऐसा मंच बन चुका है, जहां कुछ महिलाएं खुद को साबित करने के लिए हर हद पार कर रही हैं। कपड़ों का छोटा होना और बोल्ड पोज़ देना ही अगर 'बोल्डनेस' है, तो फिर आत्मविश्वास, शिक्षा, और स्वाभिमान का क्या? क्या यही है सशक्तिकरण का असली मतलब? क्या हमारा समाज वाकई इतना सतही हो गया है कि हम केवल बदन के आधार पर किसी की कीमत आंकने लगे हैं?

सोचिए, आज जो महिलाएं देह प्रदर्शन को सशक्तिकरण मान रही हैं, क्या वो सच में खुद को सशक्त महसूस करती हैं? क्या उन्हें पता है कि वो केवल एक डिजिटल उत्पाद बनकर रह गई हैं, जिनका मूल्य केवल उनके शरीर के आकार और नृत्य कौशल से मापा जाता है?

यह समस्या केवल महिलाओं की नहीं है, बल्कि उस पूरी डिजिटल संस्कृति की है, जिसने नारी शरीर को एक मनोरंजन सामग्री बना दिया है। वो शरीर जो कभी मातृत्व, प्रेम और करुणा का प्रतीक था, आज महज़ व्यूज़ और फॉलोअर्स की भूख का साधन बन गया है।

तो सवाल यह है कि क्या हमें इस डिजिटल कोलाहल से बाहर निकलकर असली स्वतंत्रता का अर्थ समझना होगा? या फिर हम बस लाइक्स और फॉलोअर्स के खेल में उलझकर अपने असली अस्तित्व को खो देंगे? आखिर सवाल यह है कि क्या देह का प्रदर्शन वाकई सशक्तिकरण है या बस एक भ्रम? क्या आज की नारी अपनी असली पहचान से दूर होती जा रही है, जहां उसकी शक्ति, बुद्धि और आत्मविश्वास की जगह सिर्फ उसके शरीर का आकार और आकर्षण ही अहम रह गया है? यह डिजिटल युग हमें नई संभावनाओं और अभिव्यक्ति की आज़ादी देता है, पर क्या यह स्वतंत्रता वाकई हमें आज़ाद कर रही है या बस एक और जाल में फंसा रही है?

नारी स्वतंत्रता का अर्थ केवल कपड़ों की लंबाई या शरीर के प्रदर्शन तक सीमित नहीं है। असली स्वतंत्रता है अपने विचारों, अधिकारों और आत्मसम्मान की रक्षा करना। यह वो स्वतंत्रता है, जो एक नारी को उसकी असल पहचान देती है – एक शिक्षित, आत्मनिर्भर और सशक्त इंसान के रूप में।

सोशल मीडिया पर जिस दिखावे की होड़ मची है, वह केवल लाइक्स और फॉलोअर्स की दौड़ नहीं, बल्कि आत्मसम्मान की गिरावट का प्रतीक है। यह एक डिजिटल पिंजरा है, जहां औरतें खुद को स्वतंत्र मानते हुए भी एक गहरे बंधन में बंधी हुई हैं।

हमें यह समझना होगा कि असली सशक्तिकरण आत्मनिर्भरता, शिक्षा और आत्मसम्मान में है, न कि केवल देह प्रदर्शन में। अगर हमें सही मायनों में नारी शक्ति को बढ़ाना है, तो हमें इस भ्रम से बाहर आना होगा और एक ऐसा समाज बनाना होगा, जहां औरतें अपनी पहचान अपने विचारों से बनाएं, न कि केवल अपने शरीर से।

सेना की गरिमा को ठेस पहुंचाता डिप्टी सीएम का बयान

संदीप सृजन

भारतीय राजनीति में नेताओं के विवादित बयान कोई नई बात नहीं हैं। समय-समय पर विभिन्न दलों के नेता अपनी टिप्पणियों के कारण सुर्खियों में आते हैं, जिससे न केवल उनकी पार्टी को असहज स्थिति का सामना करना पड़ता है, बल्कि समाज में भी तनाव और बहस का माहौल बनता है। हाल ही में मध्य प्रदेश के वनमंत्री विजय शाह के कर्नल सोफिया कुरैशी पर दिए बयान ने पूरे देश में हलचल मचा रखी है और इसी बीच म.प्र. के उपमुख्यमंत्री जगदीश देवड़ा का एक बयान ने राजनीतिक गलियारों में हलचल को तेज कर रहा है। उन्होंने जबलपुर में एक कार्यक्रम के दौरान कहा कि ₹पूरा देश, देश की सेना और सैनिक प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के चरणों में नतमस्तक हैं।₹ इस बयान ने न केवल विपक्षी दलों को हमलावर होने का मौका दिया, बल्कि सेना जैसे सम्मानित संस्थान को राजनीतिक बयानबाजी में शामिल करने के लिए व्यापक आलोचना भी झेलनी पड़ रही है।

16 मई 2025 को मध्य प्रदेश के जबलपुर में सिविल डिफेंस वॉलिंटियर्स के एक प्रशिक्षण कार्यक्रम में उपमुख्यमंत्री जगदीश देवड़ा ने अपने भाषण में जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में 22 अप्रैल 2025 को हुए आतंकी हमले का जिक्र किया। इस हमले में आतंकियों ने पर्यटकों से उनका धर्म पूछकर चुन-चुनकर हत्याएं की थीं, जिससे देश में गुस्से और तनाव का माहौल था। देवड़ा ने इस घटना का उल्लेख करते हुए कहा कि इस हमले ने पूरे देश को झकझोर दिया था, और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारतीय सेना ने ऑपरेशन सिंदूर के तहत आतंकियों के ठिकानों को नष्ट करके इसका बदला लिया। इसी संदर्भ में उन्होंने कहा, 'प्रधानमंत्री जी ने जो साहसिक निर्णय लिया, उसके लिए पूरा देश और देश की सेना उनके चरणों में नतमस्तक है।'

भारतीय सेना एक ऐसी संस्था है, जो अपनी निष्पक्षता, अनुशासन और देश के प्रति समर्पण के लिए जानी जाती है। सेना किसी भी राजनीतिक दल या नेता के प्रति नतमस्तक नहीं होती, बल्कि वह भारत के संविधान और राष्ट्र की सेवा में कार्य करती है। देवड़ा के बयान को कई रक्षा विशेषज्ञों और पूर्व सैनिकों ने अनुचित ठहराया, क्योंकि यह सेना की स्वतंत्रता और गरिमा को कमतर करता है। सेना का काम देश की सुरक्षा करना है, और इसे किसी व्यक्ति विशेष की प्रशंसा से जोड़ना न केवल गलत है, बल्कि सेना के बलिदान को राजनीतिक लाभ के लिए इस्तेमाल करने का प्रयास भी माना जा सकता है। सोशल मीडिया पर भी इस बयान को लेकर तीखी बहस देखने को मिल रही है। जहां कुछ लोगों ने इसे प्रधानमंत्री के नेतृत्व की प्रशंसा के रूप में देखा, वहीं अधिकांश ने इसे सेना की गरिमा के खिलाफ बताया है।

भाजपा ने देवड़ा के बयान का बचाव करते हुए कहा कि इसे गलत तरीके से पेश किया जा रहा है। पार्टी के प्रवक्ता ने दावा किया कि देवड़ा का उद्देश्य केवल प्रधानमंत्री के नेतृत्व की सराहना करना था, न कि सेना का अपमान। उन्होंने कहा कि भाजपा हमेशा सेना का सम्मान करती है और उनके बलिदान को सर्वोच्च मानती है। लेकिन, विपक्ष ने इस बचाव को खारिज किया है।

जगदीश देवड़ा का यह बयान मध्य प्रदेश में भाजपा नेताओं

के विवादित बयानों की श्रृंखला में एक और कड़ी है। हाल ही में राज्य के वन मंत्री विजय शाह भी अपने एक बयान के कारण विवादों में घिरे थे। शाह ने ऑपरेशन सिंदूर में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाली भारतीय सेना की कर्नल सोफिया कुरैशी को ₹आतंकियों की बहन₹ कहकर संबोधित किया था। इस बयान ने न केवल सेना के एक सम्मानित अधिकारी का अपमान किया, बल्कि पूरे देश में आक्रोश पैदा किया। सुप्रीम कोर्ट ने शाह को इस बयान के लिए कड़ी फटकार लगाई, और उनके खिलाफ कई जगहों पर मामले दर्ज किए गए। कांग्रेस ने शाह के इस्तीफें की मांग की, और भाजपा को इस मामले में बैकफुट पर आना पड़ा है। विजय शाह का यह बयान भी पहलगाम हमले के संदर्भ में आया था, जहां उन्होंने कहा था कि ₹प्रधानमंत्री ने आतंकियों की बहन को भेजकर उनकी ऐसी-तैसी कर दी।₹ इस टिप्पणी को न केवल आपत्तिजनक, बल्कि महिला विरोधी और सेना के प्रति असम्मानजनक माना गया। शाह पहले भी कई बार विवादित बयानों के लिए चर्चा में रहे हैं, लेकिन इस बार उनकी टिप्पणी ने पार्टी को गंभीर संकट में डाल दिया।

विवादित बयान केवल मध्य प्रदेश या भाजपा तक सीमित नहीं हैं। भारतीय राजनीति में विभिन्न दलों के नेताओं ने समय-समय पर ऐसी टिप्पणियां की हैं, जिन्होंने सामाजिक और राजनीतिक तनाव को बढ़ाया है। कांग्रेस के नेताओं ने भी कई बार विवादित बयान दिए हैं।

जगदीश देवड़ा और विजय शाह जैसे बयान सेना जैसे निष्पक्ष और सम्मानित संस्थान को राजनीति में घसीटते हैं। यह न केवल भारतीय सेना की गरिमा को ठेस पहुंचाता है, बल्कि जनता के बीच अविश्वास भी पैदा करता है। धर्म, जाति, या लिंग जैसे संवेदनशील मुद्दों पर दिए गए बयान समाज में विभाजन पैदा करते हैं। पहलगाम हमले जैसे मामलों में धर्म आधारित टिप्पणियां सामुदायिक तनाव को बढ़ाती हैं। विवादित बयान अक्सर पार्टी की छवि को नुकसान पहुंचाते हैं। भाजपा, जो अपनी राष्ट्रवादी छवि के लिए जानी जाती है, को ऐसे बयानों के कारण विपक्ष के निशाने पर आना स्वाभाविक है। सुप्रीम कोर्ट और हाई कोर्ट जैसे संस्थान कई बार नेताओं को उनके बयानों के लिए फटकार लगाते हैं। विजय शाह के मामले में कोर्ट की सख्ती इसका उदाहरण है।

राजनीतिक दलों को अपने नेताओं को संवेदनशील मुद्दों पर बोलने से पहले प्रशिक्षण देना चाहिए। सार्वजनिक मंच पर बोलने से पहले बयानों की समीक्षा जरूरी है। विवादित बयानों के खिलाफ त्वरित और सख्त कानूनी कार्रवाई से नेताओं में जवाबदेही बढ़ेगी। मीडिया को विवादित बयानों को सनसनीखेज बनाने के बजाय तथ्यपरक विश्लेषण करना चाहिए। जनता को भी ऐसी टिप्पणियों के खिलाफ अपनी आवाज उठानी चाहिए, ताकि नेता अपनी जिम्मेदारी समझें।

जगदीश देवड़ा का बयान भारतीय राजनीति में विवादित टिप्पणियों की एक लंबी श्रृंखला का हिस्सा है। सेना जैसे सम्मानित संस्थान को राजनीतिक बयानबाजी में शामिल करना न केवल अनुचित है, बल्कि देश की एकता और अखंडता के लिए भी हानिकारक हो सकता है। मध्य प्रदेश में विजय शाह जैसे अन्य मंत्रियों के बयानों ने भी यह साबित किया है कि नेताओं को अपनी भाषा और संदेश पर अधिक ध्यान देने की जरूरत है। भारतीय राजनीति को ऐसी बयानबाजी से ऊपर उठकर रचनात्मक और समावेशी संवाद की ओर बढ़ना होगा, ताकि देश का सामाजिक ताना-बाना मजबूत रहे और संस्थानों की गरिमा बनी रहे।

दूरसंचार क्रांति : कबूतर से की-बोर्ड तक का 'सफर'

प्रदीप कुमार वर्मा

प्राचीन काल में कोई संदेश या कोई चिट्ठी भेजने के लिए कबूतरों या फिर दूत और संदेशवाहक की परंपरा देखने को मिलती है। डाक सेवा के शुरू होने के बाद में पोस्टमैन से यह काम करते थे लेकिन समय के साथ बदलते दौर में अब सूचना और संदेश के भेजने की प्रकृति तथा जरिया भी बदल चुका है। आज इंटरनेट की वजह से संदेश पहुंचाना आसान हो गया है। आज का युग सूचना का युग है। इसी वजह है कि बदले जमाने में ₹दूरसंचार₹ ने पृथ्वी और आकाश की सम्पूर्ण दूरी को मिटा दिया है। दूरसंचार क्रांति के माध्यम से ना केवल देश, अपितु विश्व के कोने-कोने में सूचनाओं का आदान-प्रदान तीव्र गति से हो रहा है। यही वजह है कि आज फोन, मोबाइल और इंटरनेट लोगों की प्रथम आवश्यकता बन गये हैं। दूरसंचार क्रांति का ही असर है कि अब सूचना का सफर कबूतर से लेकर कीबोर्ड तक आ चुका है।

दूरसंचार का उदेश्य था कि देश दुनिया के हर आदमी तक सूचना पंहुचे ओर संचार सुलभ हो। इसलिए विश्व दूरसंचार दिवस के दिन सूचना और संचार प्रौद्योगिकी के फायदों के प्रति लोगों में जागरूकता पैदा की जाती है। यह दिन अंतर्राष्ट्रीय दूरसंचार संघ की स्थापना और साल 1865 में पहले अंतर्राष्ट्रीय टेलीग्राफ समझौते पर हस्ताक्षर होने की याद में मनाया जाता है। मार्च 2006 में एक प्रस्ताव को अपनाया गया था, जिसमें कहा गया है कि हर साल 17 मई को विश्व सूचना समाज दिवस मनाया जाएगा। विश्व दूरसंचार दिवस मनाने की परंपरा 17 मई 1865 में शुरू हुई थी लेकिन आधुनिक समय में इसकी शुरुआत वर्ष 1969 में हुई। तभी से पूरे विश्व में इसे

हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है।

भारत में दूरसंचार क्रांति के अतीत के बारे में पता चलता है कि वर्ष 1880 में दो टेलीफोन कंपनियों 'द ओरिएंटल टेलीफोन कंपनी लिमिटेड' और 'एंग्लो इंडियन टेलीफोन कंपनी लिमिटेड' ने भारत में टेलीफोन एक्सचेंज की स्थापना करने के लिए भारत सरकार से संपर्क किया। इस अनुमति को इस आधार पर अस्वीकृत कर दिया गया कि टेलीफोन की स्थापना करना सरकार का एकाधिकार था और सरकार खुद यह काम शुरू करेगी। इसके बाद वर्ष 1881 में सरकार ने अपने पहले के फैसले के ख़िलाफ़ जाकर इंग्लैंड की 'ओरिएंटल टेलीफोन कंपनी लिमिटेड' को कोलकाता, मुंबई, मद्रास (चेन्नई) और अहमदाबाद में टेलीफोन एक्सचेंज खोलने के लिए लाइसेंस दिया। इससे 1881 में देश में पहली औपचारिक टेलीफोन सेवा की स्थापना हुई।

इसी क्रम में 28 जनवरी, 1882 भारत के टेलीफोन इतिहास में 'रेड लेटर डे' है। इस दिन भारत के तत्कालीन गवर्नर-जनरल काउंसिल के सदस्य मेजर ई. बैरिंग ने कोलकाता, चेन्नई और मुंबई में टेलीफोन एक्सचेंज खोलने की घोषणा की। कोलकाता के एक्सचेंज का नाम 'केंद्रीय एक्सचेंज' था। केंद्रीय टेलीफोन एक्सचेंज के 93 ग्राहक थे। मुंबई में भी 1882 में ऐसे ही टेलीफोन एक्सचेंज का उद्घाटन किया गया था। इसके बाद में संचार क्रांति में बदलाव आया और 2जी के बाद 3जी, 4जी तथा 5 जी स्पेक्ट्रम के जरिए मोबाइल सेवा अस्तित्व में आई। दूरसंचार के क्षेत्र में इंटरनेट के जरिये हमें घर में मोबाइल , कंप्यूटर, लैपटॉप, या टीवी में देखने में मिलता है। वर्तमान समय में दूरसंचार का एक बहुत बड़ा हिस्सा इंटरनेट है।

इसमें कोई शक नहीं है कि जिन लोगों की पहुंच इंटरनेट तक है, उनके जीवन में एक बड़ा बदलाव देखने को मिला है। दूरसंचार की सहायता से हम ऑनलाइन मोबाइल के द्वारा बिजली एवं नल का बिल, डिस्क रिचार्ज, बैंकिंग, बीमा तथा अन्य काम अपने घर में बैठे-बैठे ही पूरा कर सकते हैं। इसका सबसे ज्यादा फायदा महिला, बच्चे तथा बुजुर्गों को मिलता है। जिनके लिए यह सभी काम बहुत आसान और आरामदायक बन जाते है। इंटरनेट के जरिए हम असंख्य सूचनाओं को पलक झपकते ही मात्र कुछ चंद सेकेंड में प्राप्त कर लेते हैं। इंटरनेट सिर्फ सूचनाओं के लिहाज से ही नहीं, बल्कि सोशल नेटवर्किंग के लिए अब अहम बन चुका है।

गूगल के ई-मेल, अन्य सोशल मीडिया के माध्यम जैसे फेसबुक, स्नैपचैट, इंस्टाग्राम, थ्रेड तथा अन्य सोशल प्लेटफॉर्म के जरिए से हजारों किलोमीटर की दूरियां सिमट कर अब चंद सेकेंड के फासले में बदल गयी हैं। पहले जहाँ किसी से संपर्क साधने के लिए लोगों को काफ़ी मशक्कत करनी पड़ती थी, वहीं आज मोबाइल और इंटरनेट ने इसे बहुत ही आसान बना दिया है।

बिन पानी तरसेगा पाकिस्तान! नहर बनाकर चेनाब नदी का पानी डायवर्ट करेगा भारत, सरकार ने बनाया ये प्लान

पहलगाम हमले के बाद भारत पाकिस्तान को चेनाब नदी से जा रहे पानी को रोकने की योजना बना रहा है। रणबीर नहर का दोहरीकरण करके भारत 150 घन मीटर पानी मोड़ सकेगा। सिंधु जल समझौते के स्थगित होने के बाद भारत सरकार चेनाब झेलम और सिंधु नदी परियोजनाओं में तेज़ी लाने का विचार कर रही है।

नई दिल्ली। पहलगाम आतंकी हमले के बाद भारत पाकिस्तान की कमर तोड़ने के लिए तिहरा वार करने की तैयारी कर रहा है। इस सिलसिले में पाकिस्तान की हेकड़ी निकालने के लिए भारत रणबीर नहर का दोहरीकरण करने पर विचार कर रहा है।

इसके जरिये पाकिस्तान के पंजाब जा रहे चेनाब नदी के पानी की बड़ी मात्रा भारत में ही रोक ली जाएगी। अभी सिर्फ एक रणबीर नहर से चेनाब का पानी जम्मू के विभिन्न क्षेत्रों में पहुंचाया जाता है। जाहिर है कि इससे हम अपने भी हिस्से का पूरा पानी नहीं ले पाते हैं।

अब तक समझौता बहाल नहीं

नहर के दोहरीकरण से भारत 150 घन मीटर पानी डायवर्ट कर पाएगा। कश्मीर में 26 नागरिकों की हत्या के तुरंत बाद भारत ने सिंधु जल समझौते को स्थगित कर दिया था। यह समझौता सिंधु नदी प्रणाली के तहत जल बंटवारे का प्रबंधन करता है।

भारत और पाकिस्तान द्वारा संघर्ष विराम पर सहमत होने के बावजूद समझौते को बहाल नहीं किया गया है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अधिकारियों को चेनाब, झेलम और सिंधु नदी की परियोजनाओं के निष्पादन में तेजी लाने का आदेश दिया है। इनमें से एक प्रमुख योजना रणबीर नहर का दोहरीकरण है।

भारत ने पानी रोकना शुरू किया

एक अधिकारी ने बताया कि इसको लेकर चर्चा पिछले महीने शुरू हुई थी और संघर्ष विराम के बाद भी जारी है। पाकिस्तान की लगभग 80 प्रतिशत खेती सिंधु नदी प्रणाली पर निर्भर है और लगभग सभी जलविद्युत परियोजनाएं भी इसी पर स्थित हैं।

इस्लामाबाद को इस बात का अंदाजा है कि भारत ने यदि बांध, नहर या अन्य बुनियादी ढांचे का निर्माण कर पानी को रोकना शुरू कर दिया, तो उसे किस तरह के दबाव का सामना करना पड़ सकता है।

नहर के दोहरीकरण का यह होगा परिणाम

वर्तमान में रणबीर नहर लगभग 120 किलोमीटर लंबी है। इसका विस्तार किए जाने पर भारत हर सेकेंड 150 घन मीटर पानी चेनाब नदी से डायवर्ट कर सकता है, जबकि वर्तमान में यह मात्रा केवल 40 घन मीटर है।

चेनाब नदी का पानी पाकिस्तान के पंजाब क्षेत्र में खेती और पेयजल के लिए बेहद आवश्यक है। अगर भारत इस पानी को मोड़ने में सक्षम हो गया, तो पाकिस्तान के कृषि क्षेत्र पर इसका गंभीर असर पड़ सकता है।

ओंकार नाथ पुरी

योग्यता: मास्टर ऑफ बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन (बैंकिंग में प्रमुख और बीमा में गौण)

आवश्यक:

1. मास्टर इन बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन -(बैंकिंग और बीमा)- प्रथम श्रेणी, यूएसएमएस, गुरु गोबिंद सिंह इंद्रप्रस्थ विश्वविद्यालय-(2006-08)
2. सिक्किम मणिपाल विश्वविद्यालय, मणिपाल, भारत से कम्प्यूटर विज्ञान में प्रथम श्रेणी में स्नातकोत्तर
3. आईसीएफएआई विश्वविद्यालय, हैदराबाद, भारत से बिजनेस मैनेजमेंट में प्रथम श्रेणी डिप्लोमा- (2003-04)

क) वर्ष 2014-15 के लिए धारा-135, अनुसूची-VII गतिविधियों के अंतर्गत 7334 कंपनियों के लिए सीएसआर-कॉर्पोरेट डेटा प्रबंधन सफलतापूर्वक पूरा किया गया.... आम जनता के लिए डेटा और रिपोर्ट के अंतर्गत एमसीए.MCA.gov.in पर संदर्भ उपलब्ध है।

ख) कंपनी अधिनियम 2014 के तहत पंजीकृत 2223 कंपनियों के लिए एक व्यक्ति कंपनी-कॉर्पोरेट डेटा प्रबंधन को सफलतापूर्वक पूरा किया गया। (क्षेत्र, आरओसी, पूंजी, आदि के आधार पर विभाजित), रिपोर्ट को आगे की मंजूरी के लिए प्रमुख को प्रस्तुत किया गया।

ग) आधार (केंद्र पर्यवेक्षक, नमूना संग्रह- 4,000), ईवीआईसी (हरि नगर, नमूना आकार-150/2000), एनपीआर (आशा पार्क, नमूना आकार-2000) के लिए प्राथमिक डेटा का सफलतापूर्वक संग्रह, निष्कर्षण और सक्रिय भागीदारी

मो. शम्स आगाज

मेरा नाम मोहम्मद शम्स आगाज़ है। मैंने अपनी प्रारंभिक और उच्च शिक्षा जामिया मिल्लिया इस्लामिया, दिल्ली से प्राप्त की है, जहाँ से मैंने ग्रेजुएशन, पोस्ट ग्रेजुएशन और बी.एड. की डिग्रियाँ हासिल कीं। इसके अतिरिक्त, मैंने मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी से पत्रकारिता (जर्नलिज्म) में डिग्री प्राप्त की है।

पत्रकारिता के क्षेत्र में मुझे दस वर्षों से अधिक का अनुभव है। इस दौरान मैंने विभिन्न प्रतिष्ठित उर्दू और हिंदी समाचार पत्रों में काम किया है और एक समर्पित पत्रकार के रूप में अपने कर्तव्यों का निर्वहन किया है। वर्तमान में मैं The Coverage में न्यूज़ एडिटर के पद पर कार्यरत हूँ। इसके साथ ही मैं कई उर्दू और हिंदी अख़बारों के लिए स्वतंत्र लेखक (फ्रीलांसर) के रूप में नियमित लेखन भी करता हूँ।

पत्रकारिता मेरे लिए सिर्फ एक पेशा नहीं, बल्कि एक जिम्मेदारी है, जिसके ज़रिए मैं समाज की सच्चाई को उजागर करने और जनहित के मुद्दों को सामने लाने का प्रयास करता हूँ। मेरी कोशिश हमेशा यही रहती है कि निष्पक्ष और तथ्यपरक पत्रकारिता के माध्यम से लोगों को सही जानकारी प्रदान कर सकूँ।

टीम वी केयर ट्रस्ट

टीम वी केयर एक गैर-लाभकारी संगठन है जो विभिन्न चैनलों के माध्यम से सामाजिक कार्यों में लगा हुआ है जिसमें मुख्य रूप से समाज के कमजोर वर्गों के बीच गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना, भूख और कुपोषण से लड़ने के लिए नियमित खाद्य वितरण अभियान चलाना, युवाओं में खेल के प्रति उत्साह को फिर से जगाना और विभिन्न सामाजिक मुद्दों से संबंधित जागरूकता कार्यशालाओं का आयोजन करना शामिल है। यह सब तब शुरू हुआ जब 1 नवंबर, 2019 को टीम वी केयर की आधारशिला रखी गई। जरूरतमंद लोगों के लिए खड़े होने की प्रेरणा संस्थापक श्री यशु अग्रवाल को एक अस्पताल दौरे से मिली, जो अपने बीमार दोस्त से मिलने अस्पताल गए थे। जहाँ उन्होंने कई गरीब लोगों को बुरी हालत में अपना जीवन बिताते देखा, वह भी सर्दियों के मौसम में। जरूरतमंद लोगों की दुर्दशा और सर्दियों के दौरान उनके दयनीय जीवन की स्थिति ने उनकी अंतरात्मा को झकझोर दिया। उनके दिमाग में एक चौंकाने वाला विचार आया कि 'हम सभी अपने घरों में या तो कंबल या रजाई में सोते हैं लेकिन उस पल, उन्हें बहुत बुरा लगा और हमारे मन में एक विचार आया कि क्यों न उनकी मदद की जाए? उन्होंने अपने दोस्तों के एक छोटे समूह के साथ एक पहल शुरू की जो तेजी से बढ़ती रही और 'टीम वी केयर' के गठन के साथ समाप्त हुई। मानवता के मानवीय पहलू को जीवित रखने के अपने मकसद के साथ, टीम वी केयर ने हमेशा इसे प्राप्त करने के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास किया है। परिवर्तन की यह प्रक्रिया एक दौर का खेल नहीं है, बल्कि प्रत्येक समर्पित सदस्य द्वारा किए गए निरंतर प्रयासों का परिणाम है। जैसा कि हम सभी जानते हैं कि 'स्वास्थ्य ही धन है' और हर बच्चे को शिक्षा का हक है। इसलिए, टीम वी केयर लोगों को शिक्षित करती है और उन्हें आश्रय प्रदान करती है। हमारे संगठन ने कई परियोजनाएं पूरी की हैं जैसे भूख, झुग्गी-झोपड़ियों में सिलाई केंद्र आदि। ये अभी भी विस्तारित क्षमताओं के साथ चल रही हैं। विश्वव्यापी कोविड-19 महामारी ने पूरी मानवता के लिए कठिन समय ला दिया नोवेल कोरोना वायरस के बारे में लोगों में जागरूकता फैलाने के लिए एक कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया। 'टीम वी केयर' हर नई और जरूरी चुनौती का सामना करते हुए और भी मजबूती से खड़े रहने का वादा करता है

जान्हवी भल्ला

मेरा नाम जान्हवी भल्ला है। मेरे लिए पत्रकारिता सिर्फ एक पेशा नहीं, बल्कि मेरी पहचान है एक मिशन, जिसके ज़रिए मैं सच्चाई को आवाज़ देती हूं। बचपन से ही मुझे सच जानने और उसे लोगों तक पहुंचाने की चाह थी। न्यूज़ चैनलों और अख़बारों से जुड़ाव ने मेरी सोच को दिशा दी और मुझे पत्रकार बनने की प्रेरणा भी दी।

मैं आत्मविश्वासी हूं, ईमानदार हूं और झूठ को बर्दाश्त करना मेरे स्वभाव में नहीं है। समाज में फैले भ्रम, असत्य और दोहरे मापदंडों को उजागर करना मेरा संकल्प है। मेरे लिए मीडिया महज़ खबरों का माध्यम नहीं, बल्कि एक ज़िम्मेदारी है जो की जनता की आवाज़ बनना, उन्हें सही जानकारी देना और बदलाव की एक उम्मीद जगाना।

मैं चाहती हूं कि लोग मुझे मेरे नाम से ही नहीं, बल्कि मेरे काम से पहचानें—जान्हवी भल्ला, एक ऐसी पत्रकार जो निडर है, निष्पक्ष है और अन्याय के सामने चुप नहीं रहती। मेरे काम में सच्चाई, संवेदना और तथ्य हमेशा सबसे ऊपर रहते हैं। मैं मानती हूं कि एक पत्रकार को केवल सूचना नहीं, इंसानियत भी पहुंचानी चाहिए।

मेरा सपना है कि मैं एक ऐसा नाम बनूं जिस पर लोग भरोसा करें और जिससे सच्चाई की उम्मीद करें। जान्हवी भल्ला—मतलब सच्चाई की शेरनी, जो कभी पीछे नहीं हटती।

भारत का आतंकवाद के खिलाफ़ जीरो टॉलरेंस का दृढ़ संकल्प-पाक के परमाणु ब्लैकमेल की धमकीसे विचलित नहीं हुआ -अंतरराष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी से निगरानी की मांग उचित-एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र

बहुत हुआ परमाणु ब्लैकमेल- यूएन डाले नक़ेल -यूएनएससी में भी हो सकता है न्यूक्लियर हथियारों क़े सरेंडर क़ा खेल भारत नें दुश्मन देश के परमाणु हथियारों को आईएईए की निगरानी में लाने की ओर कदम बढ़ाया

वैश्विक स्तरपर पिछले कुछ वर्षों से गुटबाजी युद्ध का प्रचलन बढ़ गया है,जिसका सटीक उदाहरण हम रूस-यूक्रेन, इज़राइल-हमास युद्ध में प्रत्यक्ष रूप से देख रहे हैं कि, दोनों युद्धों में दोनों देशों के पीछे कुछ देशों का गुट खड़ा है, जो अदृश्य होकर उन्हें हथियारों की पूर्ति, प्रोत्साहन व मदद दे रहा है, जिसके कारण दोनों युद्धों के युद्ध विराम की संभावना नहीं दिख रही है, बल्कि परमाणु संपन्न देश परमाणु हथियारों का उपयोग करने की धमकियां भी देते रहते हैं, जिसक़ा अति भयंकर दुष्ट परिणाम हम अमेरिका द्वारा जापान के हिरोशिमा व नागासाकी शहरों पर गिराए गए परमाणु बमों की श्रृंखला में लक्षण आज तक की पीढ़ियों में देखा जा सकता है। आज हम इस विषय पर चर्चा इसलिए कर रहे हैं,क्योंकि हाल ही में भारत- पाक के बीच युद्ध विराम तो हो गया है परंतु इसमें भी न्यूक्लियर वेपंस के उपयोग की काफी धमकियां दी गई थी तल्खीं कहीं दिख रही है,इस तनाव में भी गुटबाजी दिखी,पाक की तरफ से तुर्की ने खूब ड्रोन की मदद की, जिससे भारत पर 300 से 400 ड्रोन की खेप से हमला किया गया। चूँकि पाक की तरफ से अभी भी गोलीबारी शुरू है, व 15 मई 2025 को माननीय रक्षा मंत्री ने सैनिकों के सम्मान में कश्मीर दौरा किया, उन्होंने कहा कि आतंकवाद के खिलाफ भारत के दृढ़ संकल्प का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि पाकिस्तान की परमाणु ब्लैकमेल की धमकी से भारत विचलित नहीं हुआ।उन्होंने कहा कि दुनियाँ ने देखा है कि पाक नेकितनी गैरजिम्मेदारी से कई बार भारत को परमाणु धमकियां दी हैं। उन्होंने कहा, मैं दुनिया के सामने यह सवाल उठाता हूं: क्या ऐसे गैरजिम्मेदार और दुष्ट देश के हाथों में परमाणु हथियार सुरक्षित हैं? पाक के परमाणु हथियारों को अंतर्राष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी (आईएईए) की निगरानी में लिया जाना चाहिए। इसमें पाक क़े परमाणु बम सरेंडर कराने की भारत द्वारा की जा रही पहल को बल मिला है। बता दें किसी दूसरे मुल्क के परमाणु हथियारोंको मिटाना ये हमारी मिलिट्री डॉक्टराइन का हिस्सा तो नहीं है, लेकिन दुश्मन मुल्क के परमाणु हथियारों को स्क्रूटिनी यानें निगरानी में जरूर ला सकते हैं और इस दिशा में आज पहला कदम उठा लिया गया है। ऑपरेशन सिंदूर की सफलता के बाद आज रक्षा मंत्री जम्मू कश्मीर के बादामी बाग कैंट पहुंचे थे, यहां उन्होंने फौज के जवानों का हौसला बढ़ाया उन्हें संबोधित किया। लेकिन इस संबोधन में उन्होंने पाक की परमाणु धमकियों और उससे निपटने के बारे में क्या कहा है वो हमको सुनने और समझने की जरूरत है। पाक के परमाणु हथियारों पर जिस नियंत्रण की बात कर रहे हैं, ये ब्लैकमेल अब उसी दिन थमेगा. जब पाकिस्तान के हाथ से उसके परमाणु बम निकलेंगे, ये होगा कैसे अब उसका पूरा प्रोसेस यानी पूरी प्रक्रिय, इसके तीन रास्ते हो सकते हैं। पहला - आईएईए दूसरा - यूएनएससी और तीसरा, पाकिस्तान के परमाणु बम पर कोई और ताकत कंट्रोल कर ले। चूँकि भारत का आतंकवाद के खिलाफ़ जीरो टॉलरेंस का दृढ़ संकल्प है,व भारत ने दुश्मन देश के परमाणु हथियारों को आईएईए की निगरानी में लाने की ओर कदम बढ़ा दिया है,

इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्ध जानकारी के सहयोग से इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे, बहुत हुआ परमाणु ब्लैकमेल !यूएन डाले नक़ेल-यूएनएससी में भी हो सकता है न्यूक्लियर हथियारों के सरेंडर का खेल।

साथियों बात अगर हम अंतरराष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी (आईएईए) की करें तो, इसका जिक्र आज रक्षा मंत्री ने भी किया, आईएईए यानी इंटरनेशनल एटॉमिक एनर्जी एजेंसी,1957 में गठित एक अंतरराष्ट्रीय संगठन है जो परमाणु ऊर्जा के शांतिपूर्ण उपयोग को बढ़ावा देने और परमाणु हथियारों के प्रसार को रोकने के लिए काम करता है, लेकिन क्या ये संस्था पाकिस्तान के परमाणु हथियारों की निगरानी कर सकती है, बता दें कि आईएईए दुनियाँ के नौ में से पांच न्यूक्लियर पावर्स के परमाणु हथियारों की निगरानी करती है, लेकिन इस सूची में पाकिस्तान का नाम नहीं है।दरअसल पाक न्यूक्लियर ट्रीटी एनपीटी में शामिल नहीं है, यही वजह है कि आईएईए को पाकिस्तान के नुक्लेअर वेपन्स की निगरानी का अधिकार नहीं है।लेकिन ऐसा नहीं है कि सिर्फ इसी वजह से पाक के न्यूक्लियर हथियारों पर लगाम नहीं लगाया जा सकता है एक दूसरा रास्ता यूएनएस सी यानी संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद से होकर भी गुजरता है।यूएनएस के मंच से भारत पाकिस्तान के न्यूक्लियर ब्लैकमेल का मुद्दा उठा सकता है, इसी के साथ साथ यूएनएस में भारत, पाक के परमाणु हथियारों की निगरानी की मांग भी कर सकता है। पाक के इस गैर जिम्मेदाराना रवैये की वजह से उसपर सैंक्शयंस भी लगाया जा सकता है,इसके लिए भारत को संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिशद के 15 सदस्यों में से 9 के वोट चाहिए। लेकिन यहां एक पेंच ये है, अगर यूएनएस के 5 परमानेंट मेंबर्स में से किसी ने भी पाक के पक्ष में वीटो कर दिया तो पाक के परमाणु हथियारों की निगरानी रखना मुश्किल हो जाएगा, यहां चीन पाक के लिए वीटो कर सकता हैलेकिन अगर चीन को भारत ने साध लिया तो पाक के नुक्लेअर वेपन्स पर लगाम लगाई जा सकती है। सीधे सीधे पाक के परमाणु हथियारों की निगरानी थोड़ा मुश्किल है लेकिन ये जरूरी है, क्योंकि उनके परमाणु हथियारों पर किसी और की नजर भी गड़ी है. ताजा सनॉरिओ को देखकर लगता है कि ये नजर तुर्किए की है, तुर्किये ने भारत पाक के इस स्टैंडऑफ में पाकिस्तान का साथ दिया इसके पीछे लोग दो वजह मान रहे हैं, पहला - पाकिस्तान एक इस्लामिक राष्ट्र है और दूसरा- तुर्किए अपने हथियारों को पाकिस्तान में डंप करता है, पाकिस्तान उसके ड्रोन्स खरीदता है,पाक के परमाणु हथियारों पर दोहरा खतरा है, पहला तो तुर्किये से और दूसरा हैं टीटीपी जैसे आतंकी संगठन जो कई बार पाक को परमाणु हथियारों को कब्जाने की धमकी दे चुके हैं, लिहाजा पाकिस्तान के लिए समझादारी वाला ऑप्शन तो ये होगा की वो अपने परमाणु हथियार सरेंडर कर दे, जैसा दुनिया के चार मुल्क कर चुके हैं, सबसे पहले साल 1977 में साउथ अफ्रीका ने अपना न्यूक्लियर प्रोग्राम बंद कर दिया था,1996 में बेलारूस पूरी तरह से नॉन न्यूक्लियर वेपन वाला देश बन गया था,1999 तक कजाकस्तान भी पूरी तरह से नॉन न्यूक्लियर कंट्री घोषित हो गया था,1996 में यूक्रेन ने भी अपने सारे न्यूक्लियर हथियार रूस को सरेंडर कर दिए थे. जिन्हें बाद में डीई असेंबले कर दिया गया था। पाकिस्तान के न्यूक्लियर हथियारों पर भी कई लोगों की नजर है, लिहाजा पाकिस्तान के लिए अपने न्यूक्लियर हथियारों को सरेंडर करने में ही भलाई है।

साथियों बात अगर हम इंटरनेशनल एटॉनामिक एजेंसी को समझने की करें तो, इंटरनेशनल एटॉमिक एनर्जी एजेंसी एक स्वतंत्र अंतरराष्ट्रीय संगठन है जो न्यूक्लियर एनर्जी के शांतिपूर्ण इस्तेमाल को बढ़ावा देने और न्यूक्लियर (परमाणु) हथियारों के प्रसार को रोकने के लिए काम करता है, इसकी स्थापना 29 जुलाई 1957 को हुई थी और इसका मुख्यालय वियना, ऑस्ट्रिया में है।आईएईए संयुक्त राष्ट्र से संबद्ध है और दुनिया भर के 178 देश इसके सदस्य हैं. इसके इतर रेडिएशन से संबंधित घटनाओं और इमरजेंसी स्थिति से निपटने के लिए आईएईए ने साल 2005 में इंसिडेंट एंड इमरजेंसी सेंटर का गठन किया था।

अतः अगर हम औरत पूरे विवरण का अध्ययन करें इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि बहुत हुआ परमाणु ब्लैकमेल -यूएन डाले नक़ेल-यूएनएससी में भी हो सकता है न्यूक्लियर हथियारों क़े सरेंडर क़ा खेल।भारत नें दुश्मन देश के परमाणु हथियारों को आईएईए की निगरानी में लाने की ओर कदम बढ़ाया।भारत का आतंकवाद के खिलाफ़ जीरो टॉलरेंस का दृढ़ संकल्प-पाक के परमाणु ब्लैकमेल की धमकीसे विचलित नहीं हुआ-अंतरराष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी से निगरानी की मांग उचित हैं

"मालदार दूल्हा ढूंढने वालों, खुद से भी सवाल करो!"

दहेज की बातें करते हो,
सड़कों पर मोमबत्तियाँ जलाते हो,
पर बेटी की शादी में फिर भी,
बैंक बैलेंस पर निगाहें गड़ाते हो।

थूक देते हो दहेज वालों को,
सोशल मीडिया पर भाषण चलाते हो,
पर जब अपनी बिटिया की बारी आती है,
बातों में बड़े-बड़े महल सजाते हो।

रिश्ते तोड़ते हो चाय की प्याली में,
गाड़ियों के ब्रांड पर सौदे जमाते हो,
विवाह नहीं, मोल-भाव की मंडी में,
शगुन की जगह चेक बुक लहराते हो।

प्यार की बातें करते हो खूब,
फिर भी 'सुरक्षित भविष्य' की फाइल बनाते हो,
बेटी की खुशियों का क्या?
जब भावनाएँ भी पैसों में आजमाते हो।

दहेज लेना और देना, दोनों अपराध है,
फिर भी परंपराओं की ओट में,
अपने हिस्से का गुनाह छुपाते हो।

बेटी बोझ नहीं, आशीर्वाद है,
इतना कहते हो, फिर भी,
ससुराल में भेजने से पहले,
खुद ही लम्बी लिस्ट बनाते हो।

इकतर्फा मत बवाल करो,
अगर बदलाव चाहिए तो खुद से शुरुआत करो,
रिश्तों को दिल से सजाओ,
दहेज के इस अंधकार को मिटाओ,
बेटी की खुशियों का असली अर्थ समझाओ।

मालदार दूल्हा ढूंढने वालों,
खुद से भी सवाल करो!
दहेज़ लेना और देना दोनों अपराध है
एकतरफा मत अब बवाल करो!!

(डॉ. सत्यवान सौरभ)

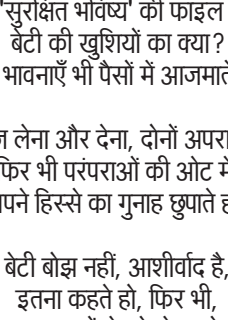

"लाडली बहना योजना नहीं, सशक्त भाई-बहनों का निर्माण चाहिए"

परिवहन विशेष न्यूज

मध्यप्रदेश सरकार द्वारा चलाई जा रही लाडली बहना योजना का उद्देश्य भले ही महिलाओं को आर्थिक सहयोग देना हो, लेकिन क्या यह वास्तव में उन बहनों को आत्मनिर्भर बना रहा है? हर माह 1250 रुपए की यह राशि न तो किसी महिला की आर्थिक स्थिति को स्थायी रूप से सुधार सकती है, न ही उसे आत्मनिर्भरता की ओर ले जा सकती है। यह एक तात्कालिक राहत ज़रूर हो सकती है, लेकिन स्थायी समाधान से कोसों दूर है।

क्या यह पैसा बर्बाद नहीं हो रहा?

सोचिए, यदि हर माह यह पैसा बहनों के बजाय उनके भाइयों या घर के एक सदस्य को एक सम्मानजनक नौकरी देकर दिया जाए, तो वह न केवल बहन की बल्कि पूरे परिवार की रीढ़ बन सकता है। एक आउटसोर्स कर्मचारी, जो महीने के 5 से 10 हजार रुपए में खप रहा है, अगर उसी को पर्याप्त वेतन और स्थायित्व मिल जाए, तो वह बहन को महीने में हजारों रुपए सहयोग कर सकता है—वह भी बिना किसी सरकारी लोन या स्कीम के।

आउटसोर्सिंग: युवाओं के भविष्य की कब्रगाह

मध्यप्रदेश की वर्तमान व्यवस्था में हजारों युवा आउटसोर्सिंग के जाल में फंसे हुए हैं। सरकारी विभागों, कॉलेजों, अस्पतालों और पंचायत कार्यालयों में कार्यरत ये युवा जनभागीदारी, संविदा, और ठेका व्यवस्था के अंतर्गत वर्षों से सेवाएं दे रहे हैं। इन्हें न सामाजिक सुरक्षा प्राप्त है, न भविष्य की गारंटी। दस-दस वर्षों से कार्यरत कर्मचारी आज भी एक स्थायी कर्मचारी की आधी सैलरी पर काम कर रहे हैं।

सरकार ने जिन पदों को स्थायी रूप से भरना चाहिए था, उन्हें आउटसोर्स के नाम पर ठेकेदारों के हवाले कर दिया गया है। यह न केवल शोषण की नीति है बल्कि प्रतिभाओं का अपमान भी है। यही युवा यदि सम्मानजनक नौकरी में होते, तो न केवल बहनों की मदद करते बल्कि प्रदेश की आर्थिक रीढ़ बन सकते थे।

बहनों का सच्चा भला: रोजगार सृजन से

यह मानने में कोई दोराय नहीं कि महिलाओं की आर्थिक सुरक्षा ज़रूरी है। लेकिन इसके लिए सरकार को रोजगार आधारित योजना बनानी चाहिए। उदाहरणस्वरूपः

महिलाओं को घरेलू उद्योगों, कुटीर शिल्प, और डिजिटल स्किल्स से जोड़कर आत्मनिर्भर बनाया जाए।

उनके परिवार के किसी एक सदस्य को स्थायी और सम्मानजनक रोजगार दिया जाए।

आउटसोर्सिंग को समाप्त कर नियमित भर्ती प्रक्रिया चालू की जाए।

जनभागीदारी और संविदा कर्मियों को पुनः स्थायीत्व की श्रेणी में लाया जाए।

मोहन सरकार से विनम्र आग्रह

मुख्यमंत्री श्री मोहन यादव जी से यह अपेक्षा की जाती है कि वे केवल वोट बैंक की राजनीति से ऊपर उठकर प्रदेश के वास्तविक विकास मॉडल की ओर देखें। हर महीने लोन लेकर बहनों को राशि देना कोई दीर्घकालिक समाधान नहीं है। यह नीति आर्थिक रूप से भी प्रदेश को डुबो सकती है।

प्रदेश के युवाओं को रोज़गार देकर आप बहनों का, परिवारों का और पूरे समाज का स्थायी कल्याण कर सकते हैं।

कृपया इस दिशा में एक ठोस, स्थायी और यथार्थवादी नीति बनाएं।

क्योंकि सशक्त भाई ही सशक्त बहनों की नींव रखता है।

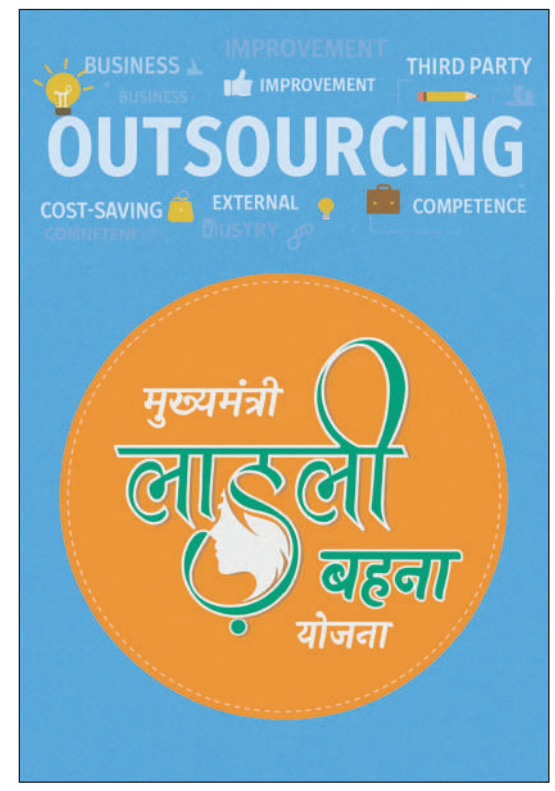

तुर्कीए पर ना करना

अब कोई तुर्कीए पर ना करना भरोसा,
मित्रता के नाम पर हथियार है परोसा।
तुर्कीए में भूकंप का कहर बरसा गुरू,
भारत ने 'ऑपरेशन दोस्त' किया शुरू।
रेस्क्यू टीमों ने बाहर निकालने में मदद,
मलबे में दबे लोगों को खोज रहें सतत।

अब कोई तुर्कीए पर ना करना भरोसा,
मित्रता के नाम पर हथियार है परोसा।
जब-जब भी तुर्की पर मुसीबत हैं आई,
तब-तब भारत ने सहयोग, जानें बचाई।
तुर्कीए अहसान ना मानने वाला देश हैं,
दुश्मन का साथ देने वाले मित्र क्लेश हैं।

अब कोई तुर्कीए पर ना करना भरोसा,
मित्रता के नाम पर हथियार है परोसा।
जागो तुर्की का करों आर्थिक बहिष्कार,
ना खरीदो उसका सामान रोकों रफ्तार।
अब कभी यात्रा की कोई योजना बनाएँ,
तुर्कीए-अज़रबेजान को छोड़ कही जाएँ।

(संजय एम तराणेकर)

संबलपुर से जल्द ही चलेगी कृषि एक्सप्रेस ट्रेन: केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान

मनोरंजन सासमल, स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान ने संबलपुर में आयोजित विशाल तिरंगा जुलूस में भाग लिया। उनके साथ उपमुख्यमंत्री कनकबर्धन सिंहदेव, पंचायती राज मंत्री रवि नारायण नायक और पूर्व विधायक नौरी नायक भी थे।तिरंगा यात्रा के अवसर पर बोलते हुए केंद्रीय मंत्री धर्मेंद्र प्रधान ने कहा कि तिरंगा यात्रा का उद्देश्य सशस्त्र बलों के प्रति आभार व्यक्त करना है। उपमुख्यमंत्री कनक वर्धन सिंह देव ने कहा, ₹भारतीय सेना ने पाकिस्तान को मुंहतोड़ जवाब दिया है, जिस पर हमें गर्व है।₹ इस जुलूस में संबलपुर के कई नागरिक भी शामिल हुए। इसके बाद केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान ने चिपिलिमा स्थित कृषि विश्वविद्यालय में 1.5 करोड़ रुपये की लागत से नवनिर्मित हीराकुंड ऑडिटोरियम का उद्घाटन किया। 10.5 करोड़ रु. उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की बड़ी योजना 'पीएम सूर्यघर' से जुड़कर बिजली बचाने की अपील की है। इसके अलावा यह भी घोषणा की गई है कि संबलपुर से बहुत जल्द कृषि एक्सप्रेस ट्रेन चलेगी।

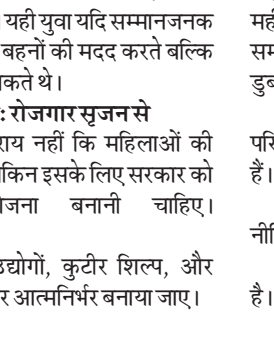

विश्वप्रसिद्ध छऊ पर दो बाल कलाकारों को संस्कृति मंत्रालय का छात्रवृत्ति

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड- झारखंड

रांची , कला नगरी सरायकेला की विश्व प्रसिद्ध समर कला छऊ नृत्य पर केरला पब्लिक स्कूल, जमशेदपुर की छात्रा प्राजंल कुमारी तथा रौनक आचार्य सेंट फ्रांसिस स्कूल, सरायकेला को केंद्रीय कला एवं संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार की तरफ से छात्रवृत्ति का लाभ 2024-25 के लिये मिला है ।

सरायकेला के इन दो होनहारों का चयन देश के सांस्कृतिक प्रतिभा खोज छात्रवृत्ति योजना के तहत हुआ है । दोनों को अगले 10 वर्षों तक मंत्रालय छात्रवृत्ति देगी । इस नेक योजना विश्व प्रसिद्ध सरायकेला छऊ को अगली पीढी तक पहुंचने में सहायक सिद्ध हगा ।

विगत मार्च में आयोजित प्रतिभा चयन प्रतियोगिता में कला प्रतिभागियों का जमावड़ा मंत्रालय की तरफ पटने में हुआ था । जहां सरायकेला छऊ के प्रतिभागियों द्वारा यहां अपने प्रतिभा का प्रदर्शन मर्मज्ञों के समक्ष हुआ था । जिसमें सरायकेला छऊ पर इन दोनों बाल कलाकारो का चयन हुआ है।

हम बताते चले कि रौनक आचार्य के पिता रंजीत आचार्य छऊ नृत्य विचित्रा के निदेशक है तथा सैकडो की संख्या में कलाकार उनके तथा उनके बड़े भाई पद्मश्री शशधर एवं पिता लिंगराज आचार्य के शिष्य हैं । जब युद्ध के बाद छऊ कला नृत्य अखाड़ों में पहुंचा तब उनका परिवार इंद्रटांडी राजकीय संरक्षण अखाड़े से जुड़ा । जबकि प्राजंल पट्टनायक वास्तविक डोगरा है जिनकी बड़ी वहन प्रगति को गत वर्ष बांसुरी वादन में संस्कृति मंत्रालय का छात्रवृत्ति जारी है । दोनों के मामा कार्तिक कुमार परिच्छा ,तथा गणेश कुमार उनके अभिभावक व नृत्य गुरू भी है । जिस परिवार का पारंपरिक संबंध उत्तर कलिंग की पाइक युद्ध अखाड़ों के फरिखंडा पहनावे युक्त ढाल -तलवार युक्त पाइक योद्धाओं से अतीत में रहा है ।कालान्तर में सरायकेला राजमहल स्थित मां पाउडी के आंगन में यह नृत्य उद्भावन हुआ है । परिणाम के साथ मंत्रालय ने पारंपरिक शब्द का इस्तेमाल भी प्रांजल के लिए किया हुआ है।

बताते चलें कि सरायकेला के राजकुमार सह विधायक नृपेन्द्र नारायण सिंहदेव के द्वारा लिखित ऐतिहासिक दस्तावेज किताब - सिंहभूम, सरायकेला -खरसावां श्रृ ऐजजे में वर्णित वंश प्रभा लेखना इन्हीं डोगरा परिवार की देन रही है । जोधपुर से आये सरायकेला का राठौर राजधराने का उत्कलीय मादला पाजी का हैसियत रखता उस सिंहभूम सरायकेला खरसावां थृ ऐजेज वर्णित - वंश प्रभा लेखना आज ।

छात्र कांग्रेस द्वारा इंदिरा गांधी की याद में 'शक्ति मार्च' का आयोजन किया गया

मनोरंजन सासमल, स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : प्रदेश छात्र कांग्रेस अध्यक्ष उदित प्रधान के नेतृत्व में छात्र कांग्रेस द्वारा इंदिरा गांधी की याद में ₹शक्ति मार्च₹ का आयोजन किया गया। 1971 में जब भारत और पाकिस्तान के बीच युद्ध हुआ तो तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने पाकिस्तान को कड़ा जवाब दिया और पाकिस्तान को दो हिस्सों में बांटकर एक और देश बांग्लादेश का निर्माण किया। तब भी अमेरिका ने इंदिरा गांधी पर दबाव डाला, लेकिन उन्होंने दबाव की परवाह नहीं की। हालाँकि, वर्तमान प्रधानमंत्री ने अमेरिकी दबाव में तुरंत युद्ध विराम की घोषणा कर दी, जो भारत के लिए शर्म की बात है। इसीलिए आज छात्र कांग्रेस नेताओं ने इंदिरा गांधी की याद में मार्च निकाला। इस कार्यक्रम में शाहरुख खान, जगदीश राउत, साई प्रभंजन महापात्र, शिव ओम प्रकाश, आदित्य अशुमान पात्र, महेश कुमार गार्ड, चिन्मय बेहरा, शिव रंजन साहू, अमिय कुमार नायक प्रमुख रूप से शामिल हुए।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023